प्रकाशक
साहित्य-प्रकाशन,
मालीवाड़ा, दिल्ली ।

प्रथम संस्करण १९५६
द्वितीय सस्करण १९५७
तृतीय सस्करण १९५९

मूल्य दो रुपये

मुद्रक
रामाकृष्णा प्रेस,
कटरा नील, दिल्ली ।

लेखक-परिचय

मिखाइल सादोवीन् रूमानिया-साहित्य में ऐतिहासिक उपन्यासों के जन्मदाता कहे जाते हैं।

मिखाइल सादोवीन् उस दौर की उपज हैं, जब किसान जमींदारो के उत्पीडन के विरुद्ध खडे होने की कल्पना करने लगे थे। १८८८ के किसान-विद्रोह की कहानियों ने उन पर तरुण अवस्था मे ही प्रभाव डाला था। इसलिए उनकी रचनाओ मे उन सब बातो के दर्शन होते हैं जो किसानी बातें हैं।

उनकी लगन और किसानो की ओर सजगता, उनकी अत्यन्त प्रारम्भिक रचनाओ मे भी मिलती है। सादोवीनू के कई उपन्यास और छोटी कहानियाँ हैं, जिनमे रूमानिया का इतिहास गूँथ दिया गया है। किसानो के सिवाय पेटीबुर्जुआ जिन्दगी के बारे मे भी आपने उपन्यास लिखे हैं।

चाहे वह अपने समय की सचाई को बता रहे हो या आज की जनता की आशाओ और आकाक्षाओ का चित्रण कर रहे हो अथवा प्राचीनतम काल के सूत्रों को पढ कर उपन्यास गढ रहे हो, उनका दृष्टिकोण सदैव ही जन-हित मे रहा है।

धरती के लाल

: १ :

नीता लेपादतू जार्ज एन्रामीनू की जमींदारी इलीसेनी में अकेला ही आया, सिर्फ एक टोपीदार लबादा और चमकदार लाठी उसके हाथ में थी। शरद ऋतु थी। वह पहाड़ी के एक सिरे से उतरा और खेतो-खलिहानों की ओर पहुँचा। फिर थोड़ी देर के लिए अपने पैरों के पास के तालाब और जमींदार के घर का मुआयना करने के लिए रुक गया।

चारो ओर, जहाँ तक भी उसकी निगाह गई, खुले-खुले खेत थे, उसके पीछे बड़ी दूर तक, जिधर से वह चल कर आता था, पूरब की ओर दूर प्रुत नदी तक न जाने कितने मील वह चल कर आया था, बिना किसी इंसानी आबादी के दर्शन किये हुये। उन दिनों जजिया और प्रुतक्षेत्र रेगिस्तान के सिवा और कुछ नहीं थे।

नीता खलिहानो के बीच आगे बढ़ गया। एक मड़ैया में उसे काम करते हुए नाज पछोरने वालों की लयपूर्ण संगीत-ध्वनि सुनाई आ रही थी। एक अंधेरे कोने में बंधा एक छोटा घोड़ा शांत खड़ा था। शरद की सुनहली किरणो मे उसका सिर नीचे झुका हुआ था। तभी एक भद्दी शक्ल का कुत्ता बाहर की ओर कूदा और किसी अजनबी के पैर देखकर बड़ी तेज़ी से भौंकने लगा।

नीता ने अपनी लाठी से उसको दूर रखा और धीरे-धीरे मड़ैया की ओर आगे बढ़ने लगा, जहाँ से उसे नाज पछोरने की भद्दी आवाज सुनाई दे रही थी।

मेमने जैसी थरथराती एक महीन आवाज आई, "कौन है ?"

और मड़ैया से नंगे सिर, बिखरे बालों वाला एक छुटका-सा बूढ़ा आदमी

बाहर निकला—"क्या है ?...चुप रहो कोतुन !" वह कुत्ते की ओर चिल्लाया और उसकी ओर झुका—"भागो, चलो ! अपनी जगह जाओ जंगली !" उसने लकड़ी का एक टुकड़ा उठाकर कुत्ते की ओर फेंका और उसे भगा दिया। तब वह नीता लेपादतू की ओर मुड़ा और एक गहरी जाँच पड़ताली निगाह से उसे देखा।

"हुँ ..", कुछ अचरज से उसने कहा, "बच्चे, तुम इस ओर के रहने वाले तो नहीं जान पड़ते। मैंने तुम्हें पहले यहाँ कभी नहीं देखा।... क्या चाहते हो तुम ?"

यात्री ने कहा, "आपका ख्याल ठीक है। मैं बड़ी दूर से सफ़र करता हुआ आ रहा हूँ। उधर से..."

"किसी ने तुम्हें भेजा है क्या यहाँ ?"

"जी, किसी ने नहीं...पर अगर आप बुरा न मानें तो मैं पूछूँ, यह किसकी जागीर है ? आपका क्या ख्याल है, मुझे यहाँ कोई काम मिल सकता है ?"

बूढ़ा अपनी महीन आवाज में थरथराया, "ठीक है बेटे जब तुम यहाँ आ ही गये हो, तो काम बहुतेरा। जागीर काफ़ी बड़ी है और मालिक वह अच्छे दिल वाले हैं।"

"उनका नाम क्या है ?"

"मिस्टर ..जार्ज यही है उनका नाम। मिस्टर जार्ज एयरामीन् .....तुम उनके घर जाकर बात करलो।"

"जी अच्छा" नीता लेपादतू गुनगुनाया।

बूढ़े ने अपनी छोटी चमकदार आँखों से उसे भली प्रकार जाँचा। अजनबी थका हुआ था। उसका चेहरा सड़क की धूल से काला हो रहा था। वह अपनी भोहों और झौआदार पलकों के नीचे गहरी धँसी हुई आँखों से सूनेपन के कारण दुःखी-सा दिख रहा था। काफी दिनों से उसकी हजामत नहीं बनी थी, पर उसकी घुँघराली और नीची झुकी मूँछों ने उसके मुँह पर अपना छत्र नहीं बिछा पाया था। उसके होंठ

सूखे थे और उन पर पपड़ी जम गई थी, रह-रहकर वह उन पर अपनी जीभ फेरता था, ताकि वह गीले बने रहें।"

उसने कोशिश करके कहा, "मैं प्यासा हूँ। अगर आप मुझे एक लोटा पानी दे देंगे, तो आपकी बड़ी मेहरबानी होगी।"

"क्यों नहीं" बूढ़ा बोला, "मैं पानी न पिलाकर पाप थोड़े ही लूँगा अपने सिर पर। चलो मेरी झोपड़ी मे चलो।"

झोंपड़ी की ओर साथ-साथ चलते हुये, उसने हँसते-हँसते कहा, "मुझे लोग नश्ताश तेन्ती कहते हैं। मैं इधर कई बरसों से रह रहा हूँ तीन पुश्तें मालिको की—दादा, पिता और पुत्र—सब ने मुझे यहाँ पाया और छोड़ दिया ..मैंने तुम जैसे बीमियों थके हुए नौजवानों की प्यास बुझाई है। मैंने उन्हें पानी इसलिए पिलाया, कि जब मैं दूसरी दुनियाँ में जाऊँ तो प्यासा न मरूँ ."

वह छोटे-छोटे कदम रखकर चल रहा था। उसकी सुअर की खाल की बनी सैंडिलें धूल भरी जमीन को दचक रही थीं। हवा की लहरों से उसकी मोटे सूत की कमीज, जो उसके दुबले शरीर पर बहुत बड़ी लग रही थी, फर्र-फर्र उड रही थी।

ऊँचे-ऊँचे खलिहान मड़ैया जहाँ आदमी नाज पछोर कर अन्न निसार रहे थे, पीछे छूट गये।

चचा नश्ताश तेन्ती लेपादतू को अपनी झोंपड़ी मे ले गये, जो जमीन में आधी धँसी-सी प्रतीत हो रही थी। वह पहिले भीतर घुसे।

यात्री उनके एक छोटे मिट्टी से पुते कमरे में घुसा, जिसके एक कोने मे चूल्हा था, जिसकी चिमनी कच्ची छत के बीच से गुजरती थी।

कमरे की दीवारों के सहारे लकड़ी की बेंचें पड़ी थीं, जिन पर ऊनी चादर बिछी थी और अन्त मे एक छोटी सी सेंध थी, जिस पर कांच लगाकर बड़ी खूबसूरती के साथ खिड़की बना ली गई थी। वह खिड़की इतनी छोटी थी कि उसके बीच से बाहर की ओर झांकना मुश्किल ही था। रोशनी मुख्यतः दरवाजे से ही आती थी।

चूल्हे के पास एक नीची तिपाही पर कोई २१ वर्षीय एक तरुणी बैठी थी, जो मकी के भूसे से आग जलाने की चेष्टा कर रही थी।

जब बूढ़ा और नीता भीतर आये, तो अजनबी को देखकर उसने ताज्जुब जाहिर करते हुए कमरे भर में देखा, फिर एक दम मशीन की मानिन्द अपनी छपी स्कर्ट और सूती ब्लाऊज को लम्बा खींचा और मुस्कराई।

"दिन मुबारक" नीता लेपादतू ने कहा और उसकी आँखें तरुणी पर टिकी रहीं।

"दिन मुबारिक..."

चचा नश्ताश ने किवाड़ के पीछे बाल्टी खोजी और अपनी सैंडल की ठोकर मार कर भुनभुनाता, "हूँ" इतनी बड़ी लड़की और खाली बाल्टी मार्घियोलीता, बाल्टी लो और भरकर लाओ, ताकि मुसाफ़िर पानी पी सके।"

लड़की ने जल्दी से, बल्कि शर्माते हुए कहा, अभी लाती हूँ पिताजी!" उसने बाल्टी उठाई और नीची आँखें किये हुए बाहर चली गई।

"हूँ .." अब चचा नश्ताश ने काफी तरंग में आकर कहा, "यह मेरी अकेली बच्ची है। मेरी बीवी मुझे नहीं मालूम उसका क्या हुआ, एक खुशनुमा दिन वह बाहर गई—बारह तेरह बरस हुए और तब से आज-तक उसका कोई पता-निशान नहीं। मेरी छोटी बच्ची बड़ी मेहनती है यह, लेकिन तमाम दिन यहाँ रहने के कारण ऊब जाती है। यहाँ इतवार को जाने के लिए कोई गिरजा भी नहीं है। वैसा भी नहीं जैसा सेरेट में या मोल्दोवा की तरह जहाँ कोई ऐसा गाँव नहीं जहाँ गिरजा या पादरी न हों। तुम कह सकते हो कि वहाँ नीचे के लोग दूसरी तरह के है। यहाँ, हमारे यहाँ नाच का रिवाज भी नही। जब मैं छोटा था, तब दूसरी जगहों पर रहा था और मुझे याद है आदरणीय लोग हमे नाच की दावत देते थे...यहाँ तो हम जैसे रह सकते हैं, रहते हैं, ईश्वर की मेहरबानी पर। समझे, मेरी बेटी भी औरों की तरह है...वह भी जब तक जवान है, ज़िन्दगी को अच्छी तरह से गुजारना चाहती है। लेकिन

यहाँ मेरी इस झोपड़ी में वह क्या ज़िन्दगी गुज़ारे...क्या लुत्फो आराम उठाये ? ."

बेंच पर बैठे लेपादतू ने एक आह भरी और कहा, "समझा !"

"हूँ," बूढ़ा कहता गया, "यहाँ इन्सान दरिन्दा-बन जाता है। मेरी लड़की भी जंगलियों की तरह बढी है ! यह ठीक है कि वह कभी-कभी जमींदार के घर जाती रहती है और वहाँ की स्त्रियों ने उसे अपने आप को ढंग से रखना और बात करना सिखा दिया है।...और दो एक बार वह शावेनो नगर भी जा चुकी है, पर इससे आगे कुछ नहीं। भला कैसे उससे सब कुछ जानने की उम्मीद की जा सकती है ?"

नीता लेपादतू ने धीरे से कहा, "इन्सान जैसे रह सकते हैं वैसे ही तो रहते हैं ?"

"हूं, यह तो सही है, अब मेरी ओर ही देखो। जब भी कोई इधर आता है मुझे बड़ी खुशी होती है।...किसी से बातचीत कर सकूँ या ख़यालो का तबादिला कर सकूँ...तुम कहीं बहुत दूर से आ रहे हो ? क्या दक्खिन से ?"

"जी हाँ दक्खिन से, पर बहुत दूर से नहीं।"

"शायद तुम इयाशी के कस्बे से आ रहे हो ..?"

"जी नहीं इयाशी तो बहुत दूर है ..मैं वहाँ कभी नहीं गया। मैं तो एक गरीब—अनाथ हूँ। मेरे कोई नहीं है।..."

"हूँ" चचा नइनाश ने एक उसांस खींची और खड़े हो गये, "लो, लड़की पानी लेकर लौट आई !"

और वह हाँफती, लम्बी सांस भरती अपने नंगे पैरो से बड़ी-बड़ी शब्द करने वाली डगें भरती आई। उसकी बडी आँखें उसके सांवले चेहरे पर चमक रही थीं। वह झोपड़ी मे, दो कदम रखकर भीतर गई, फिर चूल्हे के पास से एक मिट्टी का प्याला लाकर उसे पानी से भरा और मुसाफिर को दे दिया।

नीता लेपादतू एक ही घूँट मे सारा पानी पी गया और फिर मांगा।

दूसरा भी पी गया, फिर ओठों और मूछों को अपनी कमीज की बाहों से पोंछा। मिट्टी का प्याला लड़की को दे दिया और ताज़गी महसूस करते हुए धन्यवाद के नाते बोला, "यहाँ पानी तो बहुत अच्छा है! भगवान् आपको अच्छी तरह रक्खे और आपकी मनोकामनाएँ पूरी करे···"

बूढ़ा अपनी ही धुन में बोला, "हुँ: पानी से बढ़कर अच्छी चीज दुनियां में और कोई नहीं है।"

लड़की किंचित मुस्कराई। उसने बाल्टी फिर किवाड़ों के पीछे रख दी और चूल्हे के पास पड़ी अपनी नीची तिपाई पर जा बैठी। नीता लेपादतू ने ध्यान से देखा तो पाया कि उसके गाल रक्तिम हो उठे थे और उसके बाल अधिक मुलायम और चिकने लग रहे थे। निश्चय ही उसने अपना मुखड़ा किसी जलाशय में देखा था और उसे धोया था और बालों को भी साफ़ पानी से सहेजा था।

यात्री ने ऊर्ध्व स्वाँस लेकर पूछा, "अब मैं क्या करूँ ?'

"हुँ...क्या करो ? सबसे पहले तुम हमारे साथ खाना खाओगे, हम इन-सान हैं न ? फिर हम जमींदार के घर चलेंगे। मेरा ख़याल है, तुम्हें काम मिल जायगा, क्योंकि मिस्टर जार्ज को हमेशा आदमियों की ज़रूरत रहती है..."

मार्घियोलिता, जो चूल्हे के पास बैठी हुई थी, बीच में ही-बोल पड़ी, "उन्हें मवेशियों के लिये एक आदमी की ज़रूरत है।"

बूढ़े ने पूछा, "तुझे कैसे मालूम ?" उसकी आवाज़ बहुत ऊँची थी और वह सिर हिला कर हँस रहा था।

"जब मैं उनके घर गई थी, तो वहाँ कोई कह रहा था।"

"हुँ···लड़की ठीक कहती है! उन्हें मवेशियों के लिए आदमी की ज़रूरत होगी।" और यह कहने पर उसकी वाणी आश्वस्त प्रतीत हो रही थी।

लम्बी यात्रा और सूखी हवा के कारण नीता लेपादतू थक गया था।

लेकिन ताजा पानी, झोंपडी मे आराम और बूढे की लड़की द्वारा तैयार किये गये भोजन ने उसको स्वस्थ कर दिया।

वह भी इधर-उधर की बातें करने लगा—एक और जमींदार के बारे मे, जिसे वह जानता था। अपने घर के बारे मे, रहने के कस्बे के बारे में। फिर वह चचा नश्ताश की कहानियाँ सुनता रहा, इस खयाल से कि इस दौरान मे उसे तरुणी की ओर देखने का अच्छा अवसर मिलेगा और उसमे यह भावना जग आई थी कि इस झोपड़ी मे वह अपने दोस्तों के बीच है।

: २ :

साँझ होने से कुछ पहिले वे बाहर निकले और जमींदार के घर की ओर चले। झोंपड़ी की देहरी पर खडी तरुणी उनको जाते देखती रही। उसने सोचा, अगर मुसाफिर को नौकरी नहीं मिली, तो वह बिना झोपड़ी पर वापस आये और उससे मिले अपनी 'यात्रा' पर निकल जायगा। उसे लगा, जैसे उसका दिल बैठा जा रहा है। आंखों मे वह शरीफ और शान्तिप्रिय दीखता है। वह कितना चाहती है कि वह आकर एक बार फिर बेंच पर बैठे और उसकी ओर ललचाई आंखों से देखे तथा पीने के लिए एक गिलास ठंडा पानी मांगे।

पश्चिम में सूर्य घनी पहाड़ियों के पीछे बादलो की चमकीली चकमक में छिपता जा रहा था। मैदान मे अब भी सूखी हवा चल रही थी। जहाँ तक निगाह जाती थी चारों ओर मकी के जुते हुए खेत फैले थे। ढालुवे मैदान में तालाब का शान्त पानी झलमला रहा था। एक पहाडी पर कुछ घनी झाड़ियां उभरी हुई थीं। कहीं पर जंगल, बागीचा या गांव का कोई निशान नहीं था और इस भू-भाग के ऊपर फैला आसमान शान्ति की चादर के समान विस्तृत था।

दोनों आदमी तंग धूल भरे रास्ते मे धीरे-धीरे चल रहे थे। उनके पैरो

से उठी धूल की बदली हवा के पंखों पर सवार होकर चरी और मक्की के खेतों के बीच फैली झाड़ियों पर विश्राम करने बैठ जाती थी।
खलिहान के पीछे से मानो हवा के आलसी झोकों के सहारे, कौवे और मैना उड़ीं और घाटी में अन्तर्ध्यान हो गईं।
"हुँः अब जमींदार का घर बिलकुल पास है," बूढ़े ने कुछ देर बाद कहा। "आज शनिवार है, जमींदार घर पर ही होंगे—शनिवार को वह खेतों से जल्दी ही आ जाते हैं।"
लेपादतू ने पूछा, "क्या बहुत बड़ी जमींदारी है ?"
चचा नस्ताश ने उसकी ओर अचरज भरी दृष्टि से देखा, "क्या ? जहाँ तक तुम्हारी नजर जाय और उसमे भी आगे ! ज़मींदारी बहुत बड़ी है। संसार की सब जमींदारियों में सब से बड़ी।" कुछ ठहर कर वह फिर बोला, "एक बार मैंने जमींदार से पूछा, मि० ज़ार्ज इतनी जमीन और इतने धन का आप क्या करते हैं ?"
"और उन्होंने क्या जवाब दिया था ?"
"क्य जवाब देते ?···हुँ ··उन्होंने कोई जवाब नहीं दिया। बस खिल-खिला कर हँस पडे।"
नौजवान ने अपना सिर हिलाया और मुस्करा दिया। बूढ़ा क़िसान भी मुस्कराया और लम्बे बाल हिलने लगे। अपनी झुर्रियोंदार कलौंच खाई अंगुलियों से इशारा करते हुए बोला—"वहाँ, वह नीचे है जमींदार का मकान और वे रहे नौकरों के मकान ··"
तालाब के पास था सफेद मकान, नीचा और गोल लट्ठों का बना हुआ —चारों ओर फूँस की मडैया थीं, अस्तबल थे।
चचा नस्ताश ने कहा, "जमींदार का मकान बहुत सुन्दर है। जमींदारों को बहुतेरे कमरे चाहिएँ। एक और अवसर पर मैंने उनसे पूछा—मिस्टर जार्ज ! आप इतने बड़े-बड़े कमरों का क्या करते हैं ? आपको इतने कमरे क्यों चाहिएँ ?"
"क्या कहा उन्होने ?"

"हूं· कहते क्या ? उन्होंने कुछ नहीं कहा। वह सिर्फ हँस पड़े"—
दूसरे ढलवानों से अधिक ढालुवां और जमींदार के घर से अधिक दूर पर नहीं, झोंपड़ियों की एक लम्बी पंक्ति थी। कुछ तो जैसी कि झोंपड़ियां आम तौर पर बनती हैं—आधी धँसी हुई और मिट्टी से ढकी हुई वैसी ही थीं। दूसरी पहाड़ की खोह की ओर झुकी हुई थीं और सरकंडों से, खप्पचों से चारों ओर से ढकी थीं, जिन पर मिट्टी की हल्की सी पोती फिरी हुई थी, जो अब धीरे-धीरे झरने लगी थी। इन अधधँसी झोंपड़ियों से धुंये की वदन्नियां ऊपर की ओर उठ रही थीं।
यहां-वहां एक कांच की खिड़की थी, जो कि हाथ भर से किसी हालत में बड़ी नहीं होगी, सूरज की तिरछी पड़ती किरणों को झलकाती थी। कहीं पर भी और किसी किस्म के बाड़े नहीं खिचे हुए थे।
मवेशी और सुअर दरवाजे के बाहर बेतरतीब जमा थे। मुर्गियां झोंपड़ियों की छतों पर कूड़ाकबाड़ और गोवर को छितराती थीं।
"यहां मिट्टी झोपड़ियों में रहने वाले बसते हैं," बूढ़ा बोला ' इन्हीं आदमियो के साथ मिलकर हम जमींदारी पर काम करते हैं।
"देखने से तो यह जान पड़ता है कि जमींदार के यहां बहुतेरे आदमी हैं काम करने के लिये। उनके पास..."
"सो तो है ही। तुम्हारा क्या खयाल था ? जिस जगह से तुम आये हो, क्या वहां के जमींदार के यहां इतने आदमी नहीं थे ? हमारा जमींदार सबसे बड़ी जमींदारी का मालिक है, समझे ! इसलिए उन्होंने चारों तरफ से आदमी बुला रखे हैं। समय-समय पर कुछ लोग काम छोड़ कर चले जाते हैं, उनकी जगह नये आ जाते हैं। . जब काम पूरे जोरों पर होता है, तो वह ऐसी जगहों से आदमियों को बुलाते हैं जहां उनकी बहुतायत होती है और इसलिए और आदमी बढ़ जाते हैं।...लेकिन हम भारी काम झोपड़ियों में रहने वालो के साथ मिलकर ही करते हैं।"
लेपादतू भुनभुनाया, "हमारे यहां भी ऐसा ही था। मैं खुद इसी तरह की कीचड़ की झोंपड़ी मे पैदा हुआ था, वहीं बढ़ा और वहीं रहा।..."

"पर खैर" इसी तरह की झोंपड़ी"'लेकिन और जगहों पर तो लोग सचमुच के घरों में रहते हैं। मैं तो सोच भी नहीं सकता, भला वहाँ जाड़ा कैसा होगा ?...एक बार मैंने जमींदार से पूछा, मिस्टर जार्ज, अपनी झोंपड़ियों में हम सर्दी की चिन्ता नहीं करते। पर आपको अपने इतने बड़े घर में ठण्ड नहीं लगती ?"

"उन्होंने क्या कहा ?"

"क्या कहा तुम्हारे ख़याल से उन्होने ? वह हँस भर दिये। बोले कि वह आग जलवा लेते हैं। पर मैं यह सब क्या समझूँ ?"

"चचा नश्ताश दरअसल यूँ है। हमारे जैसे इन्सान आधे जमीन के ऊपर रहते हैं और आधे नीचे। आप तो जानते ही हैं कि कभी-कभी कितनी भयानक सर्दी पड़ती है और हम मवेशियो के साथ खेतो पर ही बने रहते हैं। हम इन सब चीज़ों के आदी हो गए हैं और रहा ज़मीदार, सो उससे आप क्या उम्मीद करते हैं ? वह ज़मींदार है और उसकी आदतें दूसरी ही तरह की हैं।"

चचा नश्ताश ने बात पूरी की—"उसकी चमड़ी भी और तरह की है .."

इस वाक्य पर दोनों हँस पड़े। वह और नीचे उतरे और झोंपड़ियों के सामने से गुज़रे। बहुतेरे आदमी चिथड़े लपेटे आ-जा रहे थे, मवेशियों को पानी पिला रहे थे, घोड़ो को सैर करा रहे थे, ढेकुलीदार कुँए पर अपने पीने के लिए पानी लेने के लिए अपनी-अपनी बारी ले रहे थे।

बूढ़े ने उन्हें पुकार कर पूछा—"जमींदार वापस आ गये क्या ?"

किसी ने भर्राये गले से उत्तर दिया—"हाँ-हाँ, आगये।"

चचा नश्ताश आप ही, भुनभुनाये "अच्छा हुआ।"

ज़मींदार के घर के आस-पास भी चारदीवारी का घेरा नहीं था। नौकरों के घरो में आदमी घँसे पड़े थे। साईस अपने घोड़ों को अस्तबलों में ले जा रहे थे। घर के पीछे मवेशियों का एक झुण्ड गुज़रते हुए धूल के बादल उठा गया। चरवाहों की आवाजें चीख-पुकारें; डांटे-फटकारें रह-

रह कर गूँज रही थीं। कभी बहुत जोरों की भद्दी गालियां सुन पड़ती थीं और मवेशियों की पीठ पर मार के धमाके भी सुन पड़ते थे।
मवेशियों के गले में बँधी न दिखाई देने वाली घंटियां धूल भरी हवा में दर्द की झंकार की मानिन्द गूँज जाती थीं।
"देखो, जमींदार के कितने मवेशी हैं?" बुड्ढे ने बिना किसी घमण्ड की भावना के कहा।
लकड़ी के बने घर के पास घूम कर पिछले दरवाजे के पास जाकर रुक गये। काफ़ी इन्तज़ार करना पड़ा। बरामदे की खिड़कियों मे यदा कदा उन्हें एक स्त्री की परछाईं दीख जाती थी।
चचा नश्ताश फुसफुसाये—"जमींदार के घर की देख-भाल करती है यह!"
छाया एक बार फिर सामने आई और इस बार वह हटी नहीं, रुकी, बाहर आकर दरवाजा खोल दिया। एक दुबली-पतली, पीले चेहरे वाली, कोयल जैसी आँख और काफी तीखी नाक वाली स्त्री थी। वह गहरे रंग के कपड़े पहने थी और बालों को तरतीब से ढकने के लिए भी वैसा ही गहरे रंग का रूमाल भी था।
उसने कुछ तीखी आवाज़ मे पूछा—"क्या बात है चचा नश्ताश?"
"हम जमींदारजी से कुछ बातें करना चाहते हैं..."
"अच्छी बात है! पर अब अपनी बेटी को क्यो नहीं भेजते कभी मेरे पास? यहां बहुतेरा काम करना होता है, कुछ मदद ही कर देगी हमारी।"
बूढ़ा कोमलता से बोला, "कौन मार्थियोलीता? उसे घर पर कुछ काम करना है; पर मैं उसे तुम्हारे पास भेजूँगा जरूर, हां, क्यों नहीं भेजूँगा?"
"अच्छा यह तो बताओ, तुम्हें जमींदारजी से क्या कहना है?" उस दुबली स्त्री ने पूछा। जल्दी बोलने मे उसकी आवाज़ और भी तीखी सी लगी।

"यह नौजवान है न, यह उनसे कुछ बातें करना चाहता है।"

गृह-रक्षिका ने नीता लेपादतूं की ओर एक तीखी दृष्टि डाली और फिर दरवाज़े को एक धमाके के साथ बन्द कर लिया।

"हुँ", चचा नश्ताश, मुस्कराये। "देखा, यह नन है। जैसा तेज़ बोलती है, वैसा ही तेज़ बर्ताव भी है इसका।"

लड़के ने ताज्जुब से पूछा, "नन क्या ?"

"अरे वाह, यह एक कन्वेण्ट (धर्म-शिक्षा-केन्द्र) से आई है और अब ज़मींदारजी के घर की देख-भाल करती है। कितनी तेज है, देखा! इसी तरह बोलती है हमेशा। यह हम पर यह जतलाना चाहती है कि यह है घर की सब कर्त्ता-धर्त्ता। वैसे दिल बुरा नहीं है। कभी-कभी यह मार्घियोलीता से गप्पें हाँकती है, तब अपने बारे में बतलाती है। कुछ भी हो, कोई बहुत खुशी की बात नहीं थी, जिस कारण वह इस वीराने में रहने आई।"

गृह-रक्षिका एक बार फिर पहिले से भी तेज़ी से बरांडे के शीशों पर काली चमक की तरह गुज़री। फिर उन्होंने किसी मर्द के पैरों की आहट सुनी और ज़मींदार ने आकर दरवाज़ा खोला।

दोनों आदमियों ने अपने सिर नंगे किये। मिस्टर जार्ज एवरामीनू जवान और मज़बूत, उदार, हँसमुख और साँवला चेहरा, उसके सामने अपने हाथ पतलून की जेब में डाल कर खड़े हो गये। उनकी ओर देखा और फिर मुस्कराये।

"चचा नश्ताश!" उन्होंने भर्राई लड़खड़ाती-सी आवाज में कहा "क्या नया समाचार है ?"

"मिस्टर जार्ज, आप किस नये समाचार की उम्मीद करते हैं। अब तक सब ठीक चल रहा है।"

ज़मींदार अपनी पतलून की जेब में पड़ी चाबियों को खनखनाते हुए प्रसन्नता पूर्वक बोला, "सचमुच ? फिर आपका आना कैसे हुआ ? खलिहान अकेला छोड़कर क्यों चले आये ?"

"पर मैंने उन्हें अकेला तो नहीं छोड़ा मिस्टर जार्ज ! वहां कई विश्वास-पात्र लोग हैं अभी; और फिर मुझे अपनी बेटी का भी तो सहारा है..."

"क्या ? बेटी का क्या सहारा ?.. लेकिन यह आदमी कौन है ? तुम दोनों चाहते क्या हो ?"

चचा नश्ताश ने नीता की ओर ऐसे देखा, मानो पहली बार देख रहे हों। उठकर बोले, "यह ! एक लड़का है . हमारे यहां आज ही आया है। ....."

"क्या नाम है इसका ?"

चचा नश्ताश ने कोई उत्तर नहीं दिया। फिर उस नौजवान की ओर देखा और उसकी ओर सिर हिलाया। आगन्तुक ने अपनी टोपी हाथों मे मोड़ी-तोड़ी और उत्तर दिया—"नीता लेपादतू।"

बूढ़े ने सिर हिलाया और ऐसा दिखाया मानो उसने उस नौजवान का नाम पहली बार सुना हो और कुछ अजीब-सा नाम हो।

जमींदार ने दुहराया, ' नीता लेपादतू ? कहां से आये हो ?"

"नीगोइस्ती से।"

"जिला इयाशी ? क्या चाहते हो ?"

अब चचा नश्ताश बोले, "मिस्टर जार्ज, यह मवेशियों की देखभाल का काम चाहता है।"

"हूं, तो यह मवेशियों की देखभाल का काम चाहता है, सचमुच ? खैर, किसी को जानते हो ? कोई जमानती है ?"

"जी नहीं," नीता बोला, "हमारी तरफ तो कोई जमानती नहीं मांगता।"

"सच ? चलो, मैं भी कोई जमानती नहीं मांगता। बस एक शर्त है, तुम अपना वर्ताव अच्छा रखोगे। हां एक बात, तुमने नीगोइस्ती के जमींदार की नौकरी क्यों छोड़ी ?"

नीता ने धीमी आवाज मे उत्तर दिया, "मिस्टर जार्ज यह न समझें कि मैं बुरा आदमी हूं। यह सच है कि मैं गरीब हूं, इसमे कोई शक नहीं...

मेरे मां-बाप नहीं, कुटुम-कबीला नहीं, रहने के लिये मकान नहीं... मेरे पास इन भुजाओं के सिवा और कुछ नहीं—लेकिन ये भुजायें काम कर सकती हैं और मैं ईमानदार हूँ। मैं नीगोइश्ती के जमींदार के यहाँ दस साल रहा और मुझे लड़के का तन्खा मिलती रही। मै यह जानता था और चाहता था कि अब मुझे आदमी की तन्खा मिलनी चाहिए और इसी लिए मैंने उनसे तन्खा में बढ़ोत्री के लिए कहा। उन्होंने देनी नहीं चाही और मैंने नौकरी छोड़ दी। मुझे अफ़सोस है। मैंने उनके लिये दस साल तक गुलामों की तरह काम किया। लेकिन मैं क्या करता? इस लम्बी चौड़ी दुनियां में कहीं रोटी का टुकड़ा तो हासिल करना ही था। मैं पिछली रात वहाँ से चला और चलते-चलते यहाँ आ गया। अगर आप मुझे नौकर रख लेंगे, तो मैं यकीन दिलाता हूँ कि मै ईमानदारी से खिदमत करूँगा!"

मिस्टर जार्ज चुप्पी साधे उसकी बातें सुनते रहे, अलबत्ता पतलून की जेब में चाबियों का घूमना जरूर जारी रहा। जिस बंजर जमीन की वह आजकल सफाई करवा रहे थे उसे इसी प्रकार के गंवार किया करते थे। इन्हीं की मदद से वह अपने मवेशियो की तादाद बढ़ाते थे और गलाती भेजने से पहिले गल्ला एकत्र करवाते थे। इस किस्म के अलग-अलग और रेगिस्तानी भाग में उन्हें आदमियों की हमेशा जरूरत रहती थी। कहाँ से आये और पहिले किसके यहाँ थे, यह सवाल उन्हें परेशान नहीं करता था। यह कोई साधारण कानूनों द्वारा शासित इलाका तो था नहीं। यहाँ, वह अकेले ही कर्ताधर्त्ता थे। कस्बे और सभ्यता के दूसरे केन्द्र यहाँ से बड़ी दूर थे। यहाँ तो 'कहीं' या 'मैदान में' वाली बात थी। टैक्स वसूल करने वाले जितना जमींदार देना चाहता था, उतना ही वसूल करते थे। फौजी अधिकारी यहाँ किसी भगोड़े को तलाश करने नहीं आते थे और न अपराधियों का कोई न्याय होता था। जमींदारी से लगी हुई कोई सड़क नहीं थी। वहाँ कोई गिरजाघर नहीं था और स्कूलो की बाबत तो कभी किसी ने सुना तक नहीं था। बस वहाँ

एक ही चीज थी—जमीन, ढेर सारी जमीन। उस पर काम करना होता था और जमीदार उस पर काम करने के लिए अपनी जरूरत के हिसाब से आदमियों को रख लेता था। इसी कारण मिस्टर जार्ज ने नीता से सवालात करने मे ज्यादा वक्त बर्बाद नहीं किया। उन्होंने समझ लिया कि एक कंगाल, बेघर-बार, बे मां-बाप, लेकिन मजबूत दिखाई देने वाले मेहनतकश से उनको वास्ता है और यही उनके लिए काफी है।

उन्होंने प्रमुदित होते हुए कहा—"तय रहा। नीता लेपादतू मैं तुम्हें अपने मवेशियों की देखभाल के लिए रख लेता हूँ। पर काम ढंग से करना। मैं तुम्हें ईमानदारी से उजरत दूंगा। मैं तुम्हें एक कोट दूंगा, एक पर लगी जाकेट, जूते और टोपी सिर ढकने के लिए, जब भी तुम्हें चाहिए ले लेना और खाने की तुम्हें कोई कमी नहीं होगी। यहां बहुतेरा है ईश्वर की मेहरबानी से! तुम यहीं—किसी झोपड़ी मे रियासत के दूसरे नौकरों के साथ सोओगे...और देखो बर्ताव अच्छा रहे—उसी हिसाब से मैं तुम्हें इनाम दूंगा।"

नीता धीमे स्वर मे बोला, "मालिक, अब तक मैंने चाकरी करने के सिवा और कुछ नहीं किया ..मुझे यकीन है आप मुझसे सन्तुष्ट रहेंगे।"

जमींदार ने अपनी जेब से एक छोटी सी नोटबुक निकाली और नए चाकर का नाम उसमे लिख लिया। तन्खा की बात तय करके उन्होंने दूसरी सहूलियतों समेत उसे भी दर्ज कर लिया। और फिर नोटबुक बन्द करके बोले, "बस। अब तुम इस बूढे के साथ जा सकते हो। कल मैं तुम्हारे काम को पूरा समझा दूंगा और तुम्हारी तैनाती कर दूंगा..."

मिस्टर जार्ज ने अपनी जेब से एक सिक्का निकाल कर नीता को दिया और कहा—"ईमानदार रहना, मेहनत से काम करना, सब ठीक चलेगा। अच्छा, मौज करो!"

नए चाकर ने जमींदार का हाथ चूमा और कुछ कदम पीछे खड़े बुड्ढे के पीछे हो लिया। मिस्टर जार्ज ने बरामदे का दरवाजा बन्द कर

लिया। दोनों ने अपने सिरों पर फिर टोपी रखली और झोंपड़ियों की ओर चल पड़े।

चचा नश्ताश अठखेलियाँ करते-से बोले—"देखो, आखिर तुम रुक ही गए न हम लोगों के साथ रहने के लिए . "

"मैं भी बहुत खुश हूँ!" नीता बोला, "मैं कुछ ब्रांडी खरीद कर पीना चाहता हूँ।...."

"बहुत अच्छे, मेरे छोकरे, पर यहाँ कोई दुकान नहीं है। लेकिन शनि-वार को अक्सर कोइ-न-कोई घोड़े पर जाता है और कुछ ले आता है! खैर हम लोग फिर कभी पियेंगे, अपनी पहली मुलाकात की खुशी मे, चिन्ता मत करो। मेरा खयाल है अब तुम हमारे साथ ही बने रहोगे जमींदार बड़े अच्छे आदमी हैं। .."

"सचमुच वह नौजवान और दोस्त किस्म के हैं।" लेपादतू ने विचार निमग्न वाणी में कहा।

सूरज छिप गया था और शरद् की संध्याकालीन लालिमा ताजगी लिए निखरी हुई थी। झोंपड़ियों में आग जल रही थी। मवेशियों की आवाजें कुत्तों की भूँक और बेहिसाब इन्सानी आवाजें सुनाई पड़ रही थीं।

उसी निस्तब्धता में अचानक उन्होंने दौड़ते हुए घोड़ों और चीखों का शोर सुना, जो एक पहाड़ी से दूसरी पहाड़ी तक गूँज गया।

और अचानक कहीं से, उस डूबते सूरज की घिरती पीली-सी रोशनी में, कौओं का एक झुंड काँव-काँव का शोर मचाता उमड़ा और फिर तितर-बितर होकर विलीन हो गया।

चचा नश्ताश और नीता लेपादतू झोंपड़ियों के पास पहुँच गए थे और उन्हें काम पर से लौटे हुए आदमियों की आवाजें साफ़ सुनाई पड़ रहीं थीं। ऊँचाई पर मवेशियों के बाड़े से आगे घाटी की तलहटी मे कई अलाव काफी चमक से जल रहे थे। लोग ज्वार की लपसी पका रहे थे। उनकी काली छाया लपटों की रोशनी में अजब ढंग से चल फिर रही थी।

वे जब अलाव के पास आये तो उनके नथुने ज्वार की लपसी की गन्द से भर गये। एक बड़े बर्तन से काफी भाप निकल रही थी, जिसमें गोश्त पक रहा था। मजदूर लोग ब्यालू की प्रतीक्षा कर रहे थे। कई तरह के लोग थे और कई तरह की पोशाक पहिने हुए। उदार और उजले रंग के चेहरे वाले और चमकदार आँखों वाले चेहरे। मोल्दोवा नदी के किनारे मिलने वाले सफेद कपड़े भी थे और ऐसे श्यामल कपड़े भी थे जिन्हें मैदानी लोग पहनते हैं। कुछ बड़े फैल्ट हैट लगाये हुए थे और कुछ गोल स्ट्राहैट लगाये हुए थे, जिनके ऊपर लाल धागे की प्लेट पड़ी हुई थीं। कुछ पुरानी फरकैप ओढ़े हुए थे जो बारिश और तेज धूप के कारण बिलकुल लिबलिबी हो गई थीं।

कुछ छोकरे भी वहाँ पर थे,—दस बारह साल के लावारिस—उनके सिर नंगे थे। बस उनके सर पर टोपी के नाम पर सिर्फ घने और घुंघराले बाल थे। बहुतेरी औरतें गहरे भूरे रंग की रूमाल लपेटे और ब्लाउज पहिने इधर से आ जा रहीं थीं। उनके चेहरे अधिक श्यामल थे और आदमीयों के चेहरों से अधिक दुखी नजर आते थे। सब खामोश थे—सारे दिन कड़ी मशक्कत की थी। लोहे की काँटेदार बाढ़ के, जो मवेशियों के घेरों के आस-पास लगी थी, नजदीक अलाव जल रही थी, चमक के साथ; और अपनी लाल लपटों से इस बेतरतीब भीड़ को चमका रही थी। एक दुर्बल, लम्बी गर्दन वाला लड़का सरकंडों के बड़े ढेर में से मुट्ठी भर सरकडे उठाकर आग की भूख मिटा देता था।

चचा नश्नाश और नीता लेपादतू जमीन को दचकते हुए चल रहे थे। जमींदार के घर का एक नौकर एक लकड़ी की चम्मच से ज्वार की लपसी पका रहा था, जबकि दूसरा मटन स्टू के पास एक बड़ा सा करछुल लिए तैयार खड़ा था।

भूखे लोग अपने कठौते लिए तैयार बैठे थे। किसी को भी अजनबी की मौजूदगी का अहसास नहीं था। जब लोगों को करछुली भर-भर स्टू और रोटियां मिल गईं और वे खाने लगे, तब कहीं उन्होंने लपटों की

रोशनी में इधर-उधर देखा-भाला। उन्होंने आगन्तुक की ओर ध्यान दिया और उससे बात करने लगे।

आगन्तुक को कई लोगों के सवालों का जवाब देना पड़ा हालाँकि वह इन लोगों में से शायद ही किसी को जानता था।

जब रात बहुत गुज़र गई और अधिक खाने वाले लोग जब सब यहाँ से चले गए और अलाव के पास कुछ ही लोग रह गये, तब नीता लेपादतू उन झोंपड़ियों में रहने वालों को कुछ जान सका।

उसे सबसे पुराने मवेशी रखवारे घियोर्घी दरबा को और जमींदार के आमोद-प्रमोद का ध्यान रखने वाले मिखाइलेच पेस्कूरी और खलिहान के बुजुर्ग इरीम्या इज्द्रेल को जानना जरूरी था।

हर शनिवार की रात की तरह वह अलाव के पास बैठे उस छोकरे का इन्तजार कर रहे थे जो घोड़े पर शराब लाने के लिए गया था।

अन्त में चारों ओर निस्तब्धता का राज्य फैल गया। कुछ झोंपड़ियों में आग जल रही थी, या जमींदार के घर मे रोशनी थी। यहाँ-वहाँ कुछ आवाजें सुनाई पड़ जाती थी। भगवान की रक्षा से तिरस्कृत दुनियां के इस भाग में जहाँ चारों ओर छाया और शान्ति का समुद्र हिलोरें मार रहा था, ये आवाजें, जो बोलना न होकर गुनगुनाना थीं, किस कदर नरम और दोस्ताना लगती थीं।

छोकरा ब्राण्डी लेकर आ गया। अलाव के पास बैठे लोग पीते-पीते शरद् ऋतु के काम की कठिनाइयों और सर्दी के काम की तैयारियों पर बात-चीत करने लगे।

तभी एक दौड़ते घोड़े की आवाज उस रात की घनी हवा को चीर कर पास आती सुनाई दी। घोड़ा मवेशियों के बाड़े के ऊपर ठहर गया।

चचा नश्ताश ने विहँसते हुए कहा—"यह साँडू फलीवोग है।"

एक भद्दी और कर्कश आवाज ने कहा—"जी हाँ इंजानिव !"

लपटों की चमक में उन्होंने देखा, एक दुबला लम्बा आदमी, लम्बी नाक, चमकदार आँखें, जो भौंहों के नीचे गहरे गड्ढों में घुसी हुई थीं।

उसने अपना चाबुक अपनी गर्दन के चारों ओर लपेट रखा था और हंस रहा था। उसके ऊपर के दो दांत नहीं थे।

उसने फुर्ती से कहा, "मैं तार की तरह आया हूँ! हवा चक्की से अगर तुम मिस्टर नस्त्रातिन को अपने घोड़ों के पीछे दौड़ते देख सकते।"

वह अट्टहास कर उठा और उसकी आंखों मे चमक आ गई। उसने चारों ओर देखा और उनकी निगाह सुराही पर पड़ी।

"ओहो! तुम लोगों के पास पीने के लिए है?" उसने भारी आवाज़ में पूछा! "लाओ एक प्याला मुझे भी दो।

पीने के बाद उसने एक बार फिर चारो ओर देखा और उसकी दृष्टि नीता लेपादतू पर टिक गई।

एक दम, उसने अपने सिर को पीछे करके पूछा, "यह कौन है?"

जब वह बोला तो उसकी गर्दन की खाल के नीचे की गोल्ली ऊपर नीचे उतरी-चढ़ी।

चचा नस्ताश ने मुस्करा कर उत्तर दिया, "नया है। यह मवेशियों की देखभाल के लिए रख लिया गया है।"

"खूब! कहाँ से आये हो?"

"नागोइस्नी से!" लेपादतू ने मुलायम स्वर मे कहा।

"तुम्हारा नाम क्या है?"

"नीता।"

"नीता क्या?"

"नीता लेपादतू।"

"यहाँ क्यो आये तुम?"

"काम की तलाश मे!"

"काम? खैर उसके बारे मे देखा जायगा ."

उसने आगन्तुक का भयानक दृष्टि से परीक्षण किया। ग्राण्टो का एक और घूंट भरा और अपने गले को खंखार कर साफ किया।

"साली बड़ी तेज है!...और हाँ तुम नोगोइस्ती से क्यो भागे?"

"भागा नहीं। मर्जी से छोड़ कर आया हूँ।"

"अच्छा! खैर इसके बारे मे भी देखा जायगा। तो तुम्हें मवेशियों के काम के लिये रख लिया गया है। तो मेरे वच्चे, तुम यह जान लो कि तुम्हें मेरे हुक्म की तामील करनी पड़ेगी। मेरा नाम साँड़ू फलीवोग है। कुछ सुना है मेरे वारे में?"

"वड़ी प्रसन्नता हुई आपसे मिलकर, साँड़ू फलीवोग! मैंने तुम्हारे वारे में अभी कुछ नहीं सुना।"

"तव अब सुन लोगे और यह भी जान लोगे कि मैं कैसा आदमी हूँ! अगर तुम मेहनती हो, तो मुझसे तुम्हारी खूब निभ जायगी और अगर मेहनती नहीं हो तो वस, ईश्वर ही..."

फलीवोग ने अट्टहास किया और वह कहता गया—"काश, कि तुम मिस्टर नस्त्रातिन को अपने घोड़ों की तलाश करते देख पाते! मैंने सूरज छिपने पर उसे पहाड़ी की चोटी से देखा था। मिस्टर नस्त्रातिन हम जैसे लोगों के लिए रोशनी दिखाने के भी काबिल नहीं है। मैं वड़ा चतुर हूँ और दूसरी सव वातों की तरह घोड़ों की वावत भी सव कुछ जानता हूँ। तुम तो यही समझते होगे कि उसकी यह भाग दौड़ सिर्फ हमारी रियासत मे यहाँ-वहाँ घूमना है।...हमारे जमींदार को हर जगह घास कुचली हुई और खेत वर्बाद किये हुए मिलते थे। और घोड़ो का कोई पता तक नहीं चलता था। उनको पकड़ना और तलाश करना वड़ा मस्ला था, क्योंकि नस्त्रातिन सूरज निकलने से पहिले ही उन्हे खदेड़कर ले जाता था। मैं अपने आप यही कहूँ कि 'यही मामला है' देखो और इन्तजार करो। सो मैंने कल रात अपनी सफ़ेद घोड़ी ली और नस्त्रातिन की जमींदारी में गया और उसके घोड़ों के आस-पास मंडराने लगा। . मेरी घोड़ी की घण्टी टुन-टुनाने लगी और धीरे-धीरे एक के वाद एक छोटे दस्यु मेरे पीछे चलने लगे.. और फिर मुझे समझ थी ही कि कैसे क्या करना चाहिये। कभी इधर और कभी उधर, मैं रास्ते काटता-कूटता उन सवको अपने जमींदार के घर ले आया। अव सव

वहाँ पर हैं और नस्त्रातिन परेशान भटक रहा है। देखना, अब कितना भारी जुर्माना उसे अदा करना पड़ेगा ?...भला इस तरह कहीं काम चलता है। पहले ये मवेशी रियासत के इस कोने से उस कोने तक अवारगी करते थे। पर, अब जान लो, यह सब कुछ खत्म हो गया है ! फलीवोग की नज़र उन पर है। मेरे पास एक चाबुक है और एक बन्दूक। मुंशी, नौकर, पहरुए, मैं किसी की परवाह नहीं करता। हमारी रियासत में जो भी आयगा, मेरे कोड़े से उसे मुलाकात करनी ही पड़ेगी। मुझे नमक हलाल ही होना पड़ता है। अगर हम किसी दूसरे की ज़मीन पर एक दो कदम जाते हैं, तो इससे किसी को क्या ? पर हमारी ज़मीन .. उसे छूना भी खतरा है !"

फलीवोग चुप हो गया और अपने चारों ओर गुस्से से देखा।

"कहाँ है प्याला ? मेरा गला सूख गया है ?" फिर वह नीता की ओर मुडा "ऐ, लेपादतू तुम्हारी शादी हो गई है क्या ?"

लेपादतू ने संक्षिप्त सा उत्तर दिया—"नहीं।"

"मैं शादी शुदा हूँ और मेरी बीबी बड़ी करारी है, मर्दों की तरह घोड़े पर सवारी करती है और निशाना लगाती है।"

लेपादतू ने बीच में ही अपनी बात बिना कुछ ख्याल किये बोल दी—"अच्छा है दोनों के लिये !"

फलीवोग प्याले को ओठों से लगाये, पीते-पीते रुक गया और उसकी भौहों मे बल पड़ गये। गुस्से से चिल्लाया—"मुझसे इस किस्म की बात करने की तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई ?"

नीता ने धीरे कहा, "क्यों जैसा तुम पूछते हो, वैसा ही मैं जवाब देता हूँ।"

"ओह, यह बात है ? ठीक है, लेकिन तुम शायद यह भूल रहे हो कि तुम्हें काम मेरे नीचे करना है।"

"नहीं, मैं कुछ भी नहीं भूल रहा हूँ।"

"मैं नहीं .."

फलीवोग उछल कर घोड़े से उतरा और अपना चाबुक संभाल लिया। लेकिन लेपादतू ने अपनी जगह से उछल कर, अपने लबादे के भीतर से एक पीतल की बर्छी निकाली, जिसकी मूंठ कुत्ते की हड्डी की थी।

लेपादतू बोला, "सुनो फलीवोग! मैं अमनपसन्द आदमी हूँ। सिर्फ़ एक बात से, ज़रा-सी मेहरबानी और नरमी से तुम मेरे साथ चाहे जो कर सकते हो; पर, मुझे गुस्सा मत दिलाओ, क्योंकि इसका नतीजा अच्छा नहीं होगा ..और यह बात तुम गाँठ बाँध लो कि मैं डरपोक नहीं हूँ।"

फलीवोग अपना सिर झुकाये नीता की ओर घूर रहा था।

लेपादतू ने भी दृढ़ता से, बिना पलक गिराये उसे घूरा।

चचा नश्ताश अपनी पतली आवाज में बोले—"छोड़ो-छोड़ो—कैसे खूँखार हो तुम लोग! अभी मिलने मे देर नहीं हुई कि कुत्ते बिल्ली की तरह लड़ने लगे।"

नीता ने अपनी कटारी खोली में वापस रखते हुए नरमी से कहा—"चचा नश्ताश, तुमने बिल्कुल ठीक कहा। मुझे किसी से गिला नहीं और मैं हरेक का दोस्त बनने को तैयार रहता हूँ। मेरे दिल में ज़रा भी नफ़रत नही है।"

फलीवोग गुस्से से चिल्लाया, "तुम, मेरे दोस्त?" और फिर वह खिल-खिलाकर हँस पड़ा। उसके खराब दाँत चमकने लगे।

वह कहता गया—"ऐ नीता, तुम्हारी कटार बड़ी खूबसूरत है! ऐसे दोस्त के होते हुए, तुम सारी दुनिया मे निडर विचर सकते हो। यहाँ आओ। मैं तुमसे दोस्ती करूँगा—पर यह बात साफ़ है कि तुम मेरी हुक्मउदूली नहीं करोगे। तुम अभी जवान हो और मैं—मेरे बाल सफ़ेद हो चुके हैं।"

"ठीक है, जैसा तुम कहोगे वैसा ही हो जायगा...." फलीवोग द्वारा दिये जाने वाले प्याले को लेते हुए नीता लेपादतू ने कहा।

सॉदू फलीवोग अलाव के पास सरक आया। एक सिगरेट बनाई, जलाई और फिर उछल पड़ा।

अपनी भारी आवाज में उसने कहा,—"मैं भेड़िया घाटी तक एक चक्कर लगाकर फौरन आता हूँ। अपने चाबुक को फटकारा और सिगरेट का धुँआ उड़ाता हुआ बाहर चला गया। उन्होंने सफेद घोड़ी के भागने की आवाज़ सुनी—पहिले पास थी, फिर दूर—और दूर और इतनी दूर हो गई कि रात की खामोशी मे छिप गई।

अलाव के पास बैठे लोग, कुछ देर शान्त बैठे रहे। चचा नस्ताग ने कुछ और लकड़ियाँ आग मे डाल दीं। घियोर्घी वर्षा ब्राण्डी की सुराही को रोशनी मे ले आया। झोपड़ियाँ पूरी तरह से अंधकार से आच्छादित थीं। अंधेरे में, सिर्फ ऊपर तारे टिमटिमा रहे थे। दिन भर चलने वाली हवा उस समय भी मवेशियों के बाड़े मे धीमे-धीमे सनसना रही थी। मिखालेच प्रेस्कूरी ने शान्ति भंग की—"ज़मींदार के यहाँ फनीबोग जैसा कोई मुन्शी पहले नहीं था और न फिर कभी होगा। देखो न, हवा की तरह पूरी रियासत का चक्कर लगा देता है। जितनी रखवाली अब खेतों की होती है, वैसी पहले कभी नहीं हुई।"

लेपादतू ने पूछा—"कहाँ का रहने वाला है यह ?"

प्रेस्कूरी उसकी ओर मुड़ा, और बोला—मुझे नहीं मालूम। कोई भी नहीं जानता ..पर यह सब जानते हैं कि वह यहाँ कब आया.. गर्मी का मौसम था। एक अजनबी भूसे के ढेर के पास सोता पड़ा मिला। हमें भी इसका फौरन पता पड गया। शाम को हम उसे अलाव पर ले आये और खाना भी खिलाया। उसने हमे बताया कि बडी दूर से भागा हुआ आया है और घुड़सवार पुलिस उसका पीछा कर रही है। लेकिन सच-मुच वह कहाँ से आया, यह सिर्फ परमात्मा ही जानता है.. हो सकता है कि वह कहीं से फरार होकर आया हो। जमींदार को यह पता चला कि कोई अजनबी आ गया है। उसने तो उसे खलिहान मे छिपे हुए भी देखा था, पर कुछ कहा नहीं। क्यों ! कभी गुंडे तो इधर देखे नहीं। और अगर भगोडा है, और उसे यूँ ही न छोड़ दिया गया तो कहीं गुस्से मे कहीं आग न लगा दे—ऊपर ही सवार न हो जाय। एक दिन ज़मींदार

मवेशीखाना देखने आये और उस आदमी से मिले। एक दो मीठी बातें कीं और नौकर रख लिया। तब से फलीवोग हमारे साथ रह रहा है और जमींदार को एक मेहनती, अनथक मेहनती, और दयाहीन नौकर मिल गया है।"

नीता लेयादलू बोला, "सचमुच ही जैसा यह निर्दयी है, वैसा ही मेहनती भी दीखता है।"

उन सबमें चचा इरीम्या इज्ड्रेल ने आगन्तुक की ओर विचारपूर्ण दृष्टि से देखा—लेकिन मेरे बेटे, तुम जहाँ पहले थे, वहाँ तुम्हें काफी सहन करना पड़ा है। जब मैं कोई आदमी देखता हूँ तो मैं उसके विचार पढ़ लेता हूँ और देखता हूँ कि क्या उसने काफी मुसीबतें उठाई हैं।"

नीता बोला—"कौन जाने उसने भी मुसीबतें उठाई हों। मुझे अपने माँ-बाप की याद नहीं। मैं अजनबियों में पड़ा हुआ, कुछ मुझे मारते थे और कुछ मेहरबान थे, मेरे लिए दुःखी होते थे। इसी तरह मैंने अच्छे दिल वालो की इज्जत करना सीखा। लगता जैसे भगवान् ने उन्हें खास भेंट दी है। मैंने हमेशा काम किया है, किसी-न-किसी का हमेशा नौकर रहा हूँ। और मैं सचाई से कह सकता हूँ कि मैं हमेशा ईमानदार और वफ़ादार नौकर रहा हूँ मैंने प्रुत के किनारे, जजया के किनारे सैर की है और मैंने सुना है कि उसके पार और देश हैं, जिनमें बड़े गाँव हैं, बड़े कस्बे हैं और बहुतेरे आदमी हैं, लेकिन मैं उन्हें देखने नहीं गया। मैं इधर के हिस्सों को, जहाँ आदमी कम हैं, चाहता हूँ। और मैं दूर जा भी कैसे सकता था, गरीब जो था। अपनी तरफ़ से मैं भरसक काम करता था, पर जमींदार एवज में मुझे बहुत नहीं देते थे। हो सकता है, मैं अभागा होऊँ। मैं ऐसी झोंपड़ियों में रहा हूँ। जो कुछ उन्होंने मेरी थाली में रख दिया, वही खाया है। मैंने गधे से ज्यादा काम किया है और कभी किसी से झगड़ा नहीं किया। एक दिन मैंने सोचा—अब वक्त आ गया है कि मैं कुछ दुनियाँ में घूमूँ। और आजकल मैं यहाँ रुका हूँ और मुझे ऐसा लगता है कि मैं और कहीं जाना भी नहीं चाहता।...

बड़े शहर में मैं कर भी क्या सकता हूं, वहां तो अनेक आदमी होंगे। मुझे लगता है कि मवेशियों से ही मेरी पटरी बैठेगी। इन्हीं के साथ मैं बड़ा हुआ हूं और इन्हीं के साथ मेरी निभती है...।"

चचा इरीम्या इज्रेल ने कहा—"ठीक है मेरे बच्चे, यह तो मैं देख ही रहा हूं कि तुम पर क्या-क्या गुजरी है। फिर भी मैं यह कहे बिना नहीं रह सकता कि शहरों की अजूबा बातें और तरह-तरह के आदमियों को न देखना अफ़सोस की बात है। मैंने कइयो से सुना है कि वहां आग उगलने वाली गाड़ियां चलती हैं। लोग वहां तीन और चार मंजिल के भी मकान बनाते हैं और वहां नगरों मे रात-दिन लोगों का ठट्ठ जमा रहता है, जैसे यहां सावनी के मेले के मौके पर होता है। पर मुझे इन सबको जानने की जरूरत भी क्या है। मैं तो बूढा हो ही चुका हूं। सुनो नीता, हम जो सब यहां बरांडी के बर्तन के आस पास इकट्ठा हुए हैं, उनमे तुम मैदानों से आये हो, मिखालेच पेस्कूरी प्रुतन्पार मे आया है, घियोर्घो बर्बा जब बच्चा ही था तब पहाडो मे इन हिस्सों में आया, और हम सब लोग जो इस रियासत मे रहते हैं और मेहनत करते हैं, हर कहीं से इकट्ठा हुए अजनबी यहां बस गये हैं।—क्योंकि यहां हमे कुछ ज्यादा जमीन और रहने के लिए कुछ ज्यादा जगह मिल गई है। मुझे ही लो, तुम देख रहे हो मैं बूढा आदमी हूं। कल या परसों. .कौन जाने मैं चल बसूं। भगवान की मर्जी थी, यहीं बस गया —क्योंकि उसकी लीला अपरम्पार है। और मेरे बच्चे, यह भी जान लो, मैं पहले यहूदी था, और एक दिन भगवान ने मुझे सपना दिया और मैं ईसाई हो गया और महात्मा ईसा को क्रास पर चढाने मे छिपे मुझे सत्तर साल हो गए हैं। मैं मोल्दाविया का हूं और मैं भगवान की मर्जी से तुम लोगो के साथ धरती के इस कोने मे रहता हूं।"

चचा नस्तास तेन्तो ने अपनी तीखी महीन आवाज मे कहा, "भाई इरीमिया, अब मुझी को लो—कहां से आया मैं? हूं' आज शनीचर की रात है। हम पी रहे हैं और बातें कर रहे हैं''कितने बरस हो गये

इस तरह हमें हर शनीवार को मिलते ? अभी यह लड़का नीता जवान है, पर एक दिन यह भी हमारी ही तरह बूढ़ा हो जायगा और तब जब यह दूसरों के साथ पियेगा तो हमें—आज के बूढ़ों को याद किया करेगा। बस, ऐसे ही हम वक्त गुज़ार देते हैं—हमेशा अपने लोगों के बीच क्योंकि न हमारे यहाँ कोई पादरी है और न कोई गिरजाघर। हम अकेलेपन की जिन्दगी बसर करते हुए गरीब लोग हैं।..."

घियोर्घो उर्बा अपना भारी सिर हिला कर हँसने लगा—

"नौजवान, यह यहूदी जब से मुझे याद पड़ता है, यूँही बोलता, बकता रहा है और बूढ़ा नश्ताश तो बोलता क्या है मिमियाता है। कभी एक बात, कभी दूसरी, पर होती हमेशा एक ही बात है। और एक बार जब बरांडी हमने पीली और बर्तन खाली हो गए तो हम जाकर, अपने बिस्तरों में सो जाते है। मैं पहाड़ों से आया हूँ, वहाँ जंगल है। क्या तुम लोगों ने हमारे जैसे जंगल देखे है ? हमारे जमींदार की ज़मीन के दस गुने से भी ज्यादा—दस गुना भी हमारे जंगलों का मुकाबला क्या करेगा ? ओह कितना बड़ा है जंगल, सुन्दर हरे रोआंदार पेड़ो का जंगल और उनके बीच से गुज़रने वाली हवा के झोकों की गरज—ओह उन्हें सुनकर बस यहाँ की सर्द हवा की गरज मालूम होती है। कैसी नई और दूसरी दुनियाँ है वहां। कौन जाने मैं एक दिन वहीं वापस लौट जाऊँ ?...न जाने कितनी बार मैं यह कह चुका हूँ। और मैं मालिक के चरवाहे की ही उम्र का हूँ पर आज तक अपनी जवानी के दिनों में रहने वाले इलाके में नहीं जा सका हूँ। मैं वहाँ जाना चाहता हूँ चाहे वहाँ जाकर मर ही क्यों न जाऊँ, सिर्फ मरने के लिए ही वहाँ जा सकता हूँ।

अलाव के आस-पास इन लोगो की बातें नीता लेपादतू बड़ी देर तक सुनता रहा। बीच-बीच में ब्रांडी का प्याला देने और पीने की बारी उसकी भी आ जाती थी और वह उस तरल ज्वाला के कुछ घूँट भर लिया करता था। जैसे वह पीता गया; धीरे-धीरे उस पर एक

मदिर खुमार छाता गया और उसमें एक गहरी कोमलता, सहृदयता की भावना बढ़ती गई—बढ़ती गई। थोड़ी देर में बोलने की आवाजें धीमी पड़ती गईं, बहुत ही धीमी और अन्त मे मवेशियो के बाड़े के नरकडों से गुजरने वाली हवा की धीमी धीमी फुसफुनाहट मे घुलमिल गईं।
दूसरे ही दिन, रविवार को, नीता लेपादटू ने जमींदार के मवेशियो मे अपना काम शुरु कर दिया। सांटू फलीवोग उसे विभिन्न बाड़ो मे ले गया और अपनी भद्दी-कडवी आवाज मे उसे जो कुछ काम करना था, उसके बारे मे हिदायतें दीं।
"मेरे बच्चे, ये हैं मवेशी जिनकी हम देखभाल करते हैं। इन बाड़े में दुधारू गायें हैं और उधर दूध न देने वाली, उसने आगे बछियां। देख ही रहे हो, सब मवेशी ढंग से बंधे हुए हैं। तुम दुधारू गउओ के जिम्मेदार होगे। तुम उन्हें बढ़िया-से-बढिया जगह मे चराने के लिए ले जाओगे—उन चरागाहों के पास, जहां घास अभी भी हरी है। वहां, जहां अभी भी ज्वार की कुछ खूंटियां शेष हैं।"
"बहुत अच्छा, हम दोनो चलेंगे, मुझे चलकर वह जगह जरा दिखा देना।"
"हम भी चलेंगे, हालाकि ये सभी चपरकनाती उन जगहो को जानते हैं।"
फिर उसने उन चपरकनातियो को सम्बोधित करते हुए कहा—"ओ, छोकरो, देखो मैं तुम्हारे लिए किसे लाया हूं! तुम इसका हुकुम मानोगे और हुक्मउदूली की तो फिर कान मले जायेंगे। चलो, सब चलें।" और वह चिल्लाया।
छोकरों ने बाडो के कुण्डे खोले और मवेशी एक के बाद दूसरा भीतर से बाहर निकलने लगा। उसमें कोई छोटा था, कोई बादामी, कोई लाल और सफेद, कोई पतला, कोई मोटा। छोकरे सीटीयां बजाते, आवाजें कसते, चाबुक फटकारते और मवेशियों को तालाब की तरफ खदेड़ते हुए चारो ओर दौडने लगे।

फौरन चारों ओर काली धूल की लहरें उठने लगीं और ऊपर फैल गईं।

फलीवोग बोला, "फिलहाल, तुम इस छोटे सुन्दर भूरे घोड़े को लो। तुम्हें एक बेंत मिलेगी, रस्सी का एक बण्डल और काठी के सहारे लटकता एक चाबुक। इन लड़कों की अच्छी खबर रखना, ताकि मालिक की दौलत बरबाद न हो जाय। .."

वे दोनों अपने घोड़ों पर सवार होकर झुंड के पीछे-पीछे चलने लगे। फलीवोग ने उसे सब हिदायतें और सलाह अपनी कर्कश आवाज मे दीं। कुछ देर बाद भौंहें तरेरते हुए उसने नौजवान से कहा,—"नीता, कल रात तुम बस बच ही गये..."

"क्यों ?"

"बस, यह मत पूछो। मैं अपनी हुक्मउदूली बरदाशत नहीं कर सकता।..."

"मैंने तुम्हारी कोई हुक्मउदूली नहीं की। तुम्हीं ने मुझसे अजीब वर्ताव किया था।"

"मैंने तुमसे अजीब वर्ताव किया ?" फलीवोग नीता की आंखो में अपनी आँखें ततेरते हुए चिल्लाया।

फिर मुंशी ने धीमे और बैठे गले से कहा कहा,—सुनो नौजवान, मैं तुम्हें कुछ अच्छी नसीहत करना चहता हूँ। तुम्हें मुझसे अच्छा वर्ताव करना चाहिए।"

तेजी से फलीवोग ने अपनी सफेद घोड़ी मोड़ी।

और चिल्लाया,—और मवेशियों की तरफ ध्यान रखना। अलविदा !"

उसने अपना चाबुक फटकारा और बड़ी तेजी से चलकर धूल के मोटे बादलों में छिप गया।

सड़क तालाब की ओर जाती थी। मवेशियों का झुण्ड धीरे-धीरे उतर रहा था। आगे की कुछ गायो के गले में बंधी घंटियाँ टुनटुना रही थीं। ताँबे के रंग जैसे बादलों के बीच से सूरज झाँक रहा था। तभी

हवा में लाल-सी रोशनी छितरी-सी लगी और फिर मद्धिम-सी रोशनी पहाड़ियों और घाटियों मे उमड़ने लगी। जमींदार का घर और झोंपड़ी पीछे छूट गईं। झील भी, जिसकी सतह पर बत्तखें अठखेलियां कर रहीं थीं, पीछे निकल गईं। कुछ देर बाद घंटियों की आवाज भी कानों से ओझल हो गई। मवेशी ठहर गये; उन्होंने अपनी गर्दनें फैलायीं और उस हरियाली भरी घाटी की भीगी-भीगी घास शान्तिपूर्वक चरने लगे। अपने भूरे छोटे घोड़े पर बैठा नीता लेपादतू झुंड के चारों ओर घूमा और जब छोकरों के पास से गुजरा तो उन्होंने उस पर गुस्से-भरी निगाहें फेंकी। कभी जब कोई गाय झुंड से इधर-उधर भटक जाती तो आवाजें उठतीं, उस ताजी सवेरे की हवा मे,—"हुई हुई चलो। इधर चलो!"

लेकिन हर प्रकार की आवाजें तेजी से खत्म हो जातीं और हरेक चीज को शांति ढक लेती। कभी-कभी एक छोटी घंटी बज उठती और गायें ताजा घास चरती धीमे-धीमे आगे बढ़ जातीं।

कभी कोई चिड़िया घाटी पर फैले आसमान को फलांगती उड़ जाती और अपने पीछे तीखी आवाज की सिर्फ एक लकीर सी खेंच जाती। कहां से आई वह? क्यों उस वीराने मे फिर रही है?

लेपादतू अपने घोड़े से कूद पड़ा और उसे एक ठूंठ से बांध दिया। फिर उसने उन छोकरों से बातों मे उलझने की कोशिश की। उसने हर गाय का नाम पूछा, उसकी आदतें पूछीं और छोकरे उसे एक से दूसरी के पास ले गये—उसके हरेक सवाल का जवाब भी देते गये। कुछ देर बाद उसने छोकरों के नाम-धाम पूछे, उनके मां-बापों के बारे मे पूछा। कुछेक के मां-बाप झोंपड़ियों में रहते थे और कुछ गरीब व अनाथ थे, जो रोटी के टुकड़े की तलाश मे किसी दूर गांव से इस ओर भटक आये थे।

नीता लेपादतू ने उनसे नरमी से सवालात पूछे और उनकी बातें सुनीं। उनकी बातों के सहारे उसने भी उस नए मुल्क के बारे में सोचा,

जिधर कि वह आ भटका था—और आने वाले दिनों में छिपी अपनी जिंदगी के बारे में भी उसका ख्याल दौड़ा।

: ३ :

अनावृष्टि के मौसम में परिवर्तन लाकर नवम्बर जा चुका था। नीता और उसके मवेशियों ने रियासत के दूर-दूर हिस्सों के कोने-कोने की छान-बीन कर मारी थी। अब वह रास्तों, झरनों, चरागाहों और झीलों से पूरी तरह परिचित हो गया था। लोगों के नाम, जानवरों के नाम और फलीबोग का गुस्से में बहकना और जमींदार की रुचि को भी भली भाँति समझ गया था। कभी-कभी वह घाटी में स्थित छोटे कारखाने में, जई का आटा लेने जाता था और शाम को अपने छोकरों और झोंपड़ी-निवासी कुछ लोगों की मदद से एक किस्म की माल्टा (जौ की शराब) बनाता था, जिसे वह जाड़े में गायों के थोड़े से खाने में मिला देता था।

इसे छोड़कर, उसकी जिन्दगी साधारण थी।

पर नीता को अच्छी तरह मालूम था कि शीघ्र ही जाड़े की बरसात होगी और फिर कुहरा पड़ेगा और तब शीत—भयानक बर्फीले तूफान। तब जिंदगी कठिन हो जायगी—हर किस्म के मौसम में मवेशियों के साथ बाहर फिरना या बाड़ों में छप्परदार छतों के नीचे रहना होगा।

अपने मवेशियों के झुंड के साथ आते-जाते वह लोगों को अपनी झोंपड़ियों में काम करते देखता—कभी छेद बन्द कर रहे हैं, तो कभी सड़ी गली छत सुधार रहे हैं।

जमींदार कभी उन्हें चैन न लेने देता था। चौबीसों घंटे हुक्म चलाता रहता—कभी यह करो, कभी वह करो।

जहाँ तक नीता पता लगा सका उसे यही पता चला कि यह नौजवान मालिक रियासत का पूरा काम खुद ही चलाता है। बड़े तड़के उठकर, इधर-उधर घूमना और रात घिरे तक जरा भी आराम न करना—बस एक छोटी सी गाड़ी में बैठा, जिसे दो छोटे घोड़े खींचते, वह पहाड़ियों पर चढ़ता, ढलानों पर उतरता, हल-जोतों का मुआयना करता, फिर भेड़ों के बाड़े में जा धमकता और फिर घुड़साल में—खलिहानों में न जाने कितने सवाल पूछता किसी के कसूर पर उसे धमकाता, नाराज होता और फिर खामोश हो जाता—जितनी जल्दी आया था उतनी ही जल्दी अपनी छोटी गाड़ी में बैठकर चला जाता। उसके चेहरे और चमकीली आँखों पर कोई भी पढ़ सकता था कि वह कितनी मेहनत और अटूट तमन्ना के साथ अपनी शक्ति के अनुसार काम करके धन बटोरना चाहता है।

नीता सोचता—"कितना ठीक कहा था चचा नदनाश ने, उसे इतनी जमीन और इतने धन का क्या करना है; क्यों चाहिए उसे यह सब?"

शान्त नवम्बर के शनिवार को एक दोपहर को नीता लेपादतू ने बूढ़े की झोंपड़ी में जाकर उससे मिलना तय किया। जिस दिन से वह यहाँ आया था, उस दिन के बाद से वह उसके घर नहीं जा सका था—सच तो यह था कि उसे एक मिनट की फुर्सत नहीं मिली थी।

बूढ़ा पछोरने वालों के छप्पर में था, सफेद कुत्ता बहुत जोर से भौंकने लगा और नीता के पैरों में लिपटने के लिए बेताब हो उठा। चचा नदनाश फौरन हाथ में लकड़ी और होठों पर गालियाँ लिए बाहर निकल आये।

"राम करे तू मर जाय! कोलुन! चल नीचे भाग यहाँ से।" और कुत्ता सिर नीचा किये गुर्राता हुआ छप्पर के पीछे की ओर चला गया। नौजवान अब उस बूढ़े के पास तक पहुँच गया। बूढ़ा उसे पास से पहिचान कर मुस्कराया और बोला—'ओदफोह! तुम! एक महीना हो गया होगा, कम-से-कम जब तुम पहली मर्तबा यहाँ आये थे। क्या

हाल है नीता ?"

नीता ने अपनी चमकीली लाठी नीचे रखते हुए और अपने सिर पर पड़े लबादे को ठीक करते हुए कहा—"अच्छा है !"

"फलीबोग से कैसी निभ रही है ?"

"खूब बढ़िया ! ......"

बूढ़ा हँसने लगा ।

"हुँः हुंः हा हा हा ! ठीक है, ठीक है ! मैं खूब समझता हूँ । वह तुम्हें अपने इशारो पर नचाना चाहता था । कोई फिक्र की बात नहीं । काम प्यारा होता है सबको ।.. सभी से पाला पड़ता रहता है जिन्दगी मे ।"

नीता चारों ओर देखकर बोला, "मैं काम-से-काम रखता हूँ और हमारी निभे जा रही है । लेकिन चचा, तुम अभी भी यह अनाज पछोर रहे हो ? नदी की तरह बढ़ता ही जा रहा है यह तो; खात्मे का नाम ही नहीं लेता ?"

बूढ़े ने गर्व से कहा, "हमारी जमीन ही ऐसी है । इस साल बहुत अच्छा रहा । हम काफी गाड़ियाँ लाद चुके हैं और पता नहीं कितनी और लादेंगे । न जाने जमींदार को कितनी रकम मिली है ? काफ़ी मुनाफ़ा होगा, बहुत काफ़ी । मैं पूछना चाहता था मालिक से एक दिन, पर सूखा के कारण, उनका चित्त ठिकाने नहीं था । इसलिए मैंने नहीं पूछा ।"

नीता बोला—"हलवाले के लिए सूखा बुरी चीज है ।"

"अरे ! बेटे ! सूखा तो सबके लिए खराब होता है । लेकिन किया क्या जाय इसके लिए ? मैंने तो जमींदार से भी यही कहा—मैंने कहा मिस्टर जार्ज, हम इसके बारे में कुछ नहीं कह सकते । यह तो सब ईश्वर की माया है । जब वह चाहेगा, तभी बारिश होगी ।..."

"उन्होंने क्या जवाब दिया ? क्या वह हँसे ?"

"नहीं, वह हँसे नहीं ।...उन्होंने सिर हिलाया और फिर अपनी कोठी में चिन्तित से चले गये । यही होता है । भले ही वह जमींदार हों, पर

वह निश्चिन्त होने का बहाना तो नहीं कर सकते ! खैर...चलो झोंपड़ी में चलें। .." बूढ़े ने कहा और उसे सिर हिलाकर घर चलने की दावत दी।

खलिहानों के बीच से रास्ता बनाकर वह चलने लगे। जमीन भरता और चरी के ढेरों से ढकी हुई थी। जैसे-जैसे वे आगे बढ़े हवा का शोर बढ़ा और पछोरने की भड़भड़ाहट मद्धिम होती गई। नीता ने देखा और महसूस किया कि मार्घियोलीता का सिर झोंपड़ी के दरवाजे मे एक पल के लिए झलका।

जब वे पास पहुँचे तो बूढ़ा चिल्लाया—"ओ, छोटी !" और चचा नड-ताश ने किंचित हास्य प्रदर्शित किया। "ओ मार्घियोलीता, तुझे सुनाई नहीं देता क्या ? जा, जाकर ताजा पानी ला ! शक्कर तो होगी ही घर में; है न ? देखो, वह प्यासा छोकरा था न, वह वापस आया है !"

और जब वह बांये हाथ मे बाल्टी और सीधे हाथ मे प्याला लेकर झोपड़ी से बाहर तेजी से निकली, तो लेपादतू हँसा।

"न तो मैं थका हूँ और न ही उतना प्यासा हूँ, जितना उस दिन था..." और फिर उसकी आंखों मे आंखें डालकर बोला, क्या हाल चाल हैं तुम्हारे ?"

मार्घियोलीता ने उत्तर दिया, "तुम्हारे विचार मे हाल-चाल कैसा होना चाहिए ? हमेशा अकेली और हमेशा काम !"

बूढ़ा बीच मे ही बोला, "अरे यह जमींदार के घर भी तो गई थी। वहाँ नन ने इसे केक बनाना सिखा दिया। उसने कुछ गुड़ भी इसे दिया। मार्घियोलीता दे न, इसे भी तो गुड़ और कुछ पानी, जैसे जमींदार लोग करते हैं .. "

लज्जित-सी हँसी के साथ नवयुवती ने अपने ब्लाउज मे रुमाल की एक मुड़ी-तुड़ी पुड़िया निकाल कर, सावधानी से उसे खोलकर गुड़ की कई डलियां चुनीं। कुछ उसने नीता को दीं कुछ अपने पिता को दीं। और फिर उनके बीच पानी की बाल्टी और पीने के लिए बर्तन रख दिया।

छोकरा झोंपड़ी के सामने बैठ गया और बूढ़ा मकई की कड़ब की बनी चटाई के ऊपर लेट गया। मार्ग्रियोलीता खड़ी थी और नीता ने गुड़ खाते-खाते गौर किया कि वह सफेद ब्लाउज़ पहिने थी, जिसकी बाहों और कालर पर फीता लगा था, बाल उसके संवारे हुए थे और चमक रहे थे। उसकी छोटी चोटियां ताज की तरह उसके सिर के चारों ओर लिपटीं थीं। उसे लगा जैसे पहले दिन से वह आज कुछ बड़ी हो गई है और उसकी कमर में लगी लाल पट्टी उसे सम्हाले हुए है।

उसने गर्मी के सूरज मे तपे उसके चेहरे की ओर देखा, मार्घियोलीता ने उसकी नजरों से बचना चाहा और अपनी कजी खूबसूरत आँखें कहीं और जमा दीं।

अपना बर्तन भरते हुए नीता ने कहा—"गुड़ में तुलसी की खुशबू आ रही है..."

लड़की मंद मुस्कराई। उसकी आँखें सिमट आईं और उनमें चमक छिटक आई।

चचा तेन्ता ने कहा, "अरे, क्या है ? इन छोकरियों को हर किस्म की जड़ी-बूटी अपने सीने में छिपाकर रखने की आदत है।"

"लेकिन पिताजी, तुलसी जड़ी-बूटी नहीं होती!" मार्घियोलीता ने तुरन्त उत्तर दिया।

उसने बर्तन और बाल्टी उठाई और तेजी से झोंपड़ी में चली गई कुछ देर दोनों ने उसकी यहाँ-से-वहाँ चलने-फिरने और चीजो की उठाधरी की आहटें सुनीं और वे सूरज की मद्धिम किरणों में बैठे-बैठे अपनी बातें करते रहे। लेकिन जब मार्घियोलीता को बूढ़े की तीखी महीन सी आवाज़ सुनाई नहीं दी, तो वह बाहर आकर नीता से कुछ दूरी पर बैठ गई, कुछ लज्जा और संकोच से, जैसा कि अक्सर नवयुवतियों की आदत होती है। चचा तेन्ता उठकर छोटे सूअरों की देखभाल को चले गये थे, जो अपने बाड़ो में चीख रहे थे। जब नीता ने देखा कि वह काफ़ी दूर निकल गए हैं तो वह मार्घियोलीता की तरफ मैत्री पूर्ण मुस्कान

बिखेर कर बोला, "कल मैंने खलियानों की ओर आने की सोची—और सौभाग्यवश आज मौसम बहुत सुहावना है।"
मार्वियोलीता ने उत्तर दिया "हाँ भला शीतकाल है! मैंने कुछ फूल लगाये थे जो अब खिलने वाले हैं।"
"कहाँ से मिल जाते हैं फूल तुम्हें? आसपास में तो कहीं दिखलाई नहीं पड़ते ."
"इस साल गर्मी में जमींदार जी के घर की जो कर्ताधर्ता हैं न, उन्होंने मुझे दो जड़ें दी थीं। उनके पास कुछ हैं उन्होंने मुझे पौद लगाना भी सिखाया कि उसे झाड़ी के पास कैसे लगाया जाय, जहाँ कि गोबर क्यारी में उन्हें घनी सूरज की रोशनी मिले। वह बड़े हो गये हैं और आज खूबसूरत हैं। जल्द ही उनमें फूल लगेंगे .."
एक क्षण के लिए उनकी आँखें मिलीं और वे मुस्कराये।
नीता बोला, "जहाँ से मैं आया हूँ, वहाँ फूल नहीं होते। वहाँ नीचे जो चक्की वाला है न, उसने मुझे बताया कि दूसरी जगहों पर फूलों से लदे पौदे और फूलों से गुलजार बड़े-बड़े बगीचे हैं। वह जर्मन है और सारी दुनियाँ घूम चुका है न जाने कितनी बातें जानता है वह! एक बार उसने मुझसे कहा कि वह कई बड़े शहरों में गया, इतने बड़े शहर कि पूरे दो दिनों में भी उनके आरपार न पहुँचा जा सके। उसने मिलों की बाबत भी बताया, जिनमें आग से चलने वाली मोटरें लगी हैं, जैसे कि हमारे जमींदार की पछोरने की मशीन है—बहुत बड़ी मिलें—पूरे देश की फसल को पीस डालने की ताकत रखने वाली। उसने रेलगाड़ियों के बारे में भी बताया .."
"ये क्या होती हैं?" मार्वियोलीता ने अचरज में भर कर पूछा।
"मैं नहीं जानता, पर मैंने लोगों को यह कहते सुना है कि वे एक किस्म की गाड़ियाँ होती हैं, जो मशीन से चलती हैं, चाहे बारिश या बर्फ पड़ रही हो ये बहुत तेजी से चलती हैं। अभी एक क्षण पहले यहाँ और दूसरे ही पल न जाने कहाँ, ओझल।

"कैसा अचरज है !" मार्घियोलीता भुनभुनाई, "बिलकुल परियों की कहानी की तरह... . यहाँ तो वैसी कोई चीज नहीं है ।"

"चक्की वाले के पास घड़ी भी है ।" नीता ने बात जोड़ी ।

पर मार्घियोलीता बीच में ही बोल पड़ी, "हमारे जमींदार जी के पास भी है । घर की मालकिन ने मुझे दिखलाई थी .."

"मैं भी दुनियाँ घूमना चाहता हूँ और ये सब चीजें देखना चाहता हूँ", नीता ने मुस्कराते हुए कहा ।

मार्घियोलीता विचार-निमग्न थी, कुछ बोली नहीं ।

शरद की वह दोपहर बहुत शान्त थी, मानो दीर्घ शान्ति दूर-दूर तक फैले भू-खण्ड को और उदास बना रही थी ।

सब प्रकार का शोर-गुल खामोश था । पड़ौस की झाड़ियों मे लम्बे मकड़ी के जाले चमक रहे थे । कभी-कभी मन्द समीरण उसके लम्बे चंदीले ताने-बाने को झुला देता था और ठहरी हुई वायु में वे घूम-घूम जाते थे । नीता और नवयुवती अकेले रह गये थे, झोंपड़ी के दरवाजे के सामने एक दूसरे के पास बैठे हुए । उन्होने बात-चीत बन्द करदी पर कोई रहस्य उन्हें एक दूसरे के पास खींचे ला रहा था । अचानक घूरे की पास की एक छोटी झाड़ी से नेवला निकला । आरक्त दिन की किरणों में भयाकुल वह ठहरा और फिर अपनी छोटी-छोटी काली आँखो से चारो ओर देखने लगा । उसके रोये इतने सफद थे कि शुद्ध-तम वर्फ की मद्धिम नीलाभ जैसे लग रहे थे । वह शीघ्र ही बर्छी की तरह विलुप्त हो गया । दोनो नौजवान और नवयुवती एक दूसरे की ओर मुड़े और मुस्कुराये—दोनों की मुस्कान एक-सी ही नरम थी ।

सूरज ढलने पर, अपने दिल में प्रेम की खिलती कली को लेकर नीता लेपादतू अपने मवेशियों के पास चला गया । उसने उनकी नाँदे देखीं, छोकरों की मदद से ज्वार और भूसा उनको दिया और स्त्रियाँ गायों को दुहने के लिए अपनी बाल्टियां ले आईं । झोंपड़ियो में लोग बत्तियाँ और आग जला रहे थे । तब शांति छा गई, धीरे-धीरे । ऊपर गहरा

नीला आकाश चंदोवे की तरह तना था, जिस पर बड़ी-बड़ी सोने की कीलें जड़ी थीं।

अपनी भेड़ की खाल की जाकट पहने, नीता नेपाइतू पीठ के बल अपने मवेशियों के पास भूसे के एक ढेर पर पड़ा हुआ था। वह आसमान की तरफ़ देख रहा था। उसने सितारे गिने और धीमे-धीमे बड़ों के नाम गुनगुनाये कि इन्हें उसने बड़े-बड़े आदमियों के बीच सुना था, जिनके साथ उसका बचपन बीता था। पहिले उसने खान पान के बारे में नहीं सोचा। उसे अपने अकेलेपन में मज़ा न आया। फिर कुछ ही क्षणों बाद उसे अपने पास अँधेरे में माघियोलीना की आँखें चमकती दिखाई दीं। उसने पलकें बन्द करलीं और ऐसा लगा जैसे स्वप्नों में वह उसके पास आ गई है। तब उसे समझ आई कि वह उसे चाहता है और उसे फिर देखने की इच्छा करता है।

उसने फिर अपनी जलती हुई आँखें खोलीं और आसमान की गहराई देखी और उसमें जगमग करने वाले तारों को देखा और चारों ओर देखता रहा और सुनता रहा मवेशियों के अपनी नांदों के पास चारा चबाने की आवाज़ के सिवा और कुछ भी सुनाई नहीं दिया। ज़मींदार का घर और झोंपड़ियां खामोशी में डूबी हुई थीं।

नीता खड़ा हो गया और चमड़े लगी बेल्ट को कसा। पीतल की मूठ-वाली मोटी लबादे के भीतर छिपाई, भेड़ की खाल वाली जाकेट को कंधों पर डाला और खलिहानों की ओर चल दिया।

मवेशियों की नांदों के पास जहाँ बूढ़े लोग रहते थे, उनकी झोंपड़ियों से अधिक दूरी पर नहीं, एक अलाव जल रहा था। वह उसी ओर बढ़ा और जब वह कुछ कदम रह गया तो उसने फलोरोग की कर्कश आवाज़ और चचा नदनाश की मिमियाती सी महीन आवाज़ साफ़-साफ़ सुनी। उसने ज़रा भी झिझक महसूस नहीं की और फौरन पहाड़ी के ऊपरी ओर चल दिया। जब तक उसे नाज के ढेर अँधेरे में न दिखाई देने लगे वह धीमा नहीं पड़ा। वह उसके पास से बड़ी सावधानी से दरवाज़े

पर पहुँचने के लिए घूमा ! पर बड़े सफेद कुत्ते को उसकी आहट लग गई और वह भयकरता से भौंकने लगा। वह उसकी ओर कूदा और इस तेजी से झपटा मानो उसे पछाड़ देना चाहता हो।

"कोल्तुन...ओ कोल्तुन !" नवयुवक ने कुछ प्यार भरे लहजे में उसे पुकारा।

परन्तु उस पशु को शान्त करने की कोशिश व्यर्थ थी। अपने को अपनी सोंटी से यथासंभव बचाते हुए वह कदम-कदम झोपड़ी की ओर बढ़ा।

पछोरने वाली मडैया से किसी की मोटी उनींदी आवाज आई "कौन है ?"

उसी समय मार्घियोलीता की स्पष्ट आवाज कुत्ते को पुकार रही थी। कोल्तुन का भौंकना फौरन रुक गया, पछोरने वाली मड़ैया में शान्ति छा गई और नीता चुपके-चुपके तेजी से झोंपड़ी की ओर बढ़ा।

"क्या तुम हो ?" लड़की ने पूछा।

नीता ने उत्तर नहीं दिया। उसके पास जाकर सामने रुक गया और उसके हाथ पकड़ लिए।

"मैं फौरन समझ गई थी कि कौन हो सकता है" लड़की ने फिर कहा। "क्यों आये हो तुम ?"

"मैंने सोचा...मैंने सोचा, चलो तुम्हें देख आऊं"—नीता ने हकलाती सी आवाज से कहा।

मार्घियोलीता की कमर में हाथ लिपटा, पर उसने कुछ नहीं कहा। नीता ने उसे अपने सीने से लगाते समय यह महसूस किया कि उसकी छाती में तुलसी की गंध आ रही है।

अचानक उसने धीमे स्वर मे कहा—"नहीं, दिन में आना, तब हम लोग बातें करेंगे। अब चले जाओ...पिताजी वापस आ रहे होंगे।"

नीता ने यह नही सोचा था कि वह उसकी बाहों में से इतनी आसानी से निकल जायगी। उसने तभी जाना जब वह निकल चुकी थी। उसने

झोंपड़ी के दरवाजे बन्द होने की और साँकल चढ़ाने की आवाज सुनी।
और कुत्ता पहले से भी अधिक क्रोध मे भौंकने लगा।

मड़ैया मे फिर एक उनींदी आवाज—"कौन है ?"

नीता जिस रास्ते से आया था, उसी से नीचे लौट पड़ा।

सोचा—"लड़की क्या गजब है। उसे सब मालूम है कि रात को कैसे बोलना बरतना चाहिए...मुझे यकीन है कि दरवाजा बन्द करते समय मुझे उसकी हँसी सुनाई दी थी।...सबसे पहले मेरी समझ मे कुत्ते से दोस्ती करनी चाहिए...और रही वह, सो ऐसा जान पड़ता है कि वह मुझे नापसन्द नहीं करती। उसे मालूम था न, कि मैं जल्द ही लौट कर आऊँगा..."

कह धीमे-धीमे अपने आप ही बतिया रहा था और नांदों के पास पहुँचते-पहुँचते उसके मुँह पर मुस्कराहट आगई।

उसने उल्लसित होकर सोचा—यह प्रेम है, यही प्रेम है और उसका रोम-रोम अनिवर्चनीय तन्तुओं से झंकृत हो उठा।

बिना यह जाने कि वह क्या कर रहा है, वह मवेशियो के पास अपनी जगह, घास के ढेर पर पहुँच गया। उसने फिर तारो की ओर ताका और गर्म माथे पर धीमे-धीमे तिर रही रात की सर्द हवा को भी महसूस किया।

कुछ दिनों बाद तीखी सी बारिश हुई, पहले ठहर-ठहर कर और फिर लगातार बारिश और कुहरे की घनी परतों की नाई शरदकालीन वर्षा आ गई। क्षितिज पर हर दिशा मे ऊँची-ऊँची भूरी दीवालें उठ खड़ी हुई थीं, शीत, और निरन्तर बूँदें बादलों की नीची छतों से गिर रही थीं; इमारतें भीग गई थीं, मवेशियों के बाड़े चुचुआते थे और उनकी नांदें सूनी पड़ी थीं। अघछी धरती अपनी सांसों मे पानी सोख लेती थी, फिर उसे उगल देती थी, जिस कारण बाड़ों और सड़कों पर आदमी और मवेशी कीचड़ मे लदर-पदर चलते थे। पूरे एक हफ्ते तक झोपड़ियों में रहने वाले मवेशियों के लिए बचाव के बाड़े बनाने मे मेहनत

करते रहे फिर नाँदों में खाना भी देने लगे। वहाँ मवेशी सुस्त से, सिर नीचा किये, उन छाये हुए छप्परों की छतों के नीचे एक दूसरे की ओर ताकते सहमे से खड़े थे। वह अपने भूसे मे मुँह डाले रहते थे। सर्द भाप सभी चीजों को अपने दामन मे छिपाये थी।

कोई भी अपनी झोंपड़ी को नहीं छोड़ता था। सभी मुख्यतः निरन्तर जलने वाले अलाव के पास बैठे अपने भीगे चीथड़ों को सुखाने की कोशिश करते रहते थे। कभी-कभी वह टाट के टुकड़ो को सिर पर रखे, फटी फटाई भेड़ की खाल की जूतियों को पहने बाहर निकलते, कीचड़ में गिरते-पड़ते और फिर जितनी जल्दी मुमकिन होता अपनी झोंपड़ियों में घुस जाते।

इस मौसम में फलीबोग हमेशा अधिक चुस्त रहता था। सफेद घोड़ी पर सिर और कंधे को लबादे से ढके वह हर जगह मौजूद होता और लोगों को काम पर जाने के लिए बलपूर्वक मजबूर करता। जमींदार को ऐसे मौसम से सख्त चिढ़ थी—अपने घर में उसे कोई काम न था। नाज और गरमी मे मोटे किये सुअरो को बेच ही चुका था। पूरे साल का हिसाब बन कर तैयार था। इसलिए, एक खुशनुमा दिन वह, नन और अपनी गृह-परिचारिका को विदा कहकर, फलीबोग और नौकरों को छोड़कर अपनी गाड़ी मँगा आनन्द की जिन्दगी बिताने के लिए निकल गया। उसके जाने के बाद आसमान से तगड़ी बारिश हुई और फलीबोग ने पानी से डूबे खेतों को देखकर सन्तोष की सांस लेकर कहा; "हमारे मालिक भाग्यवान हैं। सच, बहुत भाग्यवान!"

मालिक की गैरहाजिरी में रियासत के रोजमर्रा के काम में कोई तब्दीली नहीं हुई। खलिहान और मड़ैया खाना और कपड़ा और जो भी नौकर चाहिए था, उससे भरे पड़े थे ..और फलीबोग नमकहलाल और चौकन्ना नौकर—शिकारी कुत्ते के मानिन्द खूँखार था।

बरसात के भीगे, उदास और अकेले दिनों में नीता लेपादतू को अपने प्यार के बुखार को सहेजने का कम मौका मिला। वह दूसरी बार खलि-

हानों की ओर गया। झोंपड़ी कीचड़ में लदी-फंदी थी और उसका एक छोटा कमरा उदास और ठण्डा था।

मार्थियोलीता उसकी ओर मुस्कराई, पर खिड़की के शीशों को भेद कर पड़ने वाली रोशनी उसके चेहरे पर भूरी परछाई फेंक रही थी। पहले तो वह बुड्ढे से और उससे बात करता रहा, पर कुछ समय बाद, साँझ पड़ने पर तीनों खामोश हो गये—किसी को भी किसी से कुछ कहना बाकी न रह गया। गोधूली की उदासी झोंपड़ी पर छा गई और बारिश धीमे-धीमे मिट्टी की सपाट छत पर पडती रही—

लेपादतू अपने दिल में वसन्त के आगमन का अरमान छिपाए झोंपड़ी से बाहर आया। वहाँ से कुछ दूर तक मार्थियोलीता की आँखो ने उसका पीछा किया।

उसने अपनी रोयेदार टोपी पर लबादा रक्खा और सँभाल-सँभाल कर कदम रखता हुआ चल पड़ा। अपने विचारों में डूबा, वह खलिहानों में मवेशियों के बाड़े की ओर धीरे-धीरे उतरा।

तभी उसे शरद का वह दिन याद आया; जब उसने पहली बार यह महसूस किया था कि वह प्यार करने लगा है। भारी दुःख उमड आया और उसका दिल अतृप्ति की गहरी भावनाओं में डूब गया। ओह सच, सर्दी गरीबों के लिये, जो नेवले की तरह जमीन के नीचे रहते हैं, कितनी भयानक होती है।

ज्योंही वह बाडे के पास पहुँचा, उसने देखा कि उस बारिश में फ्लीवोग अपनी घोड़ी की पीठ पर बैठा उसका इन्तजार कर रहा था।

लबादा अपनी आँखों पर खींचते हुए नीता ने अपने आप ही बुदबुदाया —"इस वक्त वह क्या चाहता है?"

वह उसके पास से गुजर जाना चाहता था, पर फ्लीवोग ने उसे रोक कर अपनी कर्कश और बैठी हुई आवाज में कहा "इतनी जल्दी नहीं बरखुरदार, इतनी जल्दी नहीं। कहाँ से आ रहे हो भला?"

नीता को घोड़ी की थूथन अपनी कोहनी के पास जान पड़ी। उसने भूरे

रंग के मुड़ासे वाले लबादे को पहने फलीवोग जल्दी से नीचे उतरा और उसके पास आ गया।

उसकी बाँह पकड़ कर तीखे स्वर से पूछा—"कहाँ गये थे ?"

नीता ने झुँझला कर जवाब दिया, "छोड़ दो मुझे अकेला ! क्या चाहते हो तुम ? तुम क्या समझते हो और कोई काम है ही नहीं मुझे ?"

"पर तुम मवेशियो को अकेला छोड़ कर क्यों गये ?"

"अगर मैं उन्हें छोड़कर गया भी, तो जाने से पहले उन्हें ठीकठाक कर गया था।

"बरखुरदार, काफी अरसे से मैं तुम पर खार खाये था। देखो आज तुम मुझे ऐसे मौके पर मिले हो जब मैं आनन्दमग्न हूँ..."

"चचा साँदू, मुझे मालूम है तुम शुरू से ही मेरे खिलाफ़ हो...पर मैं उसके लिये कुछ नहीं कर सकता...मैं अपना काम करता हूं और तुम अपना काम करो......"

नीता ने दृढता पूर्वक कहा। वह बाड़ों में चला जाना चाहता था, पर फलीवोग ने सामने आकर उसकी बाँह पकड़ कर उसे जहाँ पर वह खड़ा उस ओर मुड़ने पर मजबूर किया।

वह तीखी आवाज से बोला—"ठहरो एक मिनट। जल्दी क्या है ?"

फुर्ती से नीता ने अपने हाथ को छुड़ा लिया।

फिर रोष से बोला—"चचा साँदू, तुम क्या चाहते हो ?"

फलीवोग की आँखें मानो माथे से निकली पड़ रही थी; वह चिल्लाया, "सुनो मैं यहाँ का मालिक हूँ, तुम्हे मुझसे सोच समझकर बोलना चाहिये। क्या तुम बता सकते हो कि बारिश इतनी क्यो है कि मैं इससे परेशान हो उठा हूँ ? और इतनी कीचड़ कि आदमी डूब जाय ? और मुझे इतनी चिन्ताएँ क्यो हैं कि मुझे फुर्सत नही यह सोचने की भी कि किधर मुड़ूँ। मैं अपना गुस्सा उतारना चाहता हूँ किसी पर। मैं अपना कोड़ा किसी के सिर पर फटकारना चाहता हूँ और आज मैंने तुम्हे मारने का तय किया है; समझे नीता लेपादतू !"

फलीवोग हँस रहा था। नीता की भौंहें सिकुड़ीं और अपने मुँड़ासे को कंधे पर फेंक कर वह दो कदम पीछे हट गया।

फलीवोग बोला—"क्यों, तुम खुश नहीं हो इससे? एक मिनट ठहरो, मैं तुम्हें अपने कोड़े से प्यार करना सिखा दूँगा..."

उसने अपनी घोड़ी की रास छोड़ दी, दो कदम पीछे हटा और अपने काले घोड़े का ढीला छोर हिलाया।

और फिर गरजा—"अगर तुमने मेरा सामना किया तो मैं मुर्गी के बच्चे की तरह दो हिस्सों में बांट दूँगा। मैंने भी जवानी में कुछ अच्छे काम किये हैं। मैं चाहता हूँ तुम भी दूसरों की तरह मुझसे डरो . कांपो, जब कभी फलीवोग का नाम सुनो!"

नीता आश्चर्य से चिल्लाया, "चचा नांदू, मैंने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है?"

फलीवोग ने अपना चाबुक फटकारा, पर लेपादतू तेजी से स्प्रिंग की नाईं ऊपर उछला, उसने उसका सीधा हाथ जकड़ा और पीठ पीछे ले जाकर मोड़ दिया।

वह उसका बांया हाथ, जिससे कि वह छूटने की कोशिश कर रहा था, थामे था; फिर उसे भी उसने दायें से मिलाकर चाबुक से सांदू के दोनों हाथ बांध दिये। तब गुस्से से हांफते हुए उसने उसे ज़मीन पर दे मारा और उसके ऊपर धम्म से बैठकर अपना पीतल का सोटा निकाल लिया।

फलीवोग ज़ोर-ज़ोर से सांस ले रहा था और उसकी आंखें भयानकता से इधर-उधर घूम रही थीं—गुस्से और घृणा से वह गालियां बक रहा था और उसके मुँह से बरांडी की बदबू आ रही थी।

नीता ने उनके ऊपर झुकते हुए, अधखुली आंखों से पूछा—"अब तुम क्या चाहते हो?"

उसके चमकदार पीतल के सोटे पर वर्षा की बूँदें चमकने लगीं।

सहसा फलीवोग डर से गुर्राया,—"नीता, मेरे बच्चे, मुझे जान से मत मार।"

लेपादतू कूद कर खड़ा हो गया। सोटी पीठ पीछे अपनी पेटी में खोंस

ली और उसके भावों में नरमाई आ गई, उसने फलीवोग को उठ कर खड़ा होने में मदद दी।

और शीघ्र ही बोला,—"चचा साँहू, मैं तुम्हें जान से नहीं मारना चाहता, मुझे तुमसे कुछ शिकायत नहीं। मैं यह अच्छा समझता हूँ कि यहाँ से काम छोड़कर कहीं और चला जाऊँ, क्योंकि तुमसे रोज़-रोज़ झगड़ा हो और न जाने मैं क्या कर गुज़रूँ ? यह लो अपना चाबुक और मुँडासा। सिर ढक लो, पानी बरस रहा है। घोडी पर चढ़कर अपने घर जाओ। और अब तुम यहाँ कभी मेरी सूरत न देखोगे।"

फलीवोग के चेहरे पर अनुराग के कुछ भाव आये और उसके मुँह से निकल पड़ा,—"क्या कह रहे हो तुम ? तुमने मुझे क्यों नहीं मार डाला अपनी छुरी से ? मैं तो समझा, तुम्हारे पास वह है ही नहीं...मैंने सोचा था कि तुम नस्तारा की बेटी से मिलने जाने के पहले उसे घर पर छोड़ गये होगे।"

"चचा साँहू मुझे अकेला छोड़ दो। मेरा दिल तुम्हारे जैसा नहीं है .."

उसने अपना मुँडासा आँखों के ऊपर खींचा और थोड़ी देर रुका—तय नहीं कर पाया कि वह बाड़ो की ओर जाय या सड़क पकड़ ले किसी नई अनिश्चित दिशा के लिए ..

फलीवोग ने उसकी ओर स्थिरता से देखा, मानो वह किसी शब्द या इशारे की प्रतीक्षा कर रहा था। उसने फिर नीता को बाहों में पकड़ लिया और उसे घूमने पर मजबूर करने लगा।

उसने और भी भर्राई आवाज़ में कहा,—"सुनो नीता, मत जाओ यहाँ से.. मैं चाहता हूँ कि हम दोनो मे सुलह रहे..."

नीता ने उसे देखा, एक हल्की सी मुस्कराहट होठो पर खेल गई।

फलीवोग चिल्लाया, "क्यों हँस रहे हो तुम ? तुम्हें मेरा यकीन नहीं ! मैं अपनी जवानी मे बड़ा ज़ालिम था...पता नहीं तुम्हारे खिलाफ मुझमें क्या भावना थी...इसीलिए मैंने तुम्हें नाराज़ कर दिया। पर ऐसा मालूम होता है कि तुम्हें अपनी ही तकलीफें बहुत हैं...इसलिए मैं

चाहता हूं कि हम दोनों सुलह कर लें ”
नीता ने झुंझला कर कहा,—“छोड़ो भी इन बातों को।” और वह जाने के लिए मुड़ा।
फलीवोग चिल्लाया—“मुझे गुस्सा मत दिला, छोकरे ! मैं चाहता हूं, सुलह हो जाय और इस खुशी में पीने का दौर चले।”
नीता का सीधा हाथ मजबूती से पकड़े वह उसे घसीटने की कोशिश करने लगा।
“मेरे साथ आओ।”
लेपादतू शान्ति पूर्वक उसके साथ चल दिया। वारिश अभी थमी नहीं थी—घुमड़-घुमड़ कर जारी थी और गौ-धूलि को अपनी धुंध मे डुबा रही थी।
किसी ने भी नहीं देखा सुना कि उन दो आदमियो के बीच क्या हुआ ? झोपड़ियो के निवासी अपनी खोहों मे घुस गये थे। यहां-वहां आग की मद्धिम-सी किरणें, फैले हुए अन्धकार की छाती को चीर कर, चमक जाती थी।
फलीवोग और नीता खिसकी हुई धरती पर धीरे-धीरे चल रहे थे।
सिर नीचा किये घोडी भी उनके पीछे-पीछे चल रही थी।
वे लोग खाली मवेशियो के बाडे के पास और एक झोपड़ी के नजदीक पहुंचे, जहां इन गंदीले घरों मे रहने वाले बूढ़े शनिवार की शाम को अक्सर इकट्ठे हुआ करते थे। यह भी शनिवार की सांझ थी, झोंपड़ो के भीतर रोशनी थी और काफी गर्मी भी। चरवाहा, धियोर्गी, बरबा, ईलिया इस्ट्रेल और मिग्नालेच प्रेन्कूरी अपना रात का भोजन समाप्त कर रहे थे। दो लड़के चूल्हे के पास अपने कपड़े सुखा रहे थे जिसमे कि आग जल रही थी।
फलीवोग ने एक ठोकर मे दरवाजा खोला और झोपड़ी के भीतर घुस गया। नीता लेपादतू उसके पीछे-पीछे था।
उसने एक दुबले-पतले लड़के से भर्राई आवाज मे कहा—“ए प्रेकूमर,

मेरी घोड़ी बाहर खड़ी है, उसे जाकर घर छोड़ आ और देख जना से कह देना कि वह एक मटका शराब लेकर यहाँ आ जाय। बस, जल्दी करो। इधर-उधर मत रह जाना..."

ग्रेकूसर अपनी जगह से छाया की तरह उठा और बाहर चला गया।

फिर अपने बुरे दाँत चमकाते हुए फलीवोग टूटी-सी आवाज़ में बोला—"बोलो तुम्हारा क्या ख़्याल है, मैं इस नौजवान की दावत करना चाहता हूँ..."

उसने नीता की पीठ थपथपाई।

"हममें कुछ कहा-सुनी हो गई थी," वह कहता गया—"पर अब सुलह हो गई है। है न लेपादतू ?,'

नीता ने कुछ नहीं कहा।

तो फलीवोग गुस्से में चिल्लाया—"नहीं बोलोगे तुम कुछ भी ? तुम मुझे अभी तक जान नही पाये हो...नहीं जानते मैं कितना ज़ालिम हूँ ...मैं कटखने कुत्ते की तरह हूँ बिल्कुल...बस यह जान लो मैं सीधे को को नहीं काटता। नीता वहाँ बेंच पर बैठ जाओ, आग के पास और मुँड़ासा उतार दो !"

मुंशी साँदू ने लेपादतू का सफेद लबादा खींचा, अपना भी भूरा लबादा उतारा और नौजवान को जबरदस्ती बेंच पर बिठा दिया और खुद चूल्हे के पास पड़ी एक नीची तिपाई पर बैठ गया।

फिर हँसी में उसने पूछना शुरू किया—"चचा इज्द्रेल, क्या नया समाचार है ? मैं तो इस बारिश से तंग आ गया हूँ, भगवान बचाए इससे। ऐसा लगता है जैसे घने कुहरे में फँस गया हूँ और यहाँ दम घुट रहा है। यहाँ झोंपड़ी में तो अच्छा लगता है। आज की शाम तो मैं कुछ पीना चाहता हूँ।"

चचा इज्द्रेल ने भी मुस्करा कर जवाब दिया—"बारिश तो भगवान् भेजता है, हम इसके लिए क्या कर सकते हैं ? और रही तुम्हारी पीने की बात, सो तुम्हारे चाहने पर तुम्हें क्या नहीं मिलता ?

"ठीक-ठीक, मैं अभी अपने को खूब मस्त करूँगा, पर मैं इस नौजवान को कुछ जगाना चाहता हूँ। नीता, तुम कुछ बोलो भाई!"

"मैं क्या बोलूँ? मैं तुम लोगों की बातचीत सुन रहा हूँ..." "अच्छा, पर लगता ऐसा है जैसे तुम्हें कुछ सन्देह हो रहा है ..खैर कोई बात नहीं!"

उसने जोर की साँस ली, मानो उसकी छाती पर बोझ रखा हो, और फिर अपने चारो ओर देखा।

"चचा बरखा, अपनी बाँसुरी निकालो और इसे कुछ भिगो लो। क्योंकि तुम जानते हो तभी तुम मेरे लिए कोई धुन बजा सकते हो..."

सरखा ने मोटी आवाज में, जिस कोने में वह बैठा था, वहीं से कहा—"क्यों नहीं, बड़ी खुशी से।"

और फिर कुछ देर के लिए सब शान्त हो गये।

फनीबोग मिट्टी के फर्श की पड़ताल कर रहा हो, ऐसा लग रहा था। अचानक उसने अपना सिर उठाया और अपनी चमकीली आँखें दरवाजे पर गड़ा दीं।

"आगई जना!" उसने शक्तिशाली आवाज में पूछा।

दरवाजा खुला और एक चौड़ी व मजबूत गहरे रंग के चेहरे और घनी भौहों वाली स्त्री ने प्रवेश किया। उसने बारिश से बचने के लिए जो बोरी ऊपर तान रखी थी, उसे उतारा और वहाँ इकट्ठे लोगों को देखा और हँसी और फिर कूल्हों पर कलाइयाँ रख कर फनीबोग की ओर मुड़ी।

"क्या बात है जो ऐसे चोंच चिल्ला रहे हो?" वह मर्दानी आवाज में बोली—"मैं खड़ी हूँ और अपने साथ मटका भी लाई हूँ..."

ग्रेकूनर भीतर मटका लिये आया और फनीजोग झटपट मिट्टी के प्यालों में शराब उँडेलने लगा और दूसरों को भी अपने आप लेने की दावत देने लगा।

फिर खुशी से कहा—"अरसा हुआ कि हमने यहाँ शराब देखी है। यह

काफी पुरानी शराब है। मैंने सवेनी के एक यहूदी से ली थी। देखो, मैं अपना प्याला उठाकर जना के लिए पी रहा हूँ, क्योंकि हम एक दूसरे के बहुत पुराने चाहने वाले हैं। यह मेरे साथ सारी दुनियाँ घूमी है...और मैं नीता लेपादतू को तन्दुरुस्ती के लिए पी रहा हूँ, ताकि वह मेरा दिल अच्छी तरह पहचान सके...चलो चचा बरवा, बाँसुरी तैयार है न?"

उसने एक ही घूँट में अपना प्याला खाली करके जना के हाथों मे थमा दिया।

दूसरे लोगों ने भी जाम लिये। लेपादतू ने भी पी। फलीवोग उसे तीखी नज़रों से देखता रहा और बरवा एक पहाड़ी धुन बजाने लगा।

धुन समाप्त करते हुए उसने कहा—"पहाड़ी प्रदेशों में बाँसुरी की धुन कुछ और ही-सी लगती है। यहाँ मुरली बजाओ तो ऐसा लगता है कि घाटियाँ और दर्रे जवाब में धुन बजा रहे हैं..."

मुंशी सांडू चिल्लाया—"बरवा तुम क्या कर रहे हो? जना से पूछो, यह बताएगी कि उसका इस बारे में क्या ख्याल है.. कभी-कभी हम पहाड़ों में आवारों की तरह फिरा करते थे।"

"हाँ, हमने काफी दुनिया घूमी है," जना, जैसे सपना देख रही हो, मानो, ऐसे उत्तर दिया मीठी और आग की गरमी के पास सरक आई।

"यह सच है"—फलीवोग कहता गया, "जब कभी मैं सोचता हूँ कि हमने घोड़े की पीठ पर किन-किन जंगलों और मैदानों की खाक छानी है; तो ..कैसा खतरनाक काम कर रहे थे हम लोग उस समय..."

मुंशी मुस्कराया, मानो स्मृतियों के उभार में उसे रस आ गया हो।

एक बार फिर जाम भरे गये और सभी ने पी। चूल्हे में चमकने वाली लपटों की रोशनी में फलीवोग की आँखें वहशी की नाईं दमदमा रही थीं। हाथ में जाम लिए खड़ा होकर वह अपनी भद्दी आवाज़ में गाने लगा—

सुनो जना, जना, जना इधर आओ,
आओ और आकर मेरा बिस्तर बिछाओ।

वहाँ जहाँ तीन या चार सड़कें मिलती हैं,
तहखाने के पास, दलदल के ऊपर।
जब टोंटी खुलने की आवाज आयगी,
और सुन्दर लाल शराब बहेगी.....।

"याद है न तुम्हें वे नज़ारे" उसने कहा। उसका चेहरा अजीब तरह से दमदमा रहा था। "जब मैंने तुम्हें अपने साथ सारी दुनियाँ घूमने के लिए कहा था, तब यही गीत तो गाया था,...और जना, तुमने कैसे-कैसे मुझे तड़पाया! मेरा दिल तुम्हारे प्यार और मायूसी में कितना कज्जल-काला था और वह इली रागजी, जो यह गीत गाया करता था, जो मैंने तुम्हारे लिए बनाया था—मैं तुम्हारी तरफ निहारता था और तुम न जाने किस ओर देखती थीं—

वह कमनीय सुन्दरी जिसे मैं प्यार करता था,
अपने पूरे हृदय की कोमलता से और सचाई से....
अपने दुख के बोझ को डुबाने के लिए,
बस पीना, जी भरके पीना ही सबसे अच्छी बात थी...
और मैंने एक दिन पी, दो दिन पी।
और चालीस दिन पीता ही रहा..........

... ...

और मैं अपने सुन्दर भूरे घोड़े को बेच कर पी गया
बिना सुन्दर शराब का सही स्वाद जाने . .."

फलोबोग की आँखें अपनी पत्नी पर जमी थीं। उसकी आवाज़ धीमी थी। वह शब्दों को घसीट रहा था मानो गाना उसके बस की बात न हो। उसने शराब का एक और मग बड़ी हौज से उतारा और फिर नीना लेपादत्तू की ओर मुड़ा।

"ओह नीना, मेरे दोस्त! देख रहे हो इन आँखों को तुम? जब मैं जवान था तो इसी के साथ मिल कर चोरी करता था। काश, तुम जान पाते कि हमने कितनी नदियाँ पार कीं, किन जंगलों में घूमे और किन

वीरानों में भटके...अब तो मैं उन सबको भूल गया हूँ। हम द्रोन्नोग्या में, वन में और प्रुत से भी दूर गये हैं...पहाड़ों पर चढ़े और घाटियों में उतरे हैं, किसे मालूम हमने कितने घोड़े चुराये और उनकी अच्छी नस्लें तैयार कीं। एक बार मैं सजा भी काट चुका हूँ' पर मैं भाग निकला और जना हमेशा मेरी तलाश में रहती थी, फिर खोज भी लेती थी और अब, अब तो मैं ईमानदार और वफ़ादार नौकर हो गया हूँ। लेकिन तुम्हें अब भी नही मालूम कि मैं कौन हूँ ? कभी-कभी मेरे दिल मे हुड़क उठती है और फिर मैं कहीं चल देना चाहता हूँ। तब मैं जना की ओर देखता हूँ और पीता हूँ...और जना की आँखें मुझसे कहती हैं—'आओ !' मेरी हड्डियाँ शरीर में भारी होने लगती हैं और कहती हैं 'यही ठहरो' !"

सोचने का कोई अवसर नहीं,
आह, जानने का भी अवसर नही।
कभी कही अन्त है
मेरी इस तड़पती इच्छा का ?

"बरबा कुछ और धुन बजाओ...मेरा दिल भारी हो रहा है और मुझे लग रहा है जैसे जना की आँखें फिर कह रही हैं 'आओ !'

स्त्री मुस्कराई और अलाव की रोशनी में और भी चमक उठी। उसके चेहरे पर सुन्दरता के चिन्ह अब भी थे और आँखों में भी उन्माद की परछाइयाँ। उसने अपने पति की ओर ताका और सम्पूर्ण भूतकाल मानो स्मृति में उमड़ आया—मूर्खताओं और अमानवीय भावावेशों का भूतकाल।

करबा की बाँसुरी एकबार फिर झोंपड़ी में गूँज उठी, लेकिन उसमें एक वेदना थी; मानो प्रुत के पूरे फैले मैदान वहाँ बिखर गये हैं और हेमन्त की नीलमा चारों ओर छितर रही है और अनन्त का वह आकर्षक गीत हर दिशा में छितरा रहा है।

जना ने अपनी बाँह से एक आँसू पोंछा और फिर उसकी गहरी आँखें शराब की ओर से कहीं दूरी की ओर ताकने लगीं। फिर सहसा वह

हँस पड़ी।

कुछ ही क्षणों बाद फलीबोग ने भारी आवाज में कहा—"नीना, मेरे साथ एक और मग पिओ....तुम मजबूत आदमी हो ..तुम शायद उन हिस्सों में रहे हो जहाँ गिरजे हैं, पादरी हैं। तुम्हारा दिल भिन्न है ..तुम जानते हो दया और मित्र-भाव किसे कहते हैं मैं इन बारे में कोरा हूँ।"

काफी देर हो गई थी, जब वे झोंपड़ी की गरमाहट छोड़ कर शीतभरी रात में बाहर निकले। बूढ़े अपने सोने की तैयारी में लग गये। सिर्फ धियोर्ग बरवा ने अपना लबादा लपेटे हुए यह निश्चय किया कि वह जमींदार के बैलों और उनके रखवारे छोकरों पर एक बार नजर तो डाल ले।

नीना लेपादतू और फलीबोग साथ-साथ चल रहे थे, जना उनके आगे थी। कारिन्दा बोली—"जना, घर जाओ और जाकर सो जाओ। मैं घोड़ा लेकर चक्कर लगाने जाऊँगा....देर नहीं लगेगी।"

स्त्री अन्धेरे में विलुप्त हो गई। फलीबोग अपनी घोड़ी ले गया। फिर बोला—"नीना, मेरे बच्चे, तुम जाकर अपना घोड़ा ले आओ और मेरे साथ चलो।"

वे नीचे गायों के बाड़े में गये और नीना अपना घोड़ा ले आया। फिर वह उसी बरसात में, शीतल और हृदयहीन बरसात में, जो अभी तक थमी नहीं थी, साथ-साथ चल पड़े।

काफी दूर तक वे दोनों एक दूसरे के बराबर-बराबर चलते रहे।

नीना उन जगहों को पहिचान भी नहीं पा रहा था, जहाँ से वे गुजर रहे थे। लेकिन कारिन्दा अपने घोड़े को रास्ता बताने में वैसे ही था जैसे कोई और दिन के चाँदने में करे, कोई भी तो गलती उससे नहीं हो रही थी।

कुछ देर बाद वह बोला—"आज रात मैंने कुछ ज्यादा पीली...पर फिर भी रियासत का चप्पा-चप्पा याद है।"

उन्होंने सब बाड़ों को देखा-भाला। फिर वे तालाब के किनारे गये,

चक्की के पास से गुजरे, भेड़ों के बाड़ों में गये, फिर रियासत की उत्तरी सीमा के पास पहुँचे। जब वे इक्का-दुक्का झोपड़ियों के करीब से निकले तो वे कुत्ते गुर्राये जो पानी में लेट रहे थे। इसके सिवा खेत नंगे और वीरान थे। सिर्फ दो आदमी एक काली दीवाल मे धँसे चले जा रहे थे, जो जैसे-जैसे वह आगे बढ़ रहे थे, वैसे-वैसे दूर होती चली जा रही थी।

लौटते समय फलीवोग बुड़बुड़ाया—"यही ठीक मौसम है, मैं इसे खूब जानता हूँ, दो या तीन आदमी आएँ और वढ़िया मवेशियों को हाँक ले जायँ, अगर उनकी रखवाली ढंग से न की जाय।"

खलिहानों और ओसारों को वापस लौटते हुए उसने भद्दी आवाज में पुकारा और पहरेदार ने ऊँघता-सा जवाव दिया।

कुत्ते अपने मालिकों की ही तरह ऊँघते से एक दो बार भोंके। उसके बाद रात की गहरी होती परछाइयों ने इन्हें डस लिया।

काफी देर बाद वे जमींदार के घर के आगे आकर खड़े हुए।

फलीवोग फुसफुसाया—"नन भी सो गई है—मालिक के घर में अकेली है ..हिसाब-किताव रखने वाला बूढ़ा है, इसलिए कानो पर टोपा चढ़ाकर जल्दी ही सो जाता है। अगर रियासत में आग लग जाय या बाढ़ आ जाय, तो इन्हें तो पता भी न चले। जमींदार न जाने कहाँ और कितनी दूरी पर ऐश उड़ा रहे हैं—क्या मालूम विदेश में हो। और यहाँ फलीवोग जैसा चोर उनकी सम्पत्ति की रक्षा कर रहा है। नीता, देखो कैसी-कैसी अजीव चीजें होती रहती हैं इस दुनियाँ में।...पर... छोड़ो . अच्छा फिर मिलेंगे, जाओ और आराम करो जाकर।"

लेपादतू ने अपना घोड़ा रोका।

"चचा साँदू, एक पल रुको।" वह वोला

"क्या वात है?"

"चचा साँदू, जो कुछ हुआ उसके लिए मुझे माफ़ कर दो।"

"सुनो नीता"—फलीवोग ने मुस्कराते हुए कहा, "तुम सचमुच नेक

आदमी हो—फरिश्ता ! जाओ, सोओ जाकर और उन खलिहानों में रहने वाली उस लड़की के सपने देखो ..”

कारिन्दा अन्धकार में छिप गया। लेवादतू घोड़े से उतरा और उसे अस्तबल की ओर ले चला। फिर उसने मवेशियों के पास ही अपना बिस्तर लगाया। सोटी निकालकर सिर के नीचे रख ली और अपने को भेड़ की खाल से ढक लिया। वह पड़ा-पड़ा सोचने लगा; फनीवोग के वचनों और व्यवहार पर कुछ शंकित हुआ और बड़ी देर तक सोने से पहले इसी उधेड़बुन में लगा रहा। कुछ देर बाद उसका ध्यान चचा नदनाश की पुत्री की ओर चला गया। वह उसे बहुत दूर दिखाई पड़ी: अस्थिर पानी पर काँपती-सी, शीत कालीन कुहरे में घिरी और आने वाले शीतकाल की हवाओं में लिपटी-सी।

नींद आने से पहले उसने अन्धकार को चीरकर आनेवाली, कई अजनबी चिड़ियों की शोक-भरी आवाजें सुनीं।

: ४ :

सप्ताह के अन्त मे बरसात खत्म हो गई थी, पर मौसम भीगा ही रहा। क्षितिज पर भारी-भारी कुहरा छाया रहता था। सूरज के कभी दर्शन नहीं होते थे, जान पड़ता था किसी दूसरी दुनियां को रोशनी देने किसी दूसरे आकाश में चला गया था। जमींदार के घर के आस-पास, उन झोपड़ियो मे रहने वाले लोग घोड़ों पर चढ़कर मवेशियो को पानी पिलाने जाते थे।

खलिहानों और मड़ैयो मे नौकर-चाकर बड़ी मुश्किल से आते-जाते थे। उनके कपड़े हवा की नमी मे भीग जाते थे। सिर्फ फनीवोग का गुल-गपाड़ा हर कोने मे गूँजता रहता था। और उसकी सफेद घोड़ी कीचड़ भरी गलियो और पटरियों पर फुदकती रहती थी।

नीता लेपादतू ने एक पूरा दिन कपड़े बनाने वाली मड़ैया में बिताया, क्योंकि उसे अपने लिए तथा अपने नीचे काम करने वाले लड़कों के लिए ईजेला से सुअर की खाल की जूतियां लेनी थी और भेड़ की खालों की जाकटों की मरम्मत करवानी थी। जूतियाँ और जाकटें एक दूसरे के ऊपर छत तक रखी हुई थीं और उनमें से चमड़े की अजीब गंध आ रही थी। दोनों आदमी सूखे-फर्श पर खड़े थे और चौड़े खुले किवाड़ के पार दूर पर फैले भूरे वातायन को देख रहे थे।

इजेला, जो बूढ़ा और गेहुएँ रंग का खानाबदोश था जिसकी सफेद मूछें और दाढ़ी थीं पालथी मारे बैठा था और धीरे-धीरे बातें कर रहा था, जब कि उसकी सुईं एक भेड़ की खाल के किनारे पर चल रही थी।

वह बोला—"मेरे बच्चे, अपने नौजवान मालिक के पिता योर्दाश मालिक के जमाने में मैं एक गुलाम था। उन दिनों हम और नीचे मोल्दोवा के किनारे बसे हुए थे और दूसरी रियासत में काम करते थे। तब गुलामों के लिए "अलग मुंशी होते थे जो हमें कोड़े मार-मार कर तब तक काम करवाते थे जब तक कि हमारे हाथ-पाँव हिलाने-डुलाने से इंकार नहीं कर देते थे......

नीता ने कहा—"मैंने सुना है कि उस इलाके में बहुतेरे गाँव हैं और काफी पास-पास है।"

"हाँ, वहाँ नीचे सब कुछ भिन्न है। हर आदमी का अपना-अपना घर होता है और एक बागीचा भी। पुराने जमाने में यहाँ तातारियों का राज था—ऐसा वह चक्की वाला आन्तोन कहता है..."

"क्या हमारे जमींदार का बाप बहुत अमीर था?" नीता ने पूछा।

उसने अपने काम से सिर हटाकर उसकी ओर देखकर हामी भरी।

"बहुत अमीर! जमीन, मवेशी, सैकड़ों नौकर-चाकर और घर तो उनके तुम देख ही चुके हो...ऐद्रामेनी में बड़ा और खूबसूरत...पुराने मालिक के पांच बेटे थे और चार बेटियाँ। उन्होंने हर एक को दहेज मे एक-

एक रियासत दे दी। ओफ, कैसी खूबी से पहले मालिक रियासतों का इन्तजाम करते थे ..वह भारी शरीर के थे, भारी-भारी मूछें . सब उससे डरते थे। मेदाम प्रोफीरा भी थर-थर काँपती थी, जब कभी पुराने मालिक को गुस्सा आता था। योर्दाश मालिक ने एन्रामेनी में निकुलाई नामक एक अल्वानी कारिन्दा के तौर पर रक्खा हुआ था। वह बहुत ही मेहनती था, पर स्वभाव का खराब था। अपने फलीवोग से मिलता-जुलता ही समझो! यह अल्वानी निकुलाई भी अपनी जवानी में लुटेरा था। उसे कठिन मशक्कती कैद भी मिल चुकी थी। जमींदार ने उसे छुड़वाकर अपनी रियासत में रख लिया, जिससे कि लोग उससे हमेशा डरते रहें। क्योंकि, तुम जानो, नौकर तो उन दिनों भी सुस्ती दिखलाते ही थे...।"

वह खुले दरवाजे के पार देख रहा था, मानो कुहरे के भीतर से अपनी पुरानी स्मृतियाँ कान से बुला रहा हो और लेपादतू एक तेज चाकू से अपनी चप्पलों के लिए पट्टी काट रहा था।

इजेला ने आगे बताना शुरू किया—"जमींदार के आखिरी बेटे यह हमारे मालिक, जार्ज हैं; मैंने इन्हें गोदी मे खिलाया है, कहानियाँ सुनाई हैं, घोड़े पर चढ़ना सिखाया है...पर तब मैं भी जवान था। अब वह बड़े हो गये हैं और मैं सिर्फ एक बूढ़ा इन्सान रह गया हूं। पर वह मुझे भूले नहीं हैं और अब भी मेरी पूछ-ताछ करते रहते हैं। बस, यह अफसोस है कि वह इस रेगिस्तान में अपनी जवानी बर्बाद कर रहे हैं। वह नौजवान हैं और नौजवानी के खास तकाजे होते हैं, अधिकार होते हैं ..यहाँ हम अकेले में रहते हैं—दुनियाँ से अलग-अलग, अपने लिए मुझे खूब मालूम है कि मैं कल या परसो, सदियो पुराने फर बेंचने वालो या खानाबदोशो से जाकर मिल जाऊंगा, पर वह जमींदार हैं और फिर जवान . उन्हे कुछ और भी चाहिए...उन्हें दूसरी तरह की जिंदगी चाहिए वही उन्हे फबेगी . ।"

बाहर दरवाजे के पास पैरों की हल्की आहट और स्त्रियों की आवाजें

सुनाई दे रही थीं।

इजेला ने, मानो अपनी इच्छा के प्रतिकूल, कुछ क्रुद्ध-सा होकर पूछा, "कौन है ?"

दोनो ने एक ही प्रकार की भावभंगिमा के साथ देखा।

अपने कपड़ों की गर्द झाड़कर नन और तेन्त की बेटी मार्घियोलीता ने मड़ैया में प्रवेश किया। उनके पीछे आन्तोन भारी कदमों से, मुँह में पाइप दवाये और अपनी पुरानी गन्दी टोपी ओढ़े, घुसा। उसकी बड़ी दाढ़ी, मुट्ठी भर लाल और सफेद धागे मानो मिल गये हों, ऐसा लग रहा था।

इजेला बुड़बुड़ाया—"उफ, जो खामी महफ़िल जुड़ गई ...।"

नन ने फौरन सिर हिलाया—"दिन मुबारक ! कैसी गुजर रही है ?"

इजेला अपनी दाढ़ी में ही भुनभुनाया—'मैं आपके हाथ चूमता हूँ।'

अब नीता बोला—"देख ही रही हैं आप, हम लोग जाड़ो के लिए तैयारी कर रहे हैं।"

वह मुस्कराया और फिर उसने मार्घियोलीता की ओर देखा। अन्तोन ने अपना पाइप मुँह के एक कोने से निकालकर दूसरे में दबाया और फिर भेड़ों की खाल के ढेर पर बैठ गया। वह अपने आप ही कुछ बुड़-बुड़ा रहा था।

इजेला ने हँसते हुए और उसकी ओर सिर हिलाते हुए कहा—

"गूट वोर्गा, जूट वोर्गा," अर्थात् दिन मुबारक।

जर्मन भी मुस्कराया और पाइप मुँह से निकाल दिया। वह रूमानियन भाषा मुश्किल से बोल पाता था।

"इजेला, क्या कर रहे हो तुम ?"

"क्या ख्याल है तुम्हारा; मैं क्या कर रहा हूँ मिस्टर आसन्तोन ? मैं खालें सी रहा हूँ।"

"अच्छा, वहुत अच्छा ?" आन्तोन ने दाद देते हुए कहा और फिर पाइप होटो में दबा लिया।

नन बीच मे अपनी तिरछी आवाज में बोली—"चचा इज्ञेला, यहाँ तो लोमड़ी की कई फरें होंगी, जो मिस्टर आन्तोन लाये थे...।"
आन्तोन ने हामी भरी—"जरूर, जरूर !"
इज्ञेला ने उत्तर दिया—"हाँ हैं तो और मैंने उनकी कायदे के मुताबिक देखभाल की है—क्या आप खूबसूरत कोट बनवाना चाहती हैं ?"
आन्तोन भेड़ों की खाल के ढेर पर बैठा-बैठा ही भुनभुनाया—"हमने लोमड़ी को मारा था।"
इज्ञेला ने फौरन ही कहा—"ठीक है, तुमने लोमड़ियों को मारा और मैंने फरों को कमाया !"
"अच्छा, अच्छा !" आन्तोन, अपना पाइप सँभालते हुए बोला।
चचा इज्ञेला ने वह कोट जिसे वह सी रहे थे, एक ओर रख दिया और कुछ उकताते-से खड़े हो गए। फिर वह मड़ैया के एक कोने में जाकर अंधेरे में जोर से उठा-पटक, खोज-खलोल करने लगे और फिर लोमड़ियो की फरें ले आये। रोशनी मे लाकर उसने फरों को नन के सामने फैला दिया। गोधूलि भरी साँझ की रोशनी मे उनका बादामी और चंदीला रंग निखर उठा।
इज्ञेला ने धीमे स्वर में कहा—"वे अच्छे पशु थे।"
नन ने सिर हिलाते हुए कहा—"तुम इन्हें कोठी पर लाओ।" और एक उल्टी रखी बाल्टी पर बैठ गई। मार्घियोलीता उसके पास खड़ी थी। उसका भूरा शाल उसके कंधे पर पड़ा था और बाल काले रूमाल से ढके हुए थे।
आन्तोन कुछ सोच रहा था। अचानक, मानो उसका पाइप बोल रहा हो, वह भर्राया—"मेरा ख्याल है अगर मालिक शादी करलें तो खूब रहेगा।"
"क्या, शादी ?" इज्ञेला ने आश्चर्य में पूछा।
नन हँसी से खिलखिला उठी—"ठीक, मिस्टर आन्तोन का यही विचार है। बरसात से पहले यह अपने जमींदार के शहर मे औजार खरीदते

समय थे...।"

आन्तोन—"हम वोतोश्नी गया था !"

"हाँ, वोतोश्नी तक, वे दूसरे जमींदारों से मिलने गये थे और मिस्टर आन्तोन ने सब देखा और सुना...और समझा कि हमारे मालिक शादी करने वाले हैं।..."

नन के पीले चेहरे और काली आँखों में उथल-पुथल की छाया झलकी और चिन्ता काँपती दिखाई दी।

इजेला ने फर समेटते हुए कहा—"अगर ठीक समझो, तो यह भी बताओ, शादी हो किससे रही है ?"

आन्तोन गुर्राया—"बोल बड़ा जमींदार है...नाम है मास्टरयोन्स्कू, वालेनी में बड़ी रियासत है...पाँच हजार एकड़ जंगल...और अकेली बेटी..."

"तब तो यह वहीं होंगे, जो मेरे जमाने में एव्रामोनी में हमारे जमींदार से मिलने आया करते थे। मैं उन्हें जानता हूँ। मैं उनकी बेटी को भी जानता हूँ, तब वह बहुत छोटी थी—खूबसूरत बालों वाली नन्हीं-सी ! वह मिस्टर योन्स्कू की पोती है।

नन ने अपनी आँखें नीची करते हुए गुनगुनाया—"तो, यह सच है; और तुम यह भी जानते हो कि वह कौन है ?"

इजेला प्रसन्नता से कहता गया—"हाँ, क्यों नहीं जानता ? मैं उन्हें जरूर जानता हूँ। मिस्टर योन्स्कू काफी बूढ़े हो गए होंगे और उनकी पत्नी; वह शायद मर गईं।"

आन्तोन कुड़कुड़ाया—"ठीक, ठीक ! बूढ़ी बेगम जिन्दा नहीं हैं। लेकिन नौजवानी में पगी वह मिस, फूल की मानिन्द सुन्दर और मीठी है .।"

"इसका मतलब है...इसका मतलब है अब हमें मालकिन मिल जायगी", नन ने अजीब मुस्कराहट के साथ कहा और नीता लेपादतू की ओर तिरछी दृष्टि से देखा।

नीता ऐसे चौंका मानो उस दृष्टि ने उसे जला दिया हो। यह तो किसी

और बात के बारे सोच रहा था।
मार्घियोलीता नरमाई मे बोली—
"मुझे बड़ी खुशी है कि हमे मालकिन मिलेगी!"
नन ने उसकी ओर घूरते हुए पूछा—"भला क्यों है ?"
"मुझे नहीं मालूम ..पर मेरा ख्याल है कि मालकिन के आने के बाद यहाँ की रंगत बदलेगी।"
इजेला ने भी इस बात का समर्थन किया, वह बोला—"इसमें कोई शक नहीं कि यहाँ चीज़ों मे परिवर्तन होगा। उनके जैसी नई मालकिन ! उन्हें खूबसूरत और अच्छे नस्ल के घोड़ों से भरा अस्तबल बहुत पसन्द है...और देखना हमारे जमींदार उन्हें खुश करने को पेड़ और फूल लगायेंगे।"
"बिलकुल ठीक", आन्तोन ने शांत स्वर से कहा, "मैं गाड़ी पर रोग़न करूँगा।"
इज़ेला ने प्रसन्न होकर नन से कहा—"देखा, यह बात हुई।"
नन ने कुछ झुँझलाकर प्रश्न किया—"लेकिन अगर वह भले ढंग से पली नवयुवती हुई तो इस रेगिस्तान में कैसे रह सकेगी ? और फिर यहाँ कौन रह सकता है ? न पार्टियाँ, न संगीत, न थियेटर, कुछ भी नहीं, जैसा बड़े कस्बों मे होता है। मैं जानती हूँ, अच्छी तरह से। मैं दूसरी जगहो पर रह चुकी हूँ। मैं याशी मे रह चुकी हूँ।"
सभी आश्चर्य चकित उसकी बातें सुन रहे थे।
मार्घियोलीता, अचानक सपनों मे डूबी-सी, धीमे से बोली—"हाँ, ऐसा ही होगा।"
नन बोली—
"ऐसा ही होता है मैं भी न जाने यहाँ आकर कैसे अपने को सम्हाल पाई और बस सकी !"
उसकी कुटिल मुस्कान आनन्दपूर्ण हास्य में बदल गई और उसने एक बार लेपादतू की ओर देखा।

"तुम-नीता, तुम क्या सोचते हो इस बारे में ?"
"मैं क्या सोचूँ तुम्हीं बताओ ? अगर वे दोनों सचमुच एक दूसरे से प्रेम करते हैं तो वह कहीं भी खुश रहेंगे, यहाँ भी।"
नन बड़ी देर तक उसके चेहरे को ताकती रही, मानो वह अपनी आँखें उसके चेहरे से हटाना ही न चाहती हो।
मार्थियोलीता शीघ्रता से मुड़ी और उसकी छाया में छिपा चेहरा उस घर के भीतर न जाने क्या देखने लगा, जिसमें कितनी ही चीजें अटी हुई रखी थीं। उसने अपना मुँह रूमाल से ढक लिया था और आहों को रोक-सी रही थी। नन स्प्रिंग की तरह अपने पैरों पर उछली।
"अच्छा चचा इज़ेला ! तुम फरों को लेकर कोठी पर मेरे पास आओगे ......पर पहिले इन्हें किसी चीज में लपेट लेना।"
इज़ेला ने काम छोडते हुए शीघ्रता से कहा—"अच्छा, अब मैं चलूँगा।"
"और नीता, तुम आज शाम या कल सवेरे मेरे पास आना। मुझे तुमसे कुछ काम है।"
नीता ने उसकी ओर अचरज-भरी दृष्टि से देखकर कहा, "अच्छा।"
आन्तोन उठ खड़ा हुआ—"मैं जाकर मिल चलाता हूँ .." वह बुड़बुड़ाया —"मैं यहाँ आया, पाइप पिया, कुछ बातें की और अब चला।"
नन ने मार्थियोलीता से पूछा—"तुम नहीं चल रही हो ?"
युवती ने सहसा मुड़ कर देखा और बोली—"नहीं, मैं घर जा रही हूँ। पिता इन्तजार कर रहे होंगे..."
"अच्छा, पर कल कोठी आने की कोशिश करना।"
नन ने अपना पीला चेहरा और काली आँखें प्रकाश की ओर फेरीं और शीघ्रता से एक विशिष्ट शालीनता के साथ चल दी। चचा इज़ेला ने लोमड़ियों की फरें पीठ पर लादीं और उसके पीछे बेमन से और बोझे से अत्यधिक झुके हुए चल पड़े।
और अपने आप ही बुड़बुड़ाये—"हुँ, मुझे फलीबोग को ढूँढ कर उसे लोमड़ियो वाली बात बता देनी चाहिए......क्योंकि अगर मैंने उससे

ने कहा और उसे पता चल गया, तो वह मुझसे बहुत नाराज होगा।...''
आन्तोन भी कुछ ध्यानमग्न दृष्टिगोचर हो रहा था। वह अपने आप ही कुछ कह रहा था, जो किसी को भी सुनाई नहीं पड़ रहा था। अपने पाइप की कोर वह दाँतों से काटे जा रहा था और अन्त में वह वहाँ से अपने भारी बूटों को घसीटता हुआ चल पड़ा। पर दरवाजे तक पहुँचते-पहुँचते वह फिर मुड़ा और थकी जबान से बोला—"नीता लेपादत्तू, तुम क्या कर रहे हो ?..... आओ मेरी चक्की पर चलो। हम बातचीत करेंगे। बीवी मेरी मर चुकी है......अकेला हूँ......बड़ी कोफ्त रहती है तबीयत मे। अच्छा फिर मिलेंगे।"
और वह पाइप का धुआँ उड़ाता चला गया।
छप्पर मे सदा की नाईं मौन वातावरण भर गया, जिससे धुंधली रोशनी और भी बढ़ती हुई प्रतीत हो रही थी।
नीता तुरन्त अपनी जगह से उठा और मार्घियोलीता के पास पहुँचा। उसकी ओर मृदुल मुस्कराते हुए उसने उसका हाथ अपने हाथ में लेना चाहा। मार्घियोलीता ने आँखों को ढकने वाले अपने रूमाल को हटाया और चेहरे पर से घूँघट हटा लिया। वह पीछे हटी और सहमी-सी उसकी ओर देखने लगी।
फिर तीव्रता से प्रार्थना भरे स्वर में बोली—"कोठी पर मत जाना।"
उसके हाथ निस्तेज से अपने स्थान पर ही थे और वह उसकी ओर प्रश्नवाचक ढंग से घूरता रहा—
"पर क्यों, बात क्या है ?"
मार्घियोलीता की आँखों में आँसू चमक आये।
"मत जाना नीता—मैं अब समझी हूँ कि उस नन के मन में क्या है ? मत जाना..."
"पर मार्घियोयीता, आखिर मामला क्या है ? तुम इतनी परेशान क्यों हो ?"
युवती ने उसकी ओर प्यार और क्रोध की मिश्रित दृष्टि से देखा।

वह बाँहें बढ़ाये उसके करीब आई। नीता समझ नहीं पाया कि बात क्या है, पर जब उसकी कँपकँपी काफी निकट आई तो नीता का वदन थरथरा उठा। उसने उसे अपनी बाहों में भर लिया और वह निरन्तर शिथिलता से अपने को छुड़ाने के लिए संघर्ष कर रही थी कि नीता ने उसे समेट कर चूम लिया।"

"तुम नहीं जाओगे ? नहीं जाओगे न ?" वह धीरे-धीरे जैसे-तैसे विकृत स्वर में फुसफुसाई—"आज शाम झोंपड़ी में आना... ..मैं पिता जी को वहाँ से भेजने का जतन कर लूँगी। हम कुछ बातें करेंगे......"

सहसा वह चल पड़ी। बाहर पैरों की चाप सुनाई दी और उन्हें नन की तीखी आवाज सुनाई पड़ी।

"मार्घियोलीता ! यहाँ आओ।......क्या वहाँ हो मार्घियोलीता ?"

फिर कुछ नरमी से बोली—चचा इजेला, मेरे लिए इन्तजार न करो; तुम चलो, मैं फौरन पहुँचती हूँ।"

"युवती लेपादतू के आलिंगन से मुक्त हुई और अपने चेहरे पर रूमाल ढक लिया। घृणा की एक रेखा उसके चेहरे पर गहरी हो गई। दरवाजे की ओर बढ़ते-बढ़ते वह शीघ्रता से फुसफुसाई—"तुम आज जरूर आओगे प्यारे..."

नीता अकेला रह गया स्तम्भित-सा। छप्पर के फर्श पर जूतियों के ढेर के पास भेड़ों की खालों पर वह बैठ गया। उसने चाकू और सूई उठाई और फिर काम करना शुरू कर दिया, पर सब बेकार...

उसकी आँखों के सामने चकाचौंध मचाती वह झोंपड़ी उभर आई, जहाँ मार्घियोलीता उसका इन्तजार कर रही होगी।

चचा इजेला ने आकर देखा, वह सपनों में डूबा हुआ, शून्य में ताक रहा है।

जब वह उससे बोले तो नीता चौंक पड़ा।

"मैं जमींदार की कोठी पर गया था। काश, तुम नन का कमरा देख पाते ! बड़े कीमती गलीचे ..पर क्या बात है छोकरे ! तेरी तो हालत

आपे में नहीं दिखाई पड़ती ?"

नीता ने मुस्काते हुए उत्तर दिया—"कुछ भी तो बात नहीं चचा, मैं तो कुछ सोच रहा था ....."

बूढ़ा जैसे सब कुछ समझ गया हो, इस तर्ज से हँसा।

"मैं जानता हूँ, तुम किसके बारे मे सोच रहे हो बेटा ! जब मैं तुम्हारी उम्र का था न, तब मैं भी तुम्हारी ही तरह सोचा करता था..."

"पर चचा, तुम जो समझ रहे हो, मैं वह नहीं सोच रहा था।"

"हाँ, हाँ, पर मैं तुम्हारे चेहरे को देखकर ही भाँप सकता हूँ। खैर, मुझे इससे क्या सरोकार ? मैं खुद ही अपने बारे में सोच रहा था, अपनी ही परेशानियो के बारे मे .."

बूढ़ा एक बार फिर के ऊपर झुका और अपनी नाक से एक धुन गुनगुनाने लगा। चन्द मिनट के बाद अपनी आवाज ऊँची की—स्वर गम्भीर और दुःखपूर्ण था—"इन बातों की ओर कोई ध्यान न देना बेटे—यह तो दुखी मन का एक गीत है।"

उनकी आँखें एक दूसरे से मिलीं और दोनों खिलखिलाकर हँस पड़े। फिर दोनों ने बाहर फैले हुए कुहरे से ढके उदास खेतों की ओर देखा। जहाँ तक नीता समझता था, मार्घियोलीता आम लड़कियो की तरह न थी। उसका प्रेम घना और तीव्र था और ऐसा लगता था मानो इसी कारण इसकी बुद्धि भी तीखी हो गई थी। कभी-कभी रात को जब वह उसके पास जाता था और बूढ़ा घर पर नहीं होता था, तो आलिंगनों के उपरान्त उसकी तबियत को मचली-सी आने लगती थी। मार्घियोलीता एक लैम्प जला कर अलाव के पास रख देती थी और बातो-ही बातो मे उससे नाना प्रकार के सवाल पूछने लगती थी, जो उनके जीवन में उठ सकते थे।

एक बार उसने कहा—"मैं सोचती हूँ कि बसन्त में हमे जमींदार से मिलना चाहिए और उनसे कहना चाहिए कि हम दोनों शादी करना चाहते हैं।... हम उनसे अपनी गृहस्थी बसाने के लिए मदद मांगेंगे—

और सुन्दर सा घर, जहाँ के बारे में हमने इतना सुना है..."

लेपादतू इन विचारों को सोच-सोच कर आश्चर्य करता, पर वे उसे बुरे नहीं लगते थे।

"और शादी ठीक ढंग से होगी—गिरजाघर में, पादरी के द्वारा। यहाँ के लोग तो ये सब सब बातें जैसे भूल ही गए हैं।"

और नीता सहमत होता—"तुम ठीक कहती हो। हमें भगवान् के सामने सच्चे ईसाई की तरह शादी करनी चाहिए। हमें रजिस्ट्रार के दफ्तर में भी जाना पड़ेगा।"

मार्घियोलीता ने विचारों में डूबे-डूबे ही कहा—"अगर जाना ज़रूरी हो, तो हम जायेंगे ही।"

एक और दिन, जब वे अलग-अलग हो रहे थे, नीता को कुछ याद आया और हँसने लगा। बोला—"यह बताओ मार्घियोलीता, उस दिन चचा के घर पर क्या बात थी जो तुम मुझसे जमींदार की कोठी पर न जाने के लिए विनती कर रही थीं?"

"क्या तुम गये थे?"

"गया तो नहीं, पर मुझे ताज्जुब हुआ। लगा जैसे तुम उस नन से घृणा करती हो। पर तुम उसके पास जाती रहती हो और वह तुम्हारी कुशलता भी चाहती है।

"ओह कुछ नहीं, कोई बात नहीं थी। बस मेरी सनक थी।"

"हो सकता है मेरे न जाने से वह झुँझला गई हो। मेरा ख्याल है कुछ बात जरूर थी .."

मार्घियोलीता उत्फुल्ल होकर हँसी और अपना चेहरा युवक की छाती में दुबका लिया।

"अगर वह झुँझलाई भी होगी, तो अब बात आई-गई हो गई। भूल जाओ अब उस नन के बारे में।"

अपने मवेशियो के पास लौटते हुए नीता ने सोचा—"यह छोकरी बड़ी तेज है। क्यों मुझे यह जब-तब चिढ़ाती है और डावाँडोल रखती है?

पर मैं क्या करूँ, विवश हूँ। वह जानती है कि मैं उसे प्यार करता हूँ, इसीलिए वह ..."

कुछ समय के बाद उत्तर से ठंडी हवा बही और बादलों तथा कुहरे को उड़ा कर ले गई और कमज़ोर-सा पीला सूरज चमकने लगा।

पानी और कीचड़ के गड़े पुर हो गये। एक सांझ; जो सूर्यास्त की कनेरी आभा से अनुप्राणित थी और बरफ से लदे-फँदे भागी बादलो मे चारों ओर से आच्छादित थी वर्फ से जमीं झीलो से एक तूफान उमड़ा और बर्फ की पहली पर्तों को बिखेरने लगा।

शीतकाल वर्फ के तूफानों के साथ आगे बढ़ रहा था।

रात को फलीब्रोग नीता के अस्तवल मे आया और सदैव की नाईं बोला —"सर्दी हमेशा की तरह नहीं शुरु हुई है—लक्षण बुरे हैं, दोस्त!"

युवक ने उत्तर दिया—"हां, सर्दियो में हमेशा मुश्किल रहती है। पर हम कर ही क्या सकते हैं। यह तो भगवान की मर्जी है...।"

"क्या तुम्हारे पास अच्छी भेड़ की खाल की जाकट है? क्या तुम्हारे सुअर की खाल वाले जूते काफी मजबूत है? इस सर्दी से लड़ना तो बड़ा ही मुश्किल रहेगा।"

"पर किया क्या जा सकता है!" नीता ने हँस कर कहा।

फलीब्रोग दूसरे अस्तवलो की ओर चला गया।

जमींदार की कोठी के आस-पास की बस्ती और भी घनी हो उठी। गड़-रिये अपनी भेड़ों को वहाँ ले आये और विभिन्न वाड़ों मे बांट दिया। मवेशी अस्तवलों में भर दिये गये।

सर्दी के डर के कारण जमींदार का सब माल एक ही स्थान पर एकत्रित हो गया। ऐसा लगता था जैसे हानिकारक हवा की पहली सांस ने ही सब को हिला दिया हो। लोग सर्दी की इस पहली सांझ को जोर से बातें करते थे, एक दूसरे को पुकारते थे, चीखते थे और कुत्तों पर नाराज होते थे।

नीता ने अपना कोट उलट लिया था, फर बाहर की ओर करली थी।

वह मवेशियों की लम्बी कतारों में घूमा और यह निश्चय किया कि किसी को भी कुछ नहीं चाहिए। फिर सीटी देकर अपने उस कुत्ते को पुकारा, जो उसके नीचे काम करने वाले छोकरों ने उसे दिया था।

"ए सरमान् तुम्हारे पास जाड़े के लिये कोट है?" उसने कुत्ते की थूथड़ी और गर्दन थपथपाते हुए कहा।

कुत्ते का काला कोट बर्फ के फुहारों के बीच चमक उठा। नीता कुछ देर विचारों में खोया सा खड़ा रहा और दूर अँधेरे में ताकता रहा। जब वह विभिन्न ज़मींदार के मवेशियो के पास रहता था और जहाँ तक उसकी स्मृति उसे पीछे ले जाने मे समर्थ हो सकती थी, उसे भली प्रकार याद था कि शीत-ऋतु के पहले झोके उसकी आत्मा को एक अजीब बेचैनी से भर देते थे—जैसे कोई चुभने वाला बोझ ऊपर आ पड़ा हो—मानों घृणा की चक्की चलने लगी हो, जो कोई अजानी दुनियाँ उसके ऊपर आकर छा देती थी।

वह कुत्ते से बोला—"चलो अब घर चलें।"

कंधे पर बोझ डाले और चंद कदम चलते हुए कुत्ते के साथ नीता बर्फ के उड़ते टुकड़ों के बीच आगे बढ़ गया।

सिर्फ लोगो के घरों के झरोखों से धीमी रोशनी टिमटिमाती दिखाई पड़ रही थी।

वह बूढ़े आदमी की झोंपड़ी में घुसा और आग के पास पड़ी बेंच पर बैठ गया। कुत्ता उसके पैरो के पास लेट गया। नवयुवक कुछ देर बैठे-बैठे सोचता रहा। कभी-कभी कोई बर्फ से लदा थका नौकर या गड़रिया अन्दर आता, पाइप पीता और चला जाया। बूढ़े आदमी आपस में एक भविष्य के बारे में अजीब-सी धारणा करते हुए बातें करते, अपने जीवन में आये पिछले कठिनतम जाड़ों की चर्चा कर रहे थे। ऐसा लगता था मानों वे युद्धों अथवा अन्य उसी प्रकार के दुर्भाग्यों की चर्चा कर रहे हों। जब वे बातें करते-करते रुकते, बाहर भयंकर तूफान की प्रबल गर्जना सुनाई पड़ती। चिमनी की राह से आये तेज़ हवा के झोंके लैम्प की

थरथराती रोशनी को और भी प्रकम्पित कर जाते थे।

दूसरे दिन तूफान शान्त हुआ, पर बर्फ दूसरे दिन और दूसरी रात तक गिरती रही। आखिरी पर्त गिर जाने के बाद जाड़ा और भी तेज हो गया। झोंपड़ियों मे रहने वाले अपने घरों से निकले मानो पृथ्वी की गहराइयों से निकले हों और गहरी फैली बर्फ पर राह-रास्ते तलाश करने लगे।

झोंपड़ियों की छतों से धुआं सीधी लकीर जैसा निकला और शोर तथा आवाजें ऐसे गूंजने लगीं जैसे मोटे शीशे की छत के नीचे गूंजती थी। फनीबोग और लेपादतू सर्दी के लिए एकत्र भूसे और लकडी के ढेर को देखने पहुंचे। वहां पर नौकर निरन्तर अपनी स्लेज गाड़ियां भर-भर कर ढो रहे थे। भेड़ें बसाई गई थीं उन बाडों के आस-पास। गड़रिये बर्फ के ढेर साफ कर रहे थे। दूर क्षितिज के पार तक सफेदी का बेदाग राज्य फैला हुआ था। एक परछाईं समय-समय पर उतरती और पृथ्वी पर आकर लुप्त हो जाती। यह कौओं का जलूस था जो चमकदार सफ़ेद बर्फीली पर्त पर चलते-चलते काले धब्बों के समान था।

: ५ :

सेंट निकोलस के दिन से दो दिन पहले दोपहर के लगभग, पहाड़ियों की चोटी से खलिहानों की तरफ आती हुई स्लेज घंटियों की रुनुन-झुनुन सुनी जा सकती थी। बारूद-गाडी की नाईं अफ़वाह चारों ओर फैल गई—जमींदार जार्ज एन्रामीन् वापस आ रहे हैं। सभी दिशाओं से झोंपड़ियों के रहने वाले चींटी की नाईं दृष्टिगोचर हुए। यहां तक कि औरतें और नंगे पैर बच्चे भी अपनी सुरक्षा की जगह से देखने के

लिए धकियाते हुए अपनी गर्दनें बाहर की ओर लम्बी निकाल कर आगे बढ़े।

सच ही, मालिक चार घोड़ों वाली स्लेज से, जो प्रसन्नतापूर्वक रुनुन-झुनुन कर रही थी, वापस आ रहे थे। फलीबोग और जना अपनी झोंपड़ी की देहलीज पर साफ़ कोट पहने दिखाई दिये और ज़मींदार की कोठी पर उनसे मिलने चल दिये।

कारिन्दा की बीबी प्रसंसात्मक ढंग से चिल्लाई—"ओह साँडू, मैंने ऐसी बढ़िया स्लेज कभी नहीं देखी।"

फलीबोग खिलखिलाते हुए बोला—"चुप रहो। स्लेज के भीतर कुछ और भी बढ़िया चीज है..."

"क्या है ?"

"बिल्कुल सच है। मैं तुमसे लम्बा हूँ और मेरी गर्दन लम्बी है। पंजों के बल खड़ी होकर खुद ही देखलो..."

"अरे, साँडू, यह तो वही है, जो हमारी मालकिन बनेगी...कितनी सुन्दर युवती है !"

मिस्टर जार्ज अपने देश लौट आये थे और साथ में उनकी पत्नी और बड़े जमींदार योन्सकू राजू भी थे।

फलीबोग फुसफुसाया—"तो जना, आखिर हम जो कहते थे, वह सच ही था। कौन जाने अब क्या हो ?"

जना अपने पुरुष की ओर मुड़ी और उसकी ओर तिरछी निगाहों से घूर कर देखा—

"तुम ऐसा क्यों कहते हो साँडू ?"

"अरे जना, वह कबूतरी शहर की चिड़िया है। देखना एक-न-एक दिन वह मालिक को इस रेगिस्तान से बाहर ले जाकर दम लेगी।"

जना ने कोई उत्तर नहीं दिया। उसने अपनी जलती आँखें स्लेज पर, जो धीरे-धीरे आगे आ रही थी, जमा दीं और फर में लिपटी नवयुवती का गुलाबी चेहरा बहुत गौर से देखा और पढ़ा।

फ़िर वह शरमाई से फुसफुसाई—"जल्द ही हमें इसका असली रूप देखने को मिल जायगा।"

स्लेज लट्ठो से बने मकान की सीढ़ियों के पास आगई । खिड़कियों पर पड़े सफ़ेद पर्दे हटे, मानों पलकें गिरी हों, उठी हों और फिर गिरी हों। और अन्त में द्वार खुला और अपने फर-कोट में नन्हीं-सी लग रही नन देहलीज पर आई। उसने आगन्तुक को उसके नरम् चेहरे पर एक हँसी गड़ाये देखा। सभी दिशाओं से गाँव वाले झुंडों में चले आ रहे थे और अपनी टोपियाँ हाथो मे लिए स्लेज के चारों ओर इकट्ठा हो रहे थे।

सबसे पहले मिस्टर जार्ज फर और कोटों के ढेर से मुक्त हुए। वह तेजी से जमीन पर, अपने चमचमाते चेहरे पर प्रसन्न मुस्कान लिए कूदे। फिर भारी और मोटे तथा सफेद मूँछ और काली भोहों वाले बूढ़े जमींदार उतरे। और अन्त में मिस्टर जार्ज की बाहों की मदद से वह सुन्दर बालों वाली नवयुवती नीचे उतरी—वह एक तितली से भी हल्की थी। एक सफेद टोपी उसकी एक आँख पर आई हुई थी और उसके कपोल सेमूर से भली प्रकार ढके हुए थे।

वे घर में घुसे। आदर से झुककर नन उनके पीछे-पीछे होली। बाहर नौकर और गांव के लोग आदर प्रकट करते हुए खड़े थे। वह स्लेज, घोड़ों और कोचवान को, जो अपने नीले फर के अस्तर वाले कोट और सिर पर सेमूर की टोपी लगाये इधर-उधर फिर रहा था, देख रहे थे। और जब गाड़ी अस्तबल की ओर मुड़ गई, तो भी वह थोड़ी देर वहीं खड़े आपस में जमींदारों और उन खुशनुमा-अजूबा देशो की बात करते रहे, जहां से ऐसे प्रसन्न और खूब हृष्टपुष्ट अच्छी तरह पले-पुसे लोग आये थे। यह सभी कुछ सूरज की किरणों के समान था। मानो राजा उनकी गंदुम जिंदगी में वापस आ गया हो।

जब वे जमींदार लोग फिर बाहर आये तो वे कीचड़ की बनी झोंपड़ियों मे रहने वाले लोग दो कतारों मे खड़े थे और उनको प्रशंसात्मक ध्यान से देख रहे थे। जमींदार लोगों के कपोल लाल थे और वे बड़ी प्रफुल्ल

अवस्था में थे। मिस्टर जार्ज अपनी प्रजा के पास आये और मुस्करा कर बोले—

"भलेमानुसो, ये तुम्हारी मालकिन हैं।"

उन्होंने दो सुन्दर नैनो की ओर देखा, जो उसके चेहरे पर दमक रही थीं, मानो वह किसी अमूल्य चीज की ओर देख रहे हों।

अनेक आवाजों ने उत्तर दिया—"भगवान् इनकी तन्दुरुस्ती वनाये रखे। भगवान् की कृपा इन पर वनी रहे।"

बूढ़े जमींदार मुश्की सिगरेट होल्डर में लगाये सिगरेट पी रहे थे और वे ध्यानी से चारों ओर जमा लोगों को देख रहे थे। तब, सुन्दर वालों वाली युवती की ओर रुख करके वह एक फीकी सी मुस्कान भरे भुन-भुनाये—

"हूँ, कितने गंदे और गरीव हैं ये लोग।"

गाँव वाले आपस में फुसफुसाये—"क्या कह रहे हैं ये ?"

अपने को चमकदार फरों में लपेटे जमींदार लोग कई जगह घूमे। झोंपड़ियाँ देखकर वे रुक गये। सुन्दर नवयुवती खिलखिलाकर हँस पड़ी।

"अरे ये घर हैं। कितने अजीव दिखते हैं!"

और मिस्टर जार्ज की ओर प्यार-भरी दृष्टि डालकर वह फरांसीसी में ही कहती चली गई—"घर! कितने अजीव घर!"

"सचमुच, यहाँ तो हम सभ्यता से कोसो दूर हैं!" मिस्टर योन्सकू ने पाइप से धुंए के नीले वादल को छोड़ते हुए कहा।

"वहुत ही अजीव...सच, वहुत ही अजीव।" युवती भुनभुनाई और उसकी आँखें सहसा धुंधली सी हो गईं। "इन झोपड़ियो को देखकर मुझे उन कोयला जलाने वालों की कहानियाँ याद आ रही हैं जो मैंने फरांसीसी स्कूल में पढ़ते समय पढ़ी थीं।"

झोंपड़ियों के रहने वाले उन लोगो के पीछे काफ़ी फासले पर डरे हुए से झुंड की नाईं चल रहे थे। मालिक लोग मवेशियों के वाड़ों और

अस्तबलों की ओर मुड़े।

मिस्टर जार्ज कुछ झेंपती-सी मुस्कराहट से बोले—"मेरे यहाँ खेती-बाड़ी कम है। पर हम करें भी क्या? आप यह न भूलें कि हम यहाँ एक नई ज़मीन पर हैं।"

पूरे समय नवयुवती की आँखें उन पर जमी रही और वह मधुर मुस्कराती रही।

वह सचमुच बहुत सुन्दर और आकर्षक थी, झोपड़ियों में रहने वाले लोग उसे घूर रहे थे और प्रत्येक बारीकी को आश्चर्य तथा चकित भाव लेकर, धीमी-धीमी आवाज़ों में अपने विचार एक दूसरे पर प्रकट कर रहे थे।

फलीबोग ने जना से कहा—"वे फरांसीसी में बातें कर रहे हैं।"

युवती अपने पंजों के बल अदा से खड़ी होकर चहकी—"मैं नहीं समझती यहाँ गर्मियों में भी मौसम कुछ खास अच्छा होता होगा।"

एवरानीन् ने उत्तर दिया—"मेरा अपना खयाल है कि मक्की के खेतों से और कुछ अच्छा नहीं हो सकता। .. अरे वह फलीबोग है।"

उनकी निगाह उसी समय फलीबोग पर पड़ी।

उन्होंने तुरंत कहा—"साँडू, यहाँ आओ!"

फलीबोग पास पहुँचा, कुछ कठोर-सा, पर उसने चेहरे के सारे भावों को भरसक नरम करने की कोशिश की।

"हम आपके हाथ चूमते हैं मालकिन!" उसने अपने पंजे के मानिन्द भारी हाथ को फैलाकर विनम्रता से कहा।

मिस्टर जार्ज ने अब भी फरांसीसी मे ही कहा—"अपना हाथ चूमने को इसे दो।"

फलीबोग ने अपनी निगाहें उठाई और पहले मालिक की ओर देखा, फिर बढ़े हुए दस्ताने चढ़े छोटे हाथ को चूमा।

"अच्छा साँडू," ज़मींदार ने मेहरबानी से पूछा—"सब कुछ ठीक चल रहा है न, यहाँ पर?"

"जी हाँ मालिक, ठीक चल रहा है।" फलीबोग ने विनम्रता से उत्तर दिया। "हर पिछले साल की तरह मैं कोठी पर आकर काम-काज के बारे में तफसील दूँगा।"

एन्रामीन् बोले—"हमारे पास अभी बिल्कुल समय नहीं है। हमतो सिर्फ बीच में यहाँ ठहर गये हैं। कल सवेरे यहाँ से फिर जा रहे हैं।"

"मालिक, क्या आप दूर जा रहे हैं . ?"

"हाँ, काफी दूर। हम इटली जा रहे हैं...तुमने तो यह नाम भी न सुना होगा।"

"क्यों नहीं मालिक, यह नाम हमने सुना है, वहाँ पर" फलीबोग ने एक आह भर कर जना की ओर ताकते हुए कहा।

नवयुवती, सहसा हँस पड़ी।

वह निश्वास भर कर बोली—"मुझे सर्दी लग रही है, मुझे सर्दी लग रही है। चलो, हम भीतर चलें, चलें न ?" उसने एन्रामीनू की बाँह ली और अपना सिर उसके कंधे पर रख दिया। "देखो मैंने, तुम्हारी बात मानी...और हम धरती के छोर पर तुम्हारा राज देखने आ गये," और हँस दी। "पर, ईश्वर के लिए अब हम चलें, जल्दी, जल्दी ! बहुत दूर...वहाँ जहाँ फूल हैं ··गीत हैं ··ओह जार्ज मैं कितनी प्रसन्न हूँ !"

उसके कदम तेज़ हो गये। बूढ़ा जमींदार उसका साथ देने के लिए कष्ट करता हुआ आगे बढ़ा। उसके चेहरे पर झुँझलाहट थी। धीमी आवाज में वह बड़बड़ाया और उसे धमकाया।

"रोजीना अक्ल से काम लो, लोग तुम्हें देख रहे हैं..." और अन्त में वह खाँसने लगी और सिगरेट फेंक दी।

होठों पर प्रशंसामूलक मुस्कान समोये, जना की आँखें अपनी मालकिन का पीछा कर रही थी। उसने अपने पति से कहा—

"तुमने सुना साँडू, उनका नाम जीना है।"

फलीबोग ने कुछ न सुनाई पड़ने वाली बात कुड़कुड़ाई। जमींदार लोग घर में घुस गये।

कुछ समय बाद मिस्टर जार्ज अकेले बाहर आये। अपने कारिन्दे को बुलाया और ज़ोरदार आवाज़ में कहा—"सुनो साँद्र, एक आदमी को स्लेज लेकर गाँव भेजो। वह शराबघर जाकर बारह गैलन ब्रांडी ले आये! तुम मेरी ओर से उसे सब लोगों को बाँटोगे। आज ही शाम को। लेकिन तुम इसका ख्याल रखना..."

"मैं समझ गया मालिक...और आप वापस कब तक लौटेंगे?"

जमींदार ने ताज्जुब में भर कर पूछा—"कौन? ओह हाँ, श्रीमती जी को यहाँ अच्छा नहीं लगता...लेकिन मैं जल्द ही लौटूंगा...अपनी तरफ़ से जल्द-से-जल्द..."

"सफर में आपको कोई तकलीफ़ न हो, मालकिन और आप सकुशल वापस लौटें, यही मेरी कामना है।"

एक सफेद हाथ खिड़की के भीतर की ओर खुटखुटा रहा था। मिस्टर जार्ज हँसते हुए मुड़े और भीतर चले गए।

भौं सिकोड़ते हुए फलीवोग उन नौकरों के साथ चला गया जो बाहर इन्तजार कर रहे थे। "तुम अपना सिर ढक सकते हो?" वह अपने दाँतों को पीसता हुआ बोला। उसने अपनी फर की टोपी फिर से पहन ली और कानों के ऊपर तक खींच ली।

"अन्द्रेई को शराब लेने जाने दो" वह अपनी स्वाभाविक रुखाई से चिल्लाया, "बाकी तुम लोग अपने काम पर लौट जाओ। जमींदार अब घर पर हैं और आराम कर रहे हैं। अब तुम क्या चाहते हो?..."

धीरे-धीरे झोपड़ियों के लोग बर्फ में से तिनकों से भरी चप्पलों को घसीटते और इस महान् घटना पर टीका-टिप्पणी करते चले जा रहे थे। फलीवोग ने एक लड़के को बुलाया।

"ए, ग्रेकूसर? तुम जल्दी जाओ और मेरी घोड़ी पर जीन कसो। मैं यह देखने जाना चाहता हूँ कि उन्होंने मेरे सवेरे दिये हुए हुक्म को पूरा किया है या नहीं।"

वह बड़बड़ाता हुआ एक दिशा में चला गया और ग्रेकूसर बर्फ के ढेरों

पर लम्बी छलांगें मारता हुआ दूसरी ओर चला गया।

नीता लेपादतू ने अपने कुत्ते के साथ गौशाला के पास अपने स्वामी के आने की प्रतीक्षा की। उसने उन्हें अपनी तरफ़ को आते देखा और अपने टोप को उतार लिया जबकि, वे अभी दूर ही थे।

लेकिन फर के सफेद धागों में चमकती हुई आँखों ने उस पर नज़र तक न डाली, तुरन्त भाग कर कहीं और आराम करने लगीं। जमींदार लोग फिर दूर चले गये और नीता उसी स्थान पर टोपी हाथ में लिए खड़ा रहा, मानो वहीं जड़ गया हो।

फलीबोग कदम बढ़ाता उसके पास आया और बोला—"अच्छा, नीता! तुम इसके विषय में क्या सोचते हो?...परमात्मा के लिये भले आदमी, अपनी टोपी पहन लो।"

"वह कितनी छोटी और सुन्दर है!" नीता ने कहा।

"परन्तु उसके बारे में क्या सोचा था, वह एक पवित्र जीव है, हमारी तरह नहीं जिनमें मिट्टी, गोबर और धुँए की गंध आती है...वह एक जीव है—मैं कैसे बताऊँ? मक्खन की बनी हुई।. वह एक प्राणी है जो नाज़ों में पली है...अरे, वह तो एक भिन्न नस्ल की है .."

लेपादतू चुप था। उसने अपने सामने देखा और मुस्कराया, मानो उसकी आँखें कोई मधुर स्वप्न देख रही हों।

दूसरे दिन सवेरे, घाटी की शांति में स्लेज की घंटियों की कई तरह की टन-टन की अवाज सुनी जा सकती थी। धुंध कम हो गया था और सारे नीले आकाश में सूरज चमक रहा था। चार घोड़े, फ़र और ओढ़ने के कपड़ों से भरी हुई स्लेज को जोर से खींचते हुए घर की सीढ़ियों के नीचे ठहरे और कोचवान चलाने वाली जगह शान से ऊपर बैठा हुआ अपने आस-पास देखने की ज़रा भी कोशिश नहीं कर रहा था।.

झोंपड़ियों के रहने वाले अपने मालिकों की विदाई देखने की प्रतीक्षा में इधर-उधर इकट्ठे हो गये। पिछली तरफ घर के बरांडे में फलीबोग मिस्टर जार्ज के प्रश्नों का उत्तर दे रहा था और हुक्म ले रहा था।

जब कारिन्दा बाहर आया तो हरेक ने पहाड़ी पर खलिहानों की ओर देखा। एक छोटा घोड़ा-जुती तंग स्लेज उधर से जल्दी जल्दी आ रही थी! फलीवोग ने अच्छी तरह देखने के लिए अपनी आँखों पर हाथ से छाया डाली।

"हो न हो यह मेयर है" वह अपनी जगह से हटे बिना जोर से बोला।

छोटा काला घोड़ा जल्दी चलता हुआ आया, यह कोठी तक आया और ठहर गया। एक छोटा पेंट वाला आदमी स्लेज से बाहर निकला, वह भेड़ की खाल का कोट पहने था। उसके चौड़े कालर और फर की नोंकदार टोपी के बीच से एक मोटा लाल मुँह निकला हुआ था। दो छोटी आँखें चारों ओर पड़ताली निगाह से चल रही थीं।

"मेरे घोड़ों और लबादों की रखवाली कौन करेगा?" वह मोटा आदमी मोटी आवाज मे बोला। उसने अपने ऊनी दस्ताने उतारे, अपनी टोपी पीछे फेंक दी और कोट के कालर को सीधा अपने कंधों पर खींच लिया।

"आप यहां कैसे पधारे महाशय?" फलीवोग ने पूछा।

सरकारी अफसर घूमा और उसके मोटे होठ मुस्कराने के लिए खुले।

"अरे, यह तुम हो, मिस्टर सांडू, जमींदार यहाँ हैं, हैं न? मैंने उन्हें कल देखा था...जब वे गांव से गुजर रहे थे।"

"हां, वे यहां हैं", फलीवोग ने अपना सिर हिलाते हुए कहा, "अब हमारी एक मालकिन भी है..."

"मैं जानता हूँ, मैं जानता हूँ", मेयर ने हँसते हुए कहा। "इसी लिए तो आने में जल्दी की है कि मैं उनका सम्मान कर सकूँ..."

झोंपड़ियों के आदमियो ने चुपचाप रहकर नजारा देखा।

मेयर कुछ मिनट तक इधर-उधर देखता रहा और फिर उसने जमींदार के घर पर दृष्टि जमा दी।

"इस रास्ते से"—फलीवोग ने अपना हाथ हिलाते हुए कहा, "पीछे से..."

परंतु सामने का दरवाजा खुला और जमींदार लोग फरो में ढके दिखाई

दिये। मेयर सीढ़ियों की तरफ लपका। मिस्टर जार्ज ने उसे एकदम पहचान लिया कहा, कुछ हैरानी में कहा—"अरे, यह तो मिस्टर वाल्कू हैं! यहाँ कितनी देर से हो ?"

"मैं अभी आया हूँ।" मेयर ने जमींदार की श्रीमतीजी को झुक कर नमस्कार करते हुए जवाब दिया।

"एक पल के लिए माफ़ करें मेयर, एक पल के लिए..."

मिस्टर जार्ज ने अपनी युवती बीवी को स्लेज में चढ़ने में सहायता की और उन्हें लबादों में दबा दिया। उसने उनको चमकती हुई आँखों से देखा और लाल ताजा होठों पर एक मासूम मुस्कान तैर गई।

"कैसा शानदार मौसम है! वह धीमी आवाज में बोली! "जार्ज आओ। आओ अब हम चल पड़ें......"

"एक क्षण" एन्रामीनू ने धीमी आवाज़ में फराँसीसी में कहा।

"मैं इस आदमी से एक-दो बातें कर लूँ..."

बूढ़ा जमींदार लम्बी साँस भरता हुआ अपनी बारी आने पर स्लेज में चढ़ गया। नन नीची-आँखें किये शान्त और आदर के भाव से वरांडे में खड़ी थी।

मालिक मेयर के पास गया और उसे एक तरफ ले गया। उन्होंने कुछ मिनट धीरे-धीरे बातें कीं। अन्त में एन्रामीनू ने अपना फर का कोट खोला, अपना हाथ जेब में डाला और एक थैली निकाली। फिर एक लम्बा नीला बैंक का नोट चुना, जिसे मिस्टर वाल्कू ने अपनी जेब में रखने में तनिक भी देर नहीं लगाई।

"बहुत-बहुत धन्यवाद", मेयर ने लम्बी मुस्कान के साथ कहा, "सदा की तरह मैं आपकी सेवा में हाजिर हूँ..."

"अच्छा, अच्छा!" एन्रामीनू ने दूर देखते हुए और अपने कोट के बटन फिर से बन्द करते हुए जवाब दिया। "अलविदा मिस्टर वाल्कू! अलविदा।"

"आपका सेवक"—मेयर ने सफेद फर की ओर आशातीत नीचे झुकते हुए कहा।

श्रीमतीजी ने पलक मारी और मिस्टर जार्ज ने स्लेज में चढ़ने की जल्दी की। नन वरांडे से दौड़ कर नीचे आई।

फलीवोग भी दूसरी तरफ पहुँचा। कोचवान मुड़ा और सभी ने अपने फर और लबादों को ठीक-ठाक करने में अपनी पूरी कोशिश की।

"साँडू !" मिस्टर जार्ज ने एक बार फिर कहा, "देखो, हर चीज ठीक-ठीक रहे ..."

फलीवोग ने अपनी टोपी उतारी।

"डरिए नहीं, मालिक ! ..विदा।..."

सब मिट्टी के झोंपड़ों मे रहने वालों ने अपनी टोपियां उतारीं।

"अलविदा !...मिस्टर जार्ज ने आखिरी बार जोर से कहा। "हम चल दिये !"

कोचवान ने अपना चाबुक फटकारा, घोड़ों की गलों की घटियां फिर बजने लगीं और स्लेज आगे की ओर पहाड़ी की तरफ धीरे-धीरे उछलने लगी। पीछे-पीछे सब बहुत दूर पर छूटे रह गये, मिस्टर वाल्कू अपने कपड़ो मे लिपटे और टोप आँखों तक उतारे हुए तथा कोट के कालर ऊपर को खींचे हुए, अपने घर की ओर चले गये, केवल उनकी नाक दिखाई देती थी।

"अच्छा नोता !" फलीवोग ने लेपादतू से कहा, 'अब तुमने सरकारी अफसर को सबसे पास वाले गांव के मेयर को खुद ही देख लिया। वह बड़ा चतुर बूढ़ा है, मिस्टर वाल्कू। जब कभी उसे भनक मिलती है कि जमींदार लौट आया है, वह समय नहीं खोता...हमारे मालिक बस एक नोट, नीला नोट, उसके पंजों मे सरका देते हैं, ऐसा करने को वह अपना कर्तव्य कहता है। उसके ऐसे आने के अलावा हम अपने आप में मस्त रहते हैं—बिना किसी मेयर या पादरी के टैक्स लेने वाला साल

में एक वार आता है और वह भी धन लेने के लिए। इसके वाद सब समाप्त..."

फलीवोग हँसा, जबकि उसकी आँखें छोटी लकड़ी की स्लेज को सुन्दर स्लेज की वरावरी करने की कोशिश में संलग्न देख रही थीं।

"लेकिन, तुम, नीता", उसने एक दम आगे कहा, "तुम कैसे वीच-वीच में कुछ उसाँसे से लग रहे थे ..कल की तरह...तुम ऐसे लगते थे जैसे तुमने कहानियों में कही जाने वाली परी को देख लिया हो।"

स्लेज की घंटियों की हल्की-मुलायम ध्वनि दूरी में विलीन हो गई, जवकि जमींदार का घर और झोपड़ियाँ पहले से अधिक सुनसान तथा एकान्त थीं और शीत-शांति में ढकी हुई थीं।

कारिन्दा अपना काम देखने चला गया और नीता कुत्ते को साथ लिए अपने पशुओं के पास लौटा। परन्तु संध्या समय सव मिट्टी की झोंपड़ियों में रहने वाले आग के इर्द-गिर्द इकट्ठे हुए और फिर दूसरे लोक के स्वप्न-विशेष जैसी इस घटना के सम्वन्ध में जो उनकी अँधेरी जिन्दगी मे क्षण भर के लिए आई थी, वातें आरम्भ कीं...।

: ६ :

सर्दी धीरे-धीरे और शांति से चलती रही। साधारणतः मनुष्य और पशु कुछ वहुत वुरी दशा में नहीं रहे और किसी खासी वात ने उस वस्ती की एकांतता को भंग नहीं किया। केवल वड़े दिन से एक दिन पहले की संध्या को मिस्टर वाल्कू के गाँव के गिरजे से एक पादरी और एक सैक्सटन घोड़े की पीठ पर चढ़ कर झोंपड़ियो के रहने वालों को ईसामसीह के जन्म का समाचार सुनाने आये थे। वे पहले जमींदार के घर गये। वहाँ नन ने उनका स्वागत किया। इस समय वह सदा से अधिक भक्त और उदासीन दिखाई पड़ी। फिर वे झोपड़ियो में से गुजरे

और स्त्री और बच्चे उन्हें रास्ते में मिले। उनको वे आशीर्वाद देते गये। फलीवोग ने अपना कर्तव्य पूरा किया और दोपहर के लगभग पादरी व सेक्सटन सफेद फैली हुई वर्फ पर अपने छोटे घोड़ों को चलाते हुए घर चले गए। आदमियो ने अपनी आँखो से तब तक उनका पीछा किया जब तक कि वे दूरी मे दो काले धब्बो की तरह ओझल न हो गये।

बड़े दिन पर सभी ने सूअर का मांस खाया और शराब पी, जैसा कि रिवाज था। वे जानते थे कि एक नया साल शुरू होने वाला है, और झोंपड़ियों की गर्माहट में इसको मनाया। गड़रियों ने भी खाने-पीने मे खूब ही हिस्सा लिया और मवेशियो के बाड़ों की रखवाली करने वाले आदमी भी नहीं चूके। भोर होने तक फलीवोग एक क्षण का आराम लिए बिना सब दिशाओ मे यह देखने के लिए दौड़ता रहा कि कोई तिनको और घास फूस के छप्परो मे हुक्का तो नहीं पी रहा, या कोई मवेशियों के बीच मे तो नहीं गिर पड़ा है। ऐसे अवसरों पर हर आदमी को खूब पीने की इजाजत थी, परन्तु शराबी की हालत कभी-कभी खतरा भी पैदा कर देती है।

ऐपीफानी के त्योहार के बाद एक दिन संध्या-समय फलीवोग और लेपादतू बूढ़े आदमी की झोंपड़ी में बातचीत कर रहे थे। उत्तरीय पवन फिर बिखड़ पड़ा।

"अब तक," फलीवोग ने कहा, "हमारी सर्दियों का पहला आधा, समय तो बहुत मुश्किल से नहीं बीता। अच्छा, देखें अब आने आने वाला आधा समय किस तरह का बीतता है।"

"हूं?" नीता ने हंसते हुए जवाब दिया, "यह सर्दी और सर्दियों से भिन्न थोड़े ही हो सकती है। जैसी होनी होगी वैसी होगी।"

"यह ठीक है, सर्दी अब तक कभी भेड़ियो के द्वारा नहीं खाई गई। फिर भी तुम देखते हो कि जैसे ही एपीफानी का त्योहार समाप्त होता है मैं वसंत के विषय मे सोचने लगता हूं। जाड़े में इतना घर पर रहना पड़ता है कि दम घुटने लगता है! जना की भी यही हालत...यह

वसंती सूरज की चाह करती रहती है .."

फलीवोग ने आग के पास नाक से साँस ली। मिखाईलेच प्रेसक्रूरी बोला :

"वसंत में मालिक अपने बच्चों सहित वापस आयेंगे।"

फलीवोग ने अपना सिर हिलाया और लम्वी साँस ली।

"जब वर्फ पिघलने लगती है तो कैसा सुहावना लगता है और खेत हरे दिखाई देते हैं...लार्क-चिड़िया गाती हुई वहुत ऊँचे तक आकाश में चली जाती हैं। सब ओर चश्मों में जिंदगी आजाती है और वे झागों से सफेद दीख पड़ते हैं। एक गंध आती है, कह नहीं सकता कैसी...पर एक मीठी गंध। यहाँ तक कि मेरी घोड़ी अधीरता और खुशी से काँपती है और जब मैं उस पर सवार होता हूँ तो हिनहिनाती है। मिस्टर जार्ज भी अपने घोड़े पर सवार होते हैं और हम दोनों चल पड़ते हैं यह तय करने के लिए कि किस कोने में काम करना है, कौनसे खेत चरागाहों के लिए छोड़ देने हैं, कहाँ घास बनानी है...ओह उन्हें काली जमीन पसंद है...मेरी ही तरह..."

"लेकिन, साँद्र," चचा ईमिया इज्राइल अपने कोने से बोले, "मैं तुम्हें कुछ बताऊँगा मैं...वह इस जमीन को प्यार करने में कैसे मदद कर सकता है? मैंने अपनी जिंदगी में अच्छी जगह देखी हैं और बहुत सी जमीन अपनी हाथों से जोती है। लेकिन यहाँ की कुछ बात और है... यहाँ जमीन इतनी अच्छी है...परमात्मा ने इसे ऐसा बनाया है...जैसी फसलें यहाँ पैदा होती हैं वैसी दुनियाँ में आज तक न किसी ने देखी हैं और न सुनीं...यहाँ पर मक्कीं घोड़े की पीठ पर खड़े आदमी से भी लम्बी होती है, गेहूँ कंधों तक पहुँच जाता है और इससे बड़ी और भारी अनाज की बालें कहीं नहीं होतीं...मैं कैसे जानूँ? इस जमीन को ईश्वर ने आशीर्वाद दिया है, यह निश्चित है।"

"इसीलिए हमारे ज़मींदार और किसी स्थान पर नहीं जाना चाहते", फलीवोग धीमी आवाज से बोला। इसीलिए वह सदा इस रेगिस्तान में

रहते हैं, मानो वह इसको प्यार करते हों। सवेरे से रात तक वह मेरे साथ खेतों मे घूमते हैं...गर्मियों में सावेनी शहर के बाजार जाते हैं जब कि दूर-दूर के फसलें बटोरने वाले इकट्ठा होते हैं और मजदूरी ठहराली जाती थी। वहाँ से जो मजदूर आते हैं वे ऐसा अनुभव करते हैं कि मेले में आये हों और वे दराँती लिए सीधे खेतो के आर-पार चले जाते हैं। लगता है कि यहाँ सेना है। और नीता, इसीलिए हमारे जमींदार हमेशा इस स्थान को पसन्द करते हैं; यहाँ धन मिलता है; धन जिसे फसलों को बटोरने वाले गट्ठों के रूप मे बाँधते हैं। यह सच है कि जमीन उर्वर है।

घियोर्घ बर्वा झोंपड़ी के दूसरे सिरे से अपनी बारी आने पर बोलाः "मैं तुम से सहमत हूँ, फसल के समय यहाँ रहना अच्छा है। सब खलिहान भरे होते हैं...आदमी और औरते हँसते हैं और संध्या समय के पास गाते हैं. जब काफी मनुष्य होते हैं तो सदा ऐसा ही होता है..."

"सच बताओ बर्वा सच," फलीवोग उसको चिढ़ाता हुआ बोला, "सच बताओ, किसको तुम सबसे अधिक चाहते हो ? तुम लड़कियों के साथ गाते हो और मजाक करते हो। तुम्हें वह समय याद है जब तुम जवान थे।"

"मजाक करने से क्या फायदा।".. घियोर्घ वर्वा भुनभुनाया। "मैं एक बूढ़े आदमी के सिवा कुछ नहीं हूँ....जवानी के बराबर कुछ नहीं होता ! जैसा कि गीत भी है .."

हरेक हँसने लगा। चचा इमिया ने लेपादतू की ओर सिर हिलाया। "कौन जानता है ?" नीता ने जवाब दिया, "हो सकता कि आने वाली गर्मियों मे मैं कुछ और सोच रहा हूँ।"

"लेकिन क्या, मेरे लड़के ?"

"वह", फलीवोग ने कहा, एक "गुप्त बात हैं . और तुम इनको जानने के काबिल नहीं हो, चचा...मैं हैरान नहीं हूँगा जब कि घियोर्घ वर्वा किसी की शादी के लिए वंशी बजा रहा हो..."

वे सब चुप थे। किसी ने कोई और प्रश्न नहीं पूछा। केवल चचा ईमिया लम्बी साँस के साथ भुनभुनाया—"परमात्मा की मदद से .."
चिमनी के नीचे चलने वाली हवा सुनी जा सकती थी।
मिखालेच प्रेस्कूरी ने कहा—"अब हमें खराब मौसम का सामना करना पड़ेगा।"
फिर शांति हो गई। एक क्षण के बाद साईं फिर अपनी भर्राई हुई आवाज में बोला—
"हुँ, मैं हैरान हूँ, वे कहाँ होंगे अब, हमारे जमींदार लोग ..कौन जानता है वे कहाँ हैं। कहते हैं कि इटली का देश, जहाँ कहीं है, वहाँ का समुद्र अपने आप गर्म होता है। वहाँ कभी वर्षा नहीं होती। हर समय बसन्त का समय होता है। यही एक बार जमींदार ने मुझ से कहा था। हम घोड़े की पीठ पर खेतों मे थे और मुझ से बातें कर रहे थे और मुझे सब तरह की बातें बता रहे थे .."
"कौन जाने वह देश कहाँ है" नीता ने कहा ?"
"अगर वह समुद्र के किनारे है," मिखालेच प्रेस्कूरी ने कहा, "तो यह पृथ्वी के छोर पर होना चाहिये, जहाँ अब बील चिड़िया और सारस अपनी सर्दियाँ व्यतीत करते हैं...लेकिन मेरी हैरानी यह है कि इन्सान वहाँ कैसे जा सकता है ?"
"क्यों, बड़ी आसानी से," फलीबोग ने हँसते हुए कहा।
"आजकल रेलगाड़ियाँ हैं ..तुम बिजली की तरह तेज जा सकते हो..."
एक क्षण की चुप्पी के बाद, नीता ने पूछा—"क्या वहाँ के मनुष्य यहाँ के लोगों से अच्छी तरह रहते हैं ?"
फलीबोग ने एक खीज के साथ उत्तर दिया।
"नहीं तो हमारे जमींदार सिवा अच्छी तरह रहने के वहाँ क्यों गये हैं ? अगर मैं जा सकता तो मैं सर्दी पड़ते ही वहाँ उड़ जाता... हालाँकि मैं नहीं जानता मुझे क्यों उड़ जाना चाहिए...और अब जब कि मुझे इसकी आदत पड़ गई है।"

"मैं सोचता हूँ," नीता ने कहा, जमींदार केवल अपनी पत्नी को प्रसन्न करने के लिए वहाँ गये हैं...वह इतनी कोमल और गोरी है कि मुझे कहना चाहिए मैंने इतना सुन्दर और प्राणी कभी नहीं देखा। यह वही हैं जो जमींदार को दूर खींच कर ले गई हैं। क्या तुमने नहीं देखा कि वह उनको कैसे देखते थे? कीमती जवाहरात की तरह! हो सकता है कि वे इस समय बातें कर रहे हों और आनन्द मना रहे हों।"

उन्होंने फिर हवा की आवाज सुनी जो चिमनी के नीचे उमड़ कर दहाड़ रही थी। तेल के दीपक की लौ काँपी और लगभग बुझ गई।

कारिन्दा खड़ा हुआ और अपना चाबुक और फर की टोपी को ढूँढ़ना शुरू कर दिया।

"मैं भी जाऊँगा", नीता ने उठते हुए और अपनी भेड़ की खाल का कोट अपने कन्धे पर डालते हुए धीमी आवाज में कहा—

"लड़के मेरे लिए इन्तजार कर रहे होंगे...."

जैसे ही वे झोंपड़े से बाहर निकले, बर्फ के कतरे उन के मुँह पर उड़े। लेकिन कुछ आगे जाने पर उन्हें तूफान ने बर्फ के चक्कर में पकड़ लिया।

"इन सब को छोड़ो!" फलीबोग झुकते हुए और मुँह पोंछते हुए चिल्लाया—"यही तो सीधा गले में घुस जाता है..."

नीता ने अपने को बड़ी भेड़ की खाल से ढक लिया।

फलीबोग झोंपड़े में चला गया, 'यह अच्छा नहीं", वह भुनभुनाया, "मुझे कोई और मोटी चीज ओढ़ने के लिए लेने जाना पड़ेगा. तुम, नीता, आज रात जानवरों से दूर न जाना। ऐसे तूफान में न जाने क्या हो जाय?"

"मैं तो और रातो मे भी सदा उनके पास सोता हूँ।" नीता ने कारिन्दे से विदा होते हुए कहा।

पहले तो उसका चचा नश्ताश की झोंपड़ी पर जाने का विचार था। वह माधियोलीता से मिलना और उससे बातें करना चाहता था। लेकिन दूसरे ही क्षण वह अस्तबल में चला गया।

जमीन और आसमान पर कुछ अजीब चीज हो रही थी। हवा में हजारों सुइयों जैसी चुभन थी।

वर्फ कपड़े की छोटी-से-छोटी तह में घुस जाती थी। आकाश में एक वेगवती धारा-सी गरजती वहती लग रही थी। जब वह अस्तवल के पास पहुँचा तो नीता ने अनुभव किया कि हवा तेज हो गई है। उसने लड़कों को अपनी इन्तजार में एक कोने में चिपके हुए देखा। उसका कुत्ता, जब उसने मालिक को देखा तो कूदा और उसकी टाँगों से रगड़ने लगा। मवेशी अंधेरे में गतिहीन खड़े थे। नीता ने अनुभव किया कि वे वेचैन हैं, उनके सिर ऊपर की ओर कान झपके हुए हैं।

वर्फ, सूखी आवाज में, वाड़ों के वड़े फटघरों पर खड़खड़ा रही थी। वर्फ के टुकड़े छत की दरारों से अन्दर घुस रहे थे। कभी-कभी हवा का झोंका तेजी से साँय-साँय करता और अदृश्य परों को फड़फड़ाता मुलायम तख्तों पर टकराता था।

"चचा नीता" लड़कों में से एक ने, कहा।

"आज रात को पशुओं के वाड़ों में भेड़िये जरूर आयेंगे।"

"तुम चुप रहो ?...और वकवास मत करो। अगर वे आयेंगे तो हमारे कुत्ते उनको ठीक कर देगें...और हमारे पास वन्दूकें भी हैं। किसी तरह सही, ऐसे मौसम में भेड़िये भी अपनी जगहों से निकलने की हिम्मत नहीं करते।"

"चचा, तुम यहाँ अकेले कैसे रहोगे ? सुनो न, वाहर क्या हो रहा है... यह तो प्रलय की आवाज है।"

नीता ने नरमी से कहा, मै जानता हूँ तुम्हें तूफान ने उसी तरह डरा दिया है। जैसे मुझे तुम्हारी उम्र में डराया करता था, छोकरो !"

लड़के आपस में एक दूसरे को पकड़ते हुए झोंपडे में चले गये और दरवाजा अच्छी तरह वन्द कर लिया। नीता पशुओं की कतारों के पास से अस्तवल के परले कोने पर गया और उनकी साँसों की आवाज सुनता रहा। फिर वह उस कोने में आया, जहाँ अक्सर अपना विस्तर

बिछाया करता था वह वहाँ एक बन्दूक रखता था जो हमेशा भरी रहती थी। लेकिन उसे अपने पीतल की मूठ वाले डंडे पर अधिक भरोसा था। इसलिए उसने उसे निकाला और ऐसे रखा कि ज़रूरत पर जल्दी से उठा सके। इन सावधानियों के बाद वह अपने को भेड़ की खाल में लपेट कर लेट गया।

बहुत देर तक पीठ के बल लेटे सोचता रहा। उसे नींद नहीं आ रही थी और बाड़ों के सब ओर तूफ़ान उठ रहा था। वह बचपन के विषय में और अजनबी लोगों के साथ व्यतीत किये हुए जीवन के विषय में सोचने लगा। वह अपनी माँ और बाप किसी को भी फिर याद न कर सका, कुछ देर बाद उसने प्रेम के बारे मे सोचा और फिर उसे अनुभव हुआ कि मार्थियोलीता वहाँ खड़ी है, जीवित और मुस्कराती, उसके बिस्तर के सिरहाने।

उसके पीछे दीवारों को हिलाती बारीक वर्फीली हवा चल रही थी, और उसके चारों ओर फैला अन्धकार उसमें ऐसा लग रहा था कि उसके स्वप्नों की तस्वीरें और छायामय शक्लें छितरी हों...

उसने अचानक, अपने आपको कोहनी के सहारे उठाया और लगी एक अजीब फैली हुई कँपकपी ."

"यह हवा तो कुछ गैरमामूली तेज है..." उसने सोचा।

अब उसमें जरा भी रुकाव और आराम नहीं था। ऐसा लगता था कि एक अजीब, ऐसा तूफान, जिसकी कल्पना नहीं कर सकते, उठा है और वह अस्तबल को उखाड़ने वाला और दूर ले जाने वाला है। जहाँ पहले शांति थी, वहाँ से अब हवा को चीरती हुई एक अनन्त गूँज खतरे की चिल्लाहट की भाँति क्षितिज तक प्रतिध्वनित हो रही है !

"तूफ़ान ने संसार को जड से हिला दिया है" नीता ने काँपते हुए कहा।

मवेशी बेचैन होने लगे और एक साथ इक्ट्ठे होने लगे।

सारमनू भौंका, जैसे किसी के आने की आहट सुनी।

"चुप रहो, कोई नहीं है।" नीता ने कहा।

वह उठा और अँधेरे में देखने की कोशिश की कि क्या हो रहा है। वह हैरान था कि जानवरों को शांत करने के लिए क्या करे। लेकिन जानवरों को और कुत्ते को महसूस हो गया था आदमी से भी पहले और अनुभव हो गया था कि कुछ होने वाला है।

और जब मनुष्य ने अनुभव किया तो बहुत देर हो गई थी।

तेज आवाजों के साथ अस्तबल के जोड़ टूटने लगे।

मवेशी इस उपद्रव से डरे हुए एक दूसरे की तरफ दौड़े और घास की दीवारों से टकराये।

तूफान की भारी लहर से वाहर से धकेले जाने पर अस्तबल टूटने लगे और दहाड़ते हुए मवेशी खुली जगहों में से निकल गये। सारसन् इंसान की तरह निराश होकर चिल्लाया।

एक घास का ढेर वड़े पंख की तरह लेपादतू से टकराया। झटके से घवड़ाया हुआ यह सोचते हुए कि उसे अपने को एक दुश्मन से बचाना है, वह अपना डंडा उठाने के लिए झुका। लेकिन पास वाले एक झरोखे से हवा अन्दर आई और वर्फ के एक चक्कर ने उसे अन्धा कर दिया।

यह सब एक क्षण में हो गया।

जानवर चिघाड़ते हुए आस-पास के खेतों में चले गये। नीता, जो उल्टा हाथ पैरो पर पड़ा था, उठने का वक्त न पा सका।

घास और तिनकों की छत पूरी नीचे गिरी और उसके वोझ से वह दव गया। उसको लगा कि वह मर जायगा।

एक क्षण तक वह अपने कुत्ते के भौंकने की आवाज सुन सका। फिर हवा ने दुख भरी चीखों और मदद की पुकारो को दवा दिया।

फलोवोग अपनी घोड़ी पर सवार घर लौट रहा था। उसने हवा के झोकों में मवेशियो के दहाड़ने की और अस्तवल के टूटने की आवाजें सुनीं। उसने जल्दी से रास्ता तय किया और सूखी आवाज में चिल्लाना शुरु किया।

"अरे, नीता तुम कहाँ हो ? क्या हुआ ?" वह अपनी घोड़ी से उतरा

और बर्फ में घुस गया। दर्द ने उसे अंधा कर दिया। उसने जमीन को हाथ पैरों से टटोला। फिर वह एक दम ठहर गया और जोर देकर सुना, इसमें शक नहीं था, कि पास ही कोई कराह रहा था। एक पल वह हिचकिचाया कि क्या पहले झोंपड़ों मे जाकर सावधान होने के लिए कहे? लेकिन वह सोचने के लिए नहीं ठहरा। उसने फिर अंधेरे में ढूंढना शुरू किया और बर्बाद हुए अस्तबल को; घास के तिनकों को दायें-बायें फेंकने लगा। समय-समय पर आहट लेने के लिये रुकता। वह फिर चिल्लाया। "अरे नीता तुम कहाँ हो ? मैं हूँ, लड़के ?...क्या तुम मेरी आवाज नहीं सुनते ?"

अब कराहने की आवाज पास ही साफ़ सुनाई पड़ रही थी। फनीत्रोग ने झोंपड़ी की तरफ चिल्लाना शुरू किया—

"अरे नीचे रहने वाले लोगो! परमात्मा के लिए जाग जाओ!"

फिर उसके मन में एक विचार आया। उसने अपनी बन्दूक जो उसके कन्धे पर लटक रही थी निकाली और दो-बार गोली छोड़ी। उनकी आवाज जंगली हवा की सांय-सांय मे मिल गई ...

फनीत्रोग ने अपने हाथ फैलाये, फिर नीचे झुका—वह अधीरता से हांफने लगा। उसने एक भेड़ की खाल महसूस की, नीता का कोट। इसमे लिपटी हुई जवान आदमी की देह अभी गर्म थी।

कारिन्दे ने उसको अपनी पूरी कोशिश से लकड़ी और घास के ढेर से बाहर निकाला और भेड़ की खाल मे लपेट दिया। तब वह अपनी घोड़ी पर चढा और झोंपड़ियों की तरफ जाकर अपनी डरावनी आवाज में चिल्लाना शुरू किया।

उस खतरे और निराशा की रात मे, नीता लगभग मर ही गया था। उस बूढ़ आदमी की झोंपड़ी मे लाया गया। उसकी खोपड़ी फट गई थी और टांगें टूट गई थीं। वे जना को शराब मे भीगी हुई रोटियों की पुल्टिस बांधने और सिर के पास मोमबत्ती जलाने के लिए बुलाकर

लाया। बूढ़े आदमी ने दिन निकलने तक उसकी निगरानी की। वह आँखें बन्द किये निरन्तर कराहता रहा।

मुश्किल से दिन निकला था कि मार्घियोलीता वहाँ आई, मानो तूफान जो अब भी चल रहा था, उसे वहाँ खींच लाया हो। वह चिल्लाकर अपने सिर को हाथो में लेकर रोने लगी और नीचे गिर पड़ी। उसका मुँह जमीन की ओर था, बेंच के पास जहाँ कि उसका प्रेमी लेट रहा था।

नीता, जिसका शरीर पिस गया था, तीन दिन और रात होश में न आया। आखिरकार, धुंधली रोशनी जो कि झोपड़ी में छन कर आ रही थी उसकी आधी खुली आँखों पर चमकने लगी...।

: ७ :

वोर्दीनी गाँव का एक किसान था जिसने हाल में ही मुझे प्रांत-प्रांत की बर्बादी के समय की ये सब कहानियाँ सुनाईं थीं।

गर्मियों में एक दिन मैं उस गाँव में पहुँचा जहाँ कि यह आदमी मेयर था और मैं उसके घर के आँगन में ठहरा, जिसके आस-पास सींकों की बाढ़ लगी हुई थी।

उसने मेरे घोड़े को अस्तबल में शरण दी, जिसकी दीवारों पर सफेदी हो रही थी। बीच-बीच मे नीला रंग पोता गया था और उसने मुझे अपने घर के छज्जे पर आराम करने के लिए निमन्त्रित किया।

वह लम्बे बालों वाला हृष्ट-पुष्ट मनुष्य था। उसकी मूँछें भूरे रंग की छोटी थीं और आँखें घनी भौंहों में धँसी हुई थीं। मैंने देखा वह एक ओर झुक कर चलता था—कुछ लँगड़ाता था।

उसने बड़ी नम्रता से मुझसे ठंडे पानी को पीकर प्यास बुझाने के लिए

निवेदन किया। इस बीच अतिथियों का स्वागत करने के लिए उसकी बीवी ने एक छोटी मुर्गी संध्या के समय के भोजन के लिए पकाते हुए चुकन्दर की जड़ के शोरवे में मिला दी। दो सुन्दर और चंचल छोटे बच्चे आये और चले गये। फिर घर के काम में लग गये और साफ़ छप्पड़ से पशुओ के बाड़े तक इधर-उधर दौड़ते रहे।

बहुत देर के बाद, जब मैंने खाना खा लिया, तो वह आदमी छज्जे पर आया। और कुछ कदम की दूरी पर बैठ गया, फिर अपनी बीवी को बुलाया। वह शान्त आवाज़ मे बोला—

"मार्घियोलीता, और एक ग्लास शराब पी लो।"

जब वह स्त्री अपने कर्ये पर लौट गई तो किसान, नीता लेपादतू ने मुझे ज़मींदार एन्रामीनू के राज्य मे बिताये अपने जीवन के सम्बन्ध मे बताना आरम्भ किया। उसने मुझे हरेक बात बताई, उस रात, खतरनाक, रात, के सम्बंध में भी जब वह लगभग मर गया था और अपने बसन्त ऋतु तक रहने वाले दुखों के सम्बंध मे भी बताया।

"लेकिन वसंत मे", मेरी ओर एक मुस्कान भरी दृष्टि डालकर वह कहता गया। "मैं अपनी झोपड़ी छोड़कर गर्म धूप मे बैठने लगा ...और वह अबाबील चिड़ियां वापस आने लगीं और खेतों में फूल खिलने लगे। तब मेरा कष्ट समाप्त हो गया। तब जमींदार भी घर आ गये और मार्घियो-लीता और मैंने उनको और उनकी श्रीमती को अपने विवाह के लिए आमन्त्रित किया।"

"क्या तुम जानते हो, विवाह के लिए हमें इयासी तक जाना पड़ा? श्री-मती जी, जो हमारा रेगिस्तान फिर नहीं देखना चाहती थीं, लेकिन उन्होंने विवाह मे आने की स्वीकृति दे दी। यह मेरी उन सेवाओं का इनाम था जो मैंने उनकी अनुपस्थिति में, जब कि वे सदा गर्म रहने वाले समुद्र के किनारे रंगरेलियां मना रहे थे और आनन्दित हो रहे थे, कष्ट सह कर की थीं।

"हमने देश के बहुत बड़े भूभाग की सैर की और अनेक नगर और गवां

देखे...और जब हम लौटे तो हमारी मिल्कियत और यह भूमि जो हमारे मालिक ने हमें दे रखी थी बिल्कुल ऊजड़ और छोड़ी हुई-सी लगती थी और क्योंकि हमने बहुत-सी चीजें देखी थीं—मकान, फार्म और गाड़ियाँ और न जाने कितनी चीजें। इसलिए हमने सोचा कि हमें पूरी कोशिश करके झोपड़ी से निकलना चाहिये और हमने अपने लिए एक मकान बनाया . और फिर काफी लोगों ने बनाये . लेकिन हमारा मालिक बिचारा कुछ समय के बाद यहाँ कभी नहीं आया। उसने वही किया जो उनकी श्रीमती जी ने कहा। वह वहाँ से चला गया और दूसरी जागीर खरीद ली—और ये खेत दूसरे के हाथों में चले गए। उनके टुकड़े-टुकड़े कर दिये गये। सब तरह के आदमी एक के बाद एक उन पर अधिकार करते गये और पुराने निवासियों को भी कुछ भूमि मिली। उनमें से बहुत से जो उन झोंपड़ियों में पैदा हुए और रहे थे, उन्होंने अपने ही भूमि के टुकड़े पर रहने की व्यवस्था करली और अपने लिए घर बना लिए। इसलिए आज हमारे पास, जिसे तुम कुछ अंशो में गाँव कह सकते हो—एक गाँव है और हम अब दुनियाँ से बहुत दूर नहीं हैं।"

जब नीता लेपादतू मुझे यह सब सुना रहा था, गाँव के दूसरे लोग खेतों से लौट कर उसके घर के आगे से जाने वाली सड़क से गुज़र रहे थे और बहुत से लड़के गा रहे थे, उनके स्वर उस शांत संध्या में स्थिरता और उल्लास से ऊँचे चढ़ रहे थे।

मैंने और आस-पास के सब देश को देखा, पहाड़ियों पर जहाँ सुनहरा अनाज धीरे-धीरे हवा के झोंको में लहरा रहा था, उन छोटी घाटियों को जो चरागाहों के लिए और दक्षिण की ओर फैले हुए अनन्त-अन्न के खेतों को देखते हुए मैंने अपने मेजवान से पूछा—

"ज़मींदार के पुराने घर का क्या हुआ ?"

"वह गिरा दिया गया और दूसरा उससे बहुत ऊँचा एक नया बनाया गया। फिर दूसरा भी बिना स्वामी के रहा और वह भी गिरा दिया गया। दूसरे ज़मींदारों ने जागीर के मध्य में ईंटों का मकान बनाया था ..

वे लगभग प्रतिवर्ष अपने मकान और स्थान को पशुओं के बाड़े की तरह बदलते रहते थे। लेकिन अब पशुओं के बाड़े भी अक्सर नहीं बदले जाते और वे ऐसे बनाये जाते हैं जैसे कि बनाये जाने चाहिएँ।"

नीता लेपादतू हँसा और कहने लगा—"मैंने ऐसे कहते सुना कि यहाँ से बहुत दूर नहीं, जिजिया घाटी में रेल चालू की जा रही है .."

"हाँ, यह ठीक है", मैंने कहा। "क्यों, दुनियाँ में चीजें इसी प्रकार तो बदलती हैं। लेकिन फलोवोग ? फलोवोग और उसकी जना का क्या हुआ ?"

नीता कुछ देर तक बैठा सोचता रहा।

उसने जवाब दिया, "आप जान ही गये हैं फलोवोग एक अजीब सा आदमी था, जैसा कि वह स्वयं ही कहा करता था। वह एक जंगली घोड़े के समान था। जब उसने देखा कि आबादी बढ़ रही है, एक के बाद दूसरे मालिक आते हैं और एक दूसरे से बहुत निर्दयी व लालची होता है, तो वह और जना अपने घोड़ों पर चढ़े और प्रुत के पार चले गये। कौन जाने वे कहाँ गये ? फिर किसी ने उनके बारे में नहीं सुना .. वे पक्षियों की कतार की भाँति आँखों से ओझल हो गये।"

उसने टकटकी लगा कर कुछ देर तक हल्की सफेद धुन्ध को देखा, जो दरी पर इकट्ठी हो रही थी।

"अगर उस दिन फलोवोग न होता," अंत में उसने कहा, "मैं उस भयानक रात में अवश्य ही मर गया होता। सच बात तो यह है कि मुझे कभी उस पर बहुत विश्वास न था, लेकिन उसका दिल अच्छा था। मैं हर साल उसकी आत्मा की सद्गति के लिए प्रार्थना करता हूँ, सम्भवत. वह अब जीवित नहीं है ..सम्भव है वहीं चला गया है, जहाँ हम सब एक दिन जायेंगे . ।"

उस गर्मी की संध्या में नीता लेपादतू ने मुझसे इस प्रकार बातें कीं—और जब मैंने उस जमाने के लोगों के बारे में, बूढ़ों के बारे में, जना के बारे में और सभी उन दूसरे लोगों के बारे में जो उन कीचड़ की बनी झोंपड़ियों

में रहते थे, जानने योग्य सभी बातें जानलीं, तो इतना संतुष्ट हो गया मानों मैंने उनमें से एक कहानी अभी हाल में ही पढ़ी हो, जिनमें यह कहा जाता है कि कैसे एक नायक रहता था और कैसे मरा—अच्छे नायक और बुरे भी।...और ठीक उसी प्रकार जैसे कि अच्छी कहानी पढ़ कर होता है—काफी देर तक मुझे नींद नहीं आई और जब मैं पड़ा सोच रहा था तो भूतकाल की परिछाइयाँ, घास के उस बंडल की गंध में घुल मिल गईं, जिस पर मेरा सिर टिका हुआ था।

